www.ghoonghatkibagawat.com ghoonghatkibagawat37@gmail.com ghoonghatkibagawat.com

UP/HIN/1999/1282

घूँघट की बगावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित हिन्दी (साप्ताहिक समाचार पत्र)

वर्ष : 23 | अंक : 06 | गोरखपुर | 06 अगस्त 2023 | पृष्ठ : 12 | मूल्यः 2/–

पाक ने फिर अलापा आर्टिकल 370 की बहाली का राग

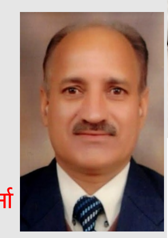


एक तरफ तो पाकिस्तान के प्रधानमंत्री भारत के साथ युद्ध छोड़ शांति की गुहार लगाते नजर आते हैं। वहीं सरकार में उनकी सहयोगी और पाकिस्तानी विदेश राज्य मंत्री आर्टिकल 370 को लेकर बयान देती नजर आती हैं। पाकिस्तान की पत्रकार मुनीजा जहांगीर को एक इंटरव्यू में उन्होंने आर्टिकल 370 को लेकर बयान दिया है। हिना रब्बानी खार ने कहा कि जब तक भारत जम्मू कश्मीर से आर्टिकल 370 को बहाल नहीं करता है, तब तक हमारी उनसे किसी भी मुद्दे पर बात नहीं हो सकती है। बता दें कि आज से चार बरस पहले भारत सरकार ने जम्मू कश्मीर से आर्टिकल 370 को निरस्त किया था। पाकिस्तानी विदेश राज्य मंत्री हिना रब्बानी खार का बयान साफ इशारा करता है कि पाकिस्तान भारत के साथ तभी राजनयिक संबंधों को फिर से स्थापित करेगा, जब तक भारत कश्मीर में आर्टिकल 370 लागू न कर ले। उन्होंने कहा कि बहुत सारे लोग शांति और अमन की बात करते हैं। लेकिन भारत की तरफ से पिछले दस सालों के एक्शन को देखें। उनकी तरफ से कभी कोई ऐसी पहल नहीं की गई है। जम्मू कश्मीर की विशेष स्थिति ऐतिहासिक रूप से अनुच्छेद 370 में निहित थी, जिसने इस क्षेत्र को शासन, कानून और भूमि स्वामित्व में महत्वपूर्ण वरीयता प्रदान की थी। इसे रद्द करने को पाकिस्तान ने कश्मीरी लोगों के अधिकारों का उल्लंघन और क्षेत्र की जनसांख्यिकीको बदलने के कोशिश के रूप में माना था। बता दें कि तीन दिन पहले पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने सभी गंभीर और लंबित मुद्दों को हल करने के लिए भारत के साथ वार्ता करने की पेशकश की। शरीफ ने यहां पाकिस्तान खनिज शिखर सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए यह टिप्पणी की।

'डस्ट टू डेवलपमेंट' के नारे के तहत आयोजित इस बैठक का उद्देश्य नकदी संकट से जूझ रहे देश में विदेशी निवेश लाना है। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट तौर पर भारत के संदर्भ में कहा कि हम हर किसी के साथ बात करने के लिए तैयार हैं, यहां तक कि अपने पड़ोसी के साथ भी बशर्ते कि पड़ोसी गंभीर मुद्दों पर बात करने के लिए गंभीर हो, क्योंकि युद्ध अब कोई विकल्प नहीं है।

अच्छा था वह मिट्टी का घर

घर बनाने पर जोर है सब बड़े बड़े घर बना रहे
बेटी की हो गई शादी बेटा बहू विदेश जा रहे
माता पिता को छोड़ आये बृद्धाश्रम में
खुद घर में बैठ कर आनंद मना रहे
कुछ समय तक बड़ा घर लगता बहुत अच्छा
फिर झाड़ू पोंछा भी लगाना मुश्किल हो जाता
कबूतरों की बीट पड़ी होती है चारों तरफ
तब गुज़रा वक्त फिर याद है आता
छोटा सा मिट्टी का वह घर ही अच्छा था जहां
मां बाप के साथ रहता था छोटा सा परिवार
गूंजता रहता उसमें उनकी हंसी ठिठोली का शोर
बहती थी हर तरफ आपसी प्यार की बयार
फफक कर रोते हैं उस बड़े घर की चारदीवारी में
कोई सुनने वाला नहीं उनकी चीखो पुकार
बच्चों को पाल पोस कर क्या इसी दिन के लिए बड़ा किया
पैसों की खातिर देश छोड़ा भूल गए मां बाप का उपकार
मन करता है कोई बात करे उनसे
कौन अब करेगा उनकी देखभाल
अपने अपने करके ज़िन्दगी लुटा दी
समझ नहीं पाए यह था मोह माया जाल
कितने लाड़ प्यार से पाला था मां बाप ने उन्हें
अपने जीवन भर की पूंजी उन पर थी लुटाई
जो भूल गए अपने माता पिता को ही
किस काम के ऐसे संस्कार और ऐसी पढ़ाई



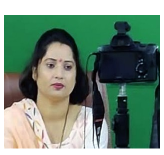
रवींद्र कुमार शर्मा



बृजलोक ट्रस्ट का सेवा संकल्प हुआ पूरा

आगरा । बृजलोक ट्रस्ट ने जन सेवार्थ एक संकल्प लिया था, जिसको मूर्ति रूप देने का कार्य प्रारंभ हो चुका है । अति पिछड़े ग्रामीण क्षेत्र में पीने के पानी की भारी किल्लत थी । गर्मियों के दिनों में राहगीर व आर्थिक दृष्टि से कमजोर ग्रामीण पीने योग्य पानी के लिए तरसते थे । ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने जब इस समस्या को नजदीक से देखा तो संकल्प किया कि वे इस समस्या के समाधान का कुछ न कुछ हल जरूर निकालेंगे । ग्राम प्रधान से लेकर ब्लॉक प्रमुख, जिला पंचायत अध्यक्ष, विधायक, पूर्व विधायक, सांसद आदि को पत्र लिखे, परंतु उनकी धूर्तता की कोई सीमा नहीं । उनकी तरफ से कोई प्रतिक्रिया ट्रस्ट को नहीं मिली । तब ट्रस्ट के पदा. धिकारियों ने स्वयं ही कार्य प्रारंभ करने की योजना बनाई । लेकिन ट्रस्ट के पास इतनी पूंजी नहीं थी कि कम समय में पीने योग्य पानी की टंकी का निर्माण कराया जा सकता । तब ट्रस्ट ने अपने सहयोगियों से सहायता की अपील की । सहयोग मिला, परंतु बजट के हिसाब से बहुत कम था, करीब दस प्रतिशत ही । इसलिए ट्रस्ट ने इस सेवा कार्य को पेंडिंग में डाल दिया । अब करीब एक वर्ष बाद ट्रस्ट ने अपने संकल्प को पूरा करने का कार्य प्रारंभ कर दिया है । टंकी में पानी आपूर्ति के लिए बोरिंग पूर्ण हो चुकी है । पानी की टंकी का निर्माण कार्य भी जल्द पूरा करा दिया जाएगा । उक्त सेवा कार्य में इं. प्रमोद कुमार एडवोकेट का सहयोग सराहनीय रहा है।

– मुकेश कुमार ऋषि वर्मा



फौजी की राखी

आज रमा पहली बार अकेले पंजाब से अपने भाई को राखी बांधने जा रही है ।शादी के बाद ऐसा पहली बार हुआ है जब रमा अकेली सफर ,कर रही है हर बार राखी पर अपने पति अमित के साथ अपने मायके जाती थी। परंतु इस बार अमित को किसी जरूरी कार्य के लिए बाहर जाना पड़ा तो रमा को अकेले ही सफर, करना पड़ा। ट्रेन अपने तय समय 9:00 अमृतसर स्टेशन पर पहुंच गई। अमित ने रमा को बिठा दिया क्योंकि उसे भी उसी दिन निकलना था और जाते–जाते बोल दिया घर पहुंचते ही फोन कर देना रमा डरी सहमी खिड़की के बगल वाली सीट पर बैठी बस अमित को ही देखे जा रही थी और मन में ढेरों, ??सवाल थे। उसके साथ में एक नन्ही सी 2 साल की अपनी बेटी स्नेहा भी थी। अमित के पास इतना वक्त नहीं था कि ट्रेन चलने का इंतजार करें ।अमित बिठाते ही तुरंत निकल गया कुछ समय के पश्चात ट्रेन ने अपनी रफ्तार पकड़ी और चलते–चलते जब काफी देर हो गई तो रमा तो अमित के ख्यालों में ही खोई हुई थी। एकदम से उसका ध्यान गया कि जिस बोगी में उसकी टिकट है उसमें सिर्फ एक बूढ़ी अम्मा और रमा ही बैठी है और बाकी सारी बोगी में फौजी लोग बैठे हुए थे और सभी फौजी लोग बड़े खुश थे। एक दूसरे के साथ हंसी मजाक कर रहे थे । रमा को डर लगने लगा उसे लगा जैसे कि वह बहुत अकेली है ।अगले स्टेशन पर बूढ़ी अम्मा भी उतर गई अब तो रमा की जैसे जान ही निकल गई। हड़बड़ाहट में जोर जोर की सांसे ले रही थी बार–बार कभी खिड़की की तरफ कभी अपनी बेटी की तरफ देख रही थी और यह भी देख रही थी कि उसे कौन–कौन देख रहा है । सामने वाले भी बीच–बीच में उसकी तरफ देख रहे थे ।फिर उन सभी के बीच में से एक फौजी उठकर रमा की तरफ आया रमा का तो जैसे दिल ही बैठ गया जैसे ही वह फौजी रमा के पास आया उसने रमा के सिर पर हाथ रखा और बोला बहन तुम घबराओ मत ।मैं देश का जवान हूं मेरा फर्ज सिर्फ इतना नहीं है कि मैं देश की सरहद की रखवाली करूं ।हम जवान 24 घंटे ड्यूटी पर तैनात रहते हैं आप चिंता ना करें आप यहां पर अपने भाइयों के साथ बिल्कुल सुरक्षित हैं। आराम से बैठे और अगर आपको बेचैनी महसूस हो रही है तो आप मेरे पास फोन है अपने घर वालों से बात भी कर सकती हो ।रमा ने हल्के से मुस्कुराते, हुए कहा नहीं भैया कोई बात नहीं बस दो–तीन घंटे की बात है मेरा स्टेशन आ ही जाएगा ।रमा को बस थोड़ा सा अच्छा लगा और फौजी भाई ने दूसरे फौजी भाइयों को पता नहीं जाकर क्या बोला कि सभी चुप होकर अपनी– अपनी सीट पर बैठ गए और जैसे ही स्टेशन आया तो उन्होंने रमा को नीचे उतारने में उसकी मदद की और अपने फोन से फोन भी करवाया कि आप अपने भाई से बात करें और बता दे की ट्रेन पहुंचने वाली है रमा उनका धन्यवाद करती और उनकी तरफ भी देखती ही जा रही थी और मन ही मन बहुत मुस्कुरा रही थी और जाते–जाते अपने सभी फौजी भाइयों को उसने बैग में से राखी निकालकर उनके हाथ में थमाते हुए बोली लो मेरी तो आज ही राखी पहले दिन ही बन गई ।सभी फौजी भाई बहुत ही भावुक हो गए और उन्होंने बताया बहन हम तो बहुत कम ही रक्षाबंधन पर छुट्टी जा पाते हैं। अभी हम ड्यूटी के सिलसिले में ही कहीं जा रहे हैं तू हमें हाथ में क्यों थमा रही है ।हमारी कलाई पर ही राखी बांध देगी तो हमें बहुत अच्छा लगेगा। रमा ने रोते–रोते सभी भाइयों की कलाई पर राखी बांधी। सभी फौजी भाई बहुत खुश थे क्योंकि सभी को राखी जो मिल गई थी और उसके साथ एक प्यारी बहन भी।

ऐसे हैं मेरे देश के जवान
जय हिंद जय भारत जय जवानो

सीमा रंगा इंद्रा

मध्यम वर्ग का संघर्ष कभी खत्म क्यों नहीं होता?

मध्यम वर्ग के लोगों की चिंताओं का कोई अंत नहीं होता। क्योंकि ये बच्चों को लायक बनाने में अपना पूरा जीवन निकाल देते हैं। फिर उस अनुरूप बच्चों का विवाह या नौकरी न हो तो भी चिंतित रहते हैं। अपनी इज्जत बनाए रखने के लिए यह अपना दुख दर्द किसी से नहीं कहते हैं। दूसरों से बातचीत करने पर कभी–कभी समाधान मिल जाया करता है। पर क्योंकि यह लोग कहते नहीं इसलिए इन्हें समाधान नहीं मिल पाता और यह चिंताओं से घिरे रहते हैं।

भारतीय मध्यम वर्ग का संघर्ष कभी खत्म क्यों नहीं होता? भारतीय मध्यम वर्ग वह वर्ग है जिसे समाज में अपनी मान मर्यादा को भी बनाए रखना होता है। बच्चों की शिक्षा पर भी पर्याप्त ध्यान देना होता है तथा समाज में क्या चल रहा है? इसका भी ध्यान रखना जरूरी होता है। बच्चों के विवाह पर भी इन्हें काफी धन खर्च करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त दूसरे के यहां भी कोई फंक्शन होने पर इन्हें स्वयं भी अच्छे कपड़ों का इंतजाम करना पड़ता है जो इनकी अर्थव्यवस्था को कमजोर करता है। इस कारण यह चिंतित रहते हैं। इन लोगों में योग्यता की कोई कमी नहीं रहती। इनके पास कमी होती है तो वह धन की कमी होती है। उच्च वर्ग के समान बौद्धिक स्तर होने के बावजूद भी धन की कमी के कारण यह मात खा जाते हैं। इस कारण यह अक्सर तनावग्रस्त भी हो जाते हैं। मध्यम वर्ग के जो लोग अच्छे कमाई करने लगते हैं , वे मध्यमवर्ग से निकलकर उच्च वर्ग में शामिल हो जाते हैं। इन लोगों की चिंताओं का कोई अंत नहीं होता। क्योंकि बच्चों को लायक बनाने में अपना पूरा जीवन निकाल देते हैं। फिर उस अनुरूप बच्चों का विवाह या नौकरी न हो तो भी चिंतित रहते हैं। अपनी इज्जत बनाए रखने के लिए यह अपना दुख–दर्द किसी से नहीं कहते हैं। दूसरों से बातचीत करने पर कभी–कभी समाधान मिल जाया करता है। पर क्योंकि यह लोग कहते नहीं इसलिए इन्हें समाधान नहीं मिल पाता और यह चिंताओं से घिरे रहते हैं। एक समस्या का समाधान करो तो दूसरी समस्या ऐसी आ जाती है। जिस पर धन खर्च करना महंगाई के जमाने में संभव नहीं हो पाता। इस कारण मध्यमवर्ग का संघर्ष खत्म ना होकर अनवरत चलता ही रहता है। परिवार के बच्चों के अच्छी नौकरी में आगे आने पर ही उनको थोड़ी राहत मिलती है। मध्यम वर्ग को श्रम और पूंजी के बीच रखा गया है। यह न तो सीधे तौर पर उत्पादन के साधनों का मालिक है जो मजदूरी श्रम शक्ति द्वारा उत्पन्न अधिशेष को पंप करता है और न ही यह अपने श्रम द्वारा उस अधिशेष का उत्पादन करता है जिसका उपयोग और विनिमय मूल्य होता है।

मध्यम वर्ग में मुख्य रूप से छोटे पूंजीपति और सफेदपा. `श श्रमिक शामिल हैं। व्यवसाय के संदर्भ में, दुकानदार, सेल्समैन, दलाल, सरकारी और गैर सरकारी कार्यालय कर्मचारी, पर्यवेक्षक और पेशेवर जैसे इंजीनियर, डॉक्टर आदि मध्यम वर्ग का गठन करते हैं। इनमें से अधिकांश व्यवसायों के लिए कम से कम कुछ हद तक औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता होती है। मध्यम वर्ग मुख्य रूप से 19वीं और 20वीं शताब्दी में पूंजीवादी विकास और राज्य के कार्यों के विस्तार का परिणाम है। मोदी के भारत में ये परिवार डिग्री और कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता के साथ, मध्यम वर्ग का दिखावा करने वाली नौकरियों में श्रमिक वर्ग की स्थितियों के चक्रव्यूह में फंस गए हैं। मध्यम वर्ग के युवाओं के लिए रोजगार प्रशिक्षण में सरकार का निवेश सुरक्षित और निष्पक्ष निर्माण से मेल नहीं खाता है। कई लोग कम लागत वाले सरकारी केंद्रों या गैर सरकारी संगठनों में कंप्यूटर और अंग्रेजी बोलने में प्रशिक्षित होने के बारे में शिकायत करते हैं, लेकिन अंत में उन्हें ऐसा काम करना पड़ता है जिसमें इन कौशलों की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं होती है। भारत में "मध्यम वर्ग" होने का क्या मतलब है? इसका उत्तर देना कठिन प्रश्न है और मध्यम वर्ग के बारे में हमारे विचार के आधार पर यह भिन्न हो सकता है। लगभग 50þ भारतीय खुद को मध्यम वर्ग का मानते हैं। यह हमारे लिए कोई नई बात नहीं है। मध्यम वर्ग क्यों मायने रखता है। इसके कई उत्तर हैं और सामान्य तौर पर, यह अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, इसके स्रोत हैं। मध्यम वर्ग भी घरेलू खपत को बढ़ावा देता है और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा और बचत में निवेश जिसे हम आम तौर पर किसी भी अच्छी अर्थव्यवस्था से जोड़ते हैं। वह मुख्य रूप से मध्यम वर्ग द्वारा संचालित होता है। इसलिए हमें इस विचार को त्यागने की जरूरत है कि भारत में मध्यम वर्ग का एक अविश्वसनीय आधार है और सिवाय इसके कि भारत अभी भी एक गरीब देश है। आजादी के बाद से भारत का मध्यम वर्ग एक महत्वपूर्ण वर्ग रहा है। 1857 के विद्रोह के दौरान , वे विद्रोह से लेकर औपनि. वेशिक अंग्रेजों के प्रति वफादार रहे। इन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन किया जब उन्हें अंग्रेजों के असली मकसद का एहसास हुआ तो उनका पहला उदय हुआ। 1905 के स्वदेशी आंदोलन में देखा गया और उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया। तब से, भारतीय मध्य ने विभिन्न रूपों में रूपांतरित होकर समाज, राजनीति, संस्कृति, आदि पर अपना प्रभाव डाला। शिक्षक, वैज्ञानिक, डॉक्टर, वकील, इंजीनियर की भारतीय समाज को मुख्य रूप से इसी वर्ग से आपूर्ति की जाती है। आईटी क्रांति के दौरान देखा गया कि मध्यम वर्ग का विस्तार स्पष्ट रूप से हो सकता है । लेकिन वे सपनों का भारत बनाने में असफल रहे ; किसी राष्ट्र की इच्छाओं के बजाय उनके कौशल मुख्य रूप से व्यक्तिगत केंद्रित थे। वे बड़ी संख्या में विदेश जाने के लिए उड़ान भरने लगे। ऊँचे लक्ष्य, प्रतिभा पलायन, जो हुआ, ने भारत को कम कुशल बना दिया। स्वतंत्रता के दौरान, यद्यपि वे अल्पसंख्यक थे, फिर भी उन्होंने एक गतिशील अल्पसंख्यक का गठन किया। विचारों और मूल्यों का ढांचा, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरित किया था। आज़ादी के बाद राजनीति में उनकी भूमिका के मिश्रित पहलू रहे। एक तरफ उनकी राजनीतिक भागीदारी अत्यधिक है। वे सीएसओ, एनजीओ और दबाव समूहों में अभिन्न सदस्य हैं। इनकी 2011 में अन्ना हजारे द्वारा भ्रष्टाचार विरोधी और दिसंबर 2012 में निर्भया मामले में भागीदारी बहुत बड़ी थी। दूसरी ओर उनका मतदान प्रतिशत घटता जा रहा है; वे राजनीति में विशेषकर शहरी मध्यम वर्ग में कम दिखाई देते हैं। उनके पास भारतीय राजनीतिक प्रकृति पर दृष्टि की कमी रही और अब भी नहीं है। ताली से थाली का संघर्ष करता मध्यम वर्ग मध्यम वर्ग लोकतंत्र का मुख्य आधार है, राष्ट्र, राजनीति और समाज में उनकी भूमिका बहुत बड़ा प्रभाव डालती है।



प्रियंका सौरभ

मुसलमान महिलाओं को मिली बहुत बड़ी राहत



मुसलमान महिलाओं को बिना मरहम (पुरुष) हज यात्रा करने को प्रधानमंत्री ने बड़ा बदलाव कहा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को हज यात्रा से लौटी महिलाओं ने पत्र लिखे। उन्होंने मन की बात कार्यक्रम में यह बताया। मोदी ने कहा ये वे महिलाएं हैं, जिन्होंने हज यात्रा बिना मरहम पूरी की। ऐसी महिलाओं की संख्या चार हजार से अधिक है। उन्होंने इसे बड़ा बदलाव करार देते हुए कहा कि पहले मुसलमान महिलाओं को बिना मरहम हज करने की इजाजत नहीं थी।

इस्लाम में मरहम वह पुरुष है, जो पति या रक्त संबंधी हो। उन्होंने कहा, बीते कुछ वर्षों से हज नीति में जो बदलाव किए गए हैं, उनकी भरपूर सरहाना की जा रही है। हज से लौटीं महिलाओं ने उन्हें बहुत कुछ लिखा, साथ ही दुआएं भी खूब दीं। निःसंदेह यह धार्मिक मुसलमान महिलाओं को मिली बहुत बड़ी राहत है। वरना ढेरों महिलाएं जो ब्याहता नहीं हैं, बेवा तलाकशुदा हैं या जिनके सिर्फ बेटियां हैं, उनके भीतर यह कसक ही रह जाती थी कि वे इस पवित्र यात्रा पर जा सकें। हज मुसलमानों का सबसे पवित्र तीर्थ है, जहां हर मुसलमान को जीवन में एक बार जाने का प्रावधान है। इसे इस्लाम में पांच फर्जों में बताया गया है, बाकी के चार फर्जों में कलमा, रोजा, नमाज व जकात आते हैं ; जिन्हें ये महिलाएं नियमित तौर पर पालन करने को आजाद थीं, बस पाबंदियों के चलते वे हज पर नहीं जा पा रही थीं। प्रधानमंत्री की पहल, और हज कमेटी की सहृदयता का यह नतीजा है कि उन सब महिलाओं की दिली इच्छा पूरी होने का मार्ग खुल सका। दरअसल, नियम उस वक्त के हैं, जब किसी भी तरह की यात्राएं करना जोखिमपूर्ण हुआ करता था। परिवहन के साधन सीमित थे। यात्राओं के दरम्यान ठहरने, रात्रि गुजारने, खाने और साधनों की दिक्कते आम थीं। आधुनिक सुविधाओं और साधनों के चलते व्यावहारिक तौर पर अब महिलाओं, बुजुर्गों और जरूरतमंदों के लिए भी तमाम चीजें काफी आसान हो चुकी हैं। पापों से मुक्ति की चाह में मक्का–मदीना जाने की हसरत रखने वाली दुनिया भर में ढेरों ऐसी महिलाएं हैं, जिनका कोई मरहम नहीं है। उन सबके लिए यह किसी सपने के पूरे होने जैसा ही है। धार्मिक कट्टरताओं की आड़ में लैंगिक विषमताएं दुनिया भर में आज भी चालू हैं। यह उन्हें मिटाने और नए आयाम खोलने वाला स्वागतयोग्य कदम है, जिसकी मोदी ने सार्वजनिक तौर पर खुलकर सराहना की।

सेमीकंडक्टर बनाएंगे, अच्छे दिन आएंगे!

चीन का धंधा हो जाएगा चौपट, कैसे औद्योगिक क्रांति 4.0 की गवाह बन रही दुनिया?

गांधीनगर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सेमीकॉन इंडिया सम्मेलन को संबोधित किया। भारत के इस मिशन से भारत के सेमीकंडक्टर मिशन में क्रांति आएगी। कई भारतीय और विदेशी कंपनियों के साथ–साथ स्टार्ट–अप भी भारत की इस क्रांति का हिस्सा बनने जा रहे हैं। सेमीकंडक्टर मिशन को लॉन्च करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि 21वीं सदी के भारत में हर किसी के लिए अवसरों की भरमार है और भारत कभी किसी को निराश नहीं करता। इस मिशन से भारत के सेमीकंडक्टर सेक्टर में इंवेस्टरमेंट को बढ़ाया जाएगा। हाल ही में जब ताइवान की कंपनी फॉक्सकान ने वेदांता के साथ डील तोड़ी तो एक लगा कि भारत के चिप मिशन पर पानी फिर गया। लेकिन सेमीकॉन इंडिया सम्मेलन के बाद अब इस बात की प्रबल संभावना है कि भारत का चिप मिशन तेजी से रफ्तार पकड़ने वाला है। ऐसे में आइए जानते हैं कि औद्योगिक क्रांति 4.0 की कहानी, सेमीकॉन इंडिया से किन कंपनियों को कितना निवेश मिल सकता है। इससे चीन का धंधा कैसे चौपट हो सकता है। सेमीकंडक्टर चिप को इलेक्ट्रॉनिक प्रॉडक्ट्स का दिल माना जाता है। स्मार्टफोन्स से लेकर कार, डेटा सेंटर्स, कम्प्यूटर्स, लैपटॉप, टैबलेट, स्मार्ट डेवाइसेज, वीकल्स, हाउसहोल्ड अप्लायंसेज, लाइफ सेविंग फार्मास्यूटिकल डिवाइसेज, एग्रीटेक, एटीएम और कई तरह के उत्पादों में इसका व्यापक इस्तेमाल होता है। चिप आर्टिफिशल इंटेलीजेंस, क्वांटम कम्प्यूटिंग, एडवांस्ड वायरलेस ने. टवर्क्स, ब्लॉकचेन एप्लिकेशंस, 5जी, आईओटी, ड्रोन, रोबोटिक्स, गेमिंग और वियरेबल जैसी एमजिंग टेक्नोलॉजीज का अहम हिस्सा हैं। यानी सेमीकंडक्टर चिप मॉडर्न कम्प्यूटेशन के बिल्डिंग ब्लॉक्स हैं। लेकिन चिप बनाने की प्रक्रिया बहुत जटिल है और यह कारोबार कई देशों तक फैला है।

क्यों कहा जा रहा नए जमाने का ऑयल?

सेमीकंडक्टर चिप को नए जमाने का ऑयल कहा जा रहा है। यही वजह है कि इस पर कब्जे को लेकर अमेरिका और चीन में ठनी हुई है। कोरोना काल में इसकी सप्लाई बाधित होने के कारण। दुनियाभर की कंपनियों को अरबों डॉलर की चपत लगी थी।



भारत के लिए क्यों जरूरी है

देश की इकॉनमी के लिए अब जरूरी है कि सेमीकंडक्टर यहीं का आयात किया जाता है। साल 2025 तक इसका आयात 7.5 लाख करोड़ रुपये तक जा सकता है। देश में सेमीकंडक्टर का बनने लगेंगे तो आयात बिल कम होगा। फिर मार्केट में नौकरियां भी आएंगी। सेमीकंडक्टर बनाने की तकनीक भी भारत में आएंगी। फिलहाल सेमीकंडक्टर के लिए भारत पूरी तरह से चीन और ताइवान पर ही निर्भर है। ताइवान की कंपनी फॉक्सकॉन और वेदांता समूह के बीच भारत में पहले सेमीकंडक्टर प्लांट का करार जिस तरह से टूटा है, उससे भारत को बड़ा झटका लगा है। इंटरनैशनल मार्केट में इससे अच्छा संदेश नहीं गया है। अब सरकार की पूरी कोशिश है कि जल्द ही इस क्षेत्र में काम शुरू कर दिया जाए। सरकार इस बात को अच्छी तरह से समझती है कि इस काम में जितनी देर होगी, उतना ही नुकसान बढ़ता चला जाएगा। फिर नुकसान की भरपाई इकॉनमी के लिए काफी महंगी साबित होगी।

सेमीकंडक्टर के भविष्य को लेकर आशावादी है फॉक्सकॉन

फॉक्सकॉन ने कहा कि वह भारत में सेमीकंडक्टर मसौदे के भविष्य को लेकर आशावादी हैं। उन्होंने यह भी कहा कि ताइवान भारत का सबसे भरोसेमंद भागीदार है और रहेगा। फॉक्सकॉन के चेयरमैन यंग लियू ने यहां सेमीकॉन इंडिया 2023 सम्मेलन में कहा कि आइए साथ मिलकर यह काम करें। उन्होंने कहा, भारत में चिप के लिए एक परिवेश बनाना बहुत बड़ा काम है... जहां चाह है, वहां राह है। इस संबंध में भारत सरकार के दृढ़ संकल्प की सराहना करते हुए लियू ने देश की सेमीकंडक्टर यात्रा पर भरोसा जताया।

मोदी सरकार का आईटी कंपनी को 50 प्रतिशत वाल ऑफर

देश में चिप मिशन जल्दी से आगे बढ़े इसलिए सरकार ने 2 साल पहले बेंगलुरु में हुए सेमीकॉन इंडिया कॉन्क्लेव में करीब 76 हजार करोड़ के इंसेंटिव देने की भी घोषणा करी थी। सरकार के इन्हीं प्रयासों के चलते वेदांता और फॉक्सकान का सेमीकंडक्टर बनाने का करार हुआ था। लेकिन हाल ही में दोनों के बीच की डील टूट गई। लेकिन सरकार हर हाल में देश में सेमीकंडक्टर का हब बनाने के लिए एक के बाद एक कदम उठा रही है। अब प्रौद्योगिकी कंपनियों को भारत में सेमीकंडक्टर विनिर्माण संयंत्र स्थापित करने के लिए 50 प्रतिशत वित्तीय सहायता मिलेगी। पीएम मोदी ने कहा कि भारत में सेमीकंडक्टर उद्योग तेजी से वृद्धि करेगा। एक साल पहले, लोग पूछते थे कि उन्हें भारत के सेमीकंडक्टर क्षेत्र में निवेश क्यों करना चाहिए, और अब वे ही पूछते हैं कि भारत में निवेश क्यों नहीं करना चाहिए। पीएम मोदी ने कहा कि आज दुनिया 'औद्योगिक क्रांति 4.0' की गवाह बन रही है। दुनिया जब भी ऐसी किसी औद्योगिक क्रांति से गुजरी है, तो उसका आधार क्षेत्र विशेष के लोगों की आकांक्षाएं रही हैं। पहली औद्योगिक क्रांति और अमेरिकी सपने के बीच भी यही संबंध देखा गया था। आज मैं चौथी औद्योगिक क्रांति और भारतीय आकांक्षाओं के बीच वही संबंध देखता हूं।

अमेरिका–चीन में तनातनी की वजह क्या है ?

चीन अमेरिका की चिप कंपनियों के लिए बड़ा मार्केट है। वहां बड़ी संख्या में ऐसे प्रॉडक्ट्स बनाए, जाते हैं जिनमें सेमीकंडक्टर यानी चिप का व्यापक इस्तेमाल होता है। दुनिया में सेमीकंडक्टर की कुल बिक्री में चीन का एक तिहाई योगदान है। कई कंपनियां तो अमेरिका में चिप बना रही हैं। लेकिन असेंबलिंग और टेस्टिंग के लिए चीन भेजा जाता है।

पुरुषोत्तम दास उच्च कोटि के रचनाकार के साथ अमर स्वाधीनता सेनानी भी

पुरुषोत्तम दास टंडन का जन्म 1 अगस्त 1882 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में हुआ था इनके पिताजी का नाम शालिग्राम टंडन था वह इलाहाबाद के अकाउंटेंट जनरल ऑफिस में क्लर्क थे इनके पिता जी संत प्रवृत्ति के थे और इनका प्रभाव टंडनदास पर भी पड़ा था टंडन जी शुरू से ही लिखने पढ़ने में बहुत तेज थे उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय सिटी एंग्लो वर्नाकुलर विद्यालय में हुई। 1894 में उन्होंने इसी विद्यालय से मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की इसी वर्ष उनकी बड़ी बहन तुलसा देवी का स्वर्गवास हो गया था इसके बाद 1897 में उनका विवाह मुरादाबाद निवासी 'नरोत्तम दास खन्ना' की पुत्री चंद्रमुखी देवी के साथ हो गया वे क्रिकेट और शतरंज के बहुत ही अच्छे खिलाड़ी थे इसके साथ ही उनकी राजनीति में भी गहरी दिलचस्पी थी आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मयूर सेंट्रल कॉलेज में प्रवेश लिया किंतु अपने क्रांतिकारी कार्यकलापों के कारण उन्हें 1901में वहां से निष्कासित कर दिया गया सन 1903 में उनके पिताजी का निधन हो गया इन सब कठिनाइयों को पार करते हुए उन्होंने 1904 में बी.ए. कर लिया था।

1905 में उनके राजनीतिक जीवन का प्रारंभ हुआ उस समय उन्होंने 'बंगभंग आंदोलन' से प्रभावित होकर स्वदेशी का व्रत धारण किया विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के रूप में चीनी खाना छोड़ दिया, और गोपाल कृष्ण गोखले के अंगरक्षक के रूप में सन 1906 कोलकाता में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया था इस बीच उनका लेखन भी प्रारंभ हो चुका था और अनेक पत्र–पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित होने लगी थी यही समय था जब उनकी प्रसिद्ध रचना 'बंदर सभा महाकाव्य' हिंदी प्रदीप में प्रकाशित हुई इन सब कामों के बीच उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और1906में एल.एल.बी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद वकालत शुरू कर दी इसके बाद उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखते हुए 1907 में इतिहास में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की और इलाहाबाद 'उच्च न्यायालय' में उस समय के नामी वकील "तेज बहादुर सप्रू" के जूनियर बन गए द्य पुरुषोत्तम दास टंडन की जीवनी द्य

पुरुषोत्तम टंडन दास जी का कार्यक्षेत्र

पुरुषोत्तम टंडन अत्यंत मेधावी और बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे उनका कार्यक्षेत्र तीन भागों में बटा हुआ था– स्वतंत्रता संग्राम, साहित्य और समाज भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में टंडन जी ने एक योद्धा की भूमिका का निर्वाह कियाअपने विद्यार्थी जीवन में 1899 से ही कांग्रेस पार्टी के सदस्य थे।

सन 1914 में उन्हें नाभा रियासत के विधि सलाहकार के रूप में मनोनीत किया गया था इसके बाद सन् 1919 में वे इलाहाबाद नगर पालिका के चेयरमैन बनाए गए थे जब 1920 में असहयोग आंदोलन शुरू हुआ तब वह गांधीजी के आह्वान पर अपनी वकालत को छोड़कर इस संग्राम में कूद पड़े इसके बाद उत्तर प्रदेश में कृषक आंदोलन का जन्मदाता माना जाता है सन 1934 में उन्होंने "केंद्रीय किसान संगठन" की स्थापना की थी टंडन ने बिहार किसान आंदोलन के साथ सहानुभूति रखते हुए उनके विकास के अनेक कार्य किए उन्होंने संगठन का काम अपने हाथों में लिया था।

किसान आंदोलन के सिलसिले में उन्हें जेल की सजा भी मिली थी 29 जुलाई 1936 को विधानसभा के समस्त सदस्यों ने एक स्वर में टंडन जी को अध्यक्ष चुना 1937 में धारा सभाओं के चुनाव हुए इन चुनाव में से 11 प्रांतों में से 7 में कांग्रेस को बहुमत मिला उत्तर प्रदेश में भी कांग्रेस को भारी सफलता मिली और इसका पूरा श्रेय टंडन जी को था 18 अगस्त 1942 को "भारत छोड़ो आंदोलन" के दौरान पुरुषोत्तम दास टंडन को जेल की सजा हुई थी उन्हें बरेली जेल में रखा गया किंतु स्वास्थ्य खराब हो जाने के कारण उन्हें रिहा कर दिया गया यह उनकी अंतिम सातवीं जेल यात्रा थी इसके बाद सन् 1948 में प्रसिद्ध संत देवरा बाबा ने उन्हें राज्यश्री की उपाधि प्रदान की थी।

पुरुषोत्तम दास टंडन भारत के स्वतंत्रता सेनानी थे हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करवाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान था भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अग्रणी पंक्ति के नेता तो थे ही, समर्पित राज नायक हिंदी के अनन्य सेवक, कर्मठ, पत्रकार, तेजस्वी वक्ता और समाज सुधारक भी थे पुरुषोत्तम दास टंडन 1950 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने थे उन्हें भारत के राजनैतिक और सामाजिक जीवन में नई चेतना, नई लहर, नई क्रांति पैदा करने वाला कर्म योगी कहा गया वे जनसामान्य में 'राजश्री' के नाम से प्रसिद्ध हुए।



सन 1923 में गोरखपुर में कांग्रेस का प्रांतीय अधिवेशन हुआ टंडन जी को इसका अध्यक्ष बनाया गया 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के सिलसिले में बस्ती में गिरफ्तार हुए और कारावास का दंड मिला जब 1931 में लंदन में आयोजित गोलमेज सम्मेलन से गांधीजी के वापस लौटने से पहले जिन स्वतंत्रता सेनानियों को गिरफ्तार किया गया था।

उनमें "जवाहरलाल नेहरू' के साथ पुरुषोत्तम दास टंडन भी थे इसके बाद सन् 1956 में टंडन जी को प्रांतीय विधानसभा का सदस्य चुना गया सन् 1950 में उन्हें "अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी" का अध्यक्ष बनाया गया वह बहुत ही स्वाभिमानी व्यक्ति थे किसी बात पर विवाद हो जाने पर उन्होंने 'अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी' के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया टंडन जी को

हिंदी के विकास के लिए जीवन भर लगे रहे उन्होंने ही इलाहाबाद में "हिंदी विद्यापीठ" की स्थापना की थी टंडन उसके प्रथम आचार्य थेटंडन जी ने अनेक साहसी तथा ऐतिहासिक कार्य किए इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाले पत्र अभ्युदय' के संपादक भी रहे सन 1952 में उन्हें इलाहाबाद क्षेत्र से लोकसभा का सदस्य चुना गया था 1957 में टंडन जी राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित हुए इस प्रकार वे आजीवन भारतीय राजनीति में सक्रिय रहकर उसे दिशा प्रदान करते रहे द्य पुरुषोत्तम दास टंडन की जीवनी द्य

टंडन दास जी की हिंदी सेवा

टंडन दास जी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अग्रणी पंक्ति के नेता थे स्वतंत्रता प्राप्त करना उनका पहला साध्य था वह हिंदी को देश की आजादी के पहले आजादी प्राप्त करने का साधन मानते रहे और आजादी मिलने के बाद आजादी को बनाए रखने का चंदन दास जी ने ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज में हिंदी के लेक्चर के रूप में कार्य किया उस समय अटल बिहारी वाजपेई विक्टोरिया कॉलेज के छात्र हुआ करते थे। टंडन जी ने कहा था कि हिंदी के पक्ष को सफल करने के उद्देश्य से ही मैंने कांग्रेस जैसी संस्था में प्रवेश किया क्योंकि मेरे हृदय पर हिंदी का ही प्रभाव सबसे अधिक था और मैंने उसे ही अपने जीवन का सबसे महान व्रत बनाया टंडन जी ने हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए "हिंदी विद्यापीठ प्रयाग" की स्थापना की थी इस पीठ की स्थापना का उद्देश्य हिंदी शिक्षा का प्रसार और अंग्रेजी के वर्चस्व को समाप्त करना था सम्मेलन हिंदी की अनेक परीक्षाएं संपन्न करना था इन परीक्षाओं से दक्षिण में भी हिंदी का प्रचार प्रसार हुआ सम्मेलन के इस कार्य का प्रभाव महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में भी पड़ा।

अनेक महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम को मान्यता मिलीटंडन जी सत्य और न्याय के लिए किसी से भी लोहा ले सकते थे वह अपने सिद्धांतों पर चट्टान की तरह अडिग एवं स्थिर रहते थे हिंदी को राष्ट्रभाषा और 'वंदे मातरम" को राष्ट्रीय गीत स्वीकृत कराने के लिए टंडन जी ने अपने सहयोगियों के साथ एक और अभियान चलाया था उन्होंने करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर और समर्थन पत्र भी एकत्रित किए थे 27 अप्रैल 1961 को उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया 1 जुलाई 1962 को इस महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक का निधन हो गया पुरुषोत्तम दास उच्च कोटि के रचनाकार थे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अमर सेनानी यों में उनकी गणना की जाती है उनका नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अंकित है वह परम स्नेही उदार और करुणा की मूर्ति होते हुए भी इस्पाती व्यक्तित्व के धारक थे।



गोरखपुर एयरपोर्ट पर
रेस्टोरेंट संचालक के बैग से मिला कारतूस, मचा हड़कंप

गोरखपुर। देवरिया जिले के लार क्षेत्र के भीखम छपरा गांव निवासी वरुण राज तिवारी देवरिया में ओरियंस रेस्टोरेंट चलाता है। बृहस्पतिवार शाम 7.30 बजे स्पाइस जेट की फ्लाइट से उसे दिल्ली जाना था। शाम 6.30 बजे वरुण एयरपोर्ट पहुंचा और चेक इन करके अंदर गया। तभी स्कैनिंग के दौरान उसके बैग में एक कारतूस मिला।

देवरिया जिले के लार क्षेत्र के भीखम छपरा गांव निवासी वरुण राज तिवारी देवरिया में ओरियंस रेस्टोरेंट चलाता है। बृहस्पतिवार शाम 7.30 बजे स्पाइस जेट की फ्लाइट से उसे दिल्ली जाना था। शाम 6.30 बजे वरुण एयरपोर्ट पहुंचा और चेक इन करके अंदर गया। तभी स्कैनिंग के दौरान उसके बैग में एक कारतूस मिला। इसके बाद सुर क्षाकर्मियों ने वरुण से पूछताछ की।

उसने बताया कि कारतूस संभवतः उनके मित्र का है। पता नहीं बैग में कैसे आ गया। एयरपोर्ट के अधिकारियों ने मामले की जानकारी एसएसपी व एसपी सिटी को दी, जिसके बाद एम्स थाना प्रभारी मौके पर पहुंचे और रेस्टोरेंट संचालक को हिरासत में ले लिया। मामले की जानकारी देवरिया पुलिस को भी दी गई है। एसएसपी डॉ गौरव ग्रोवर ने बताया कि वरुण से पूछताछ की जा रही है।

हाय...हाय... गर्मी
महानगरवासियों को बारिश का इंतजार...



बैठक सम्पन्न

गोरखपुर । समाचार पत्र विक्रेता संघ कि एक आवश्यक बैठक गत 3 अगस्त को टाउनहाल के मैदान में लक्ष्मी बाई मूर्ति के पास जिलाध्यक्ष उमाशंकर मझवार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

सर्व सममत से निर्णय लिया गया कि हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस समारोह रेलवे स्टेशन सेन्टर मारवाड़ी भोजनालय के सामने समय 11 बजे जिलाध्यक्ष उमाशंकर मझवार की अध्यक्षता में झण्डा रोहण कार्यक्रम सम्पन्न होगा। बैठक में रामाज्ञा निषाद, विनोद तिवारी, नवनीत कुमार यादव, राकेश निषाद, सुनील कुमार गुप्ता, धर्मेन्द्र कुमार, राहुल गुप्ता, सुनील साहनी, विजय कुमार गुप्ता, सुभाष चन्द्र मझवार, राज कुमार मझवार, अनन्त लाल गुप्ता, मुक्तिनाथ अग्रहरी, दिनेश चन्द्र अग्रहरी, चन्दन मझवार, हरीलाल मझवार, ओम प्रकाश अग्रहरी, विनोद कुमार मझवार आदि लोग उपस्थित थे।

कंटेंट क्रिएटर के साथ दुष्कर्म, मुदमा दर्ज

गोरखपुर। रेलवे स्टेशन से आटो पकड़कर गीडा जा रही इंटरनेट मीडिया कंटेंट क्रिएटर को बाइक व स्कूटी सवार पांच युवकों ने गीडा क्षेत्र में अगवा कर लिया। आटो चालक को भगाने के बाद युवती को अमरूद के बाग में उठा ले गए। आरोप है कि बंधक बनाकर युवको ने दुष्कर्म किया।

घटना की सूचना पर सक्रिय हुई पुलिस ने आरोपितों को एकला बांध के पास घेर लिया। एक आरोपित पुलिस पर फायरिंग कर भागने लगा। जवाबी कार्रवाई में उसके दाएं पैर में गोली लग गई। पकड़ने के प्रयास में एक सिपाही भी चोटिल हो गया। सभी आरोपितों को पुलिस ने गिरफ्तार कर,घायल को बीआरडी मेडिकल कालेज में भर्ती कराया है। संतकबीरनगर जिले की रहने वाली युवती अपने प्रेमी के साथ रील बनाती है। गीडा में किराए पर कमरा लेकर वह प्रेमी के साथ रहती है।

गुरुवार की सुबह चार बजे ट्रेन से स्टेशन पर उतरने के बाद गीडा जाने के लिए युवती ने आटो बुक किया। सुबह चार बजे गीडा क्षेत्र में पीछे से आए बाइक व स्कूटी सवार पांच युवकों ने ओवरटेक करके आटो रोक लिया। आरोप है कि चालक को धमकी देकर भगाने के बाद युवती को जबरन अपने साथ लेकर अमरुद के बाग में चले गए। कपड़े से मुंह बांधकर उसके साथ दुष्कर्म किया। एक घंटे बाद उसे छोड़कर आरोपित फरार हो गए। कमरे पर पहुंचने के बाद युवती ने घटना की जानकारी पुलिस को दी। हरकत में आई पुलिस ने पांचों आरोपितों को एकला बांध के पास घेर लिया।

पकड़ने का प्रयास करने पर एक आरोपित ने तमंचा से फायरिंग कर दी। जवाबी कार्रवाई में रामगढ़ताल के कठउर गांव के प्रदुम्मन के दाएं पैर में गोली लग गई। पुलिस ने उसे तमंचा के साथ गिरफ्तार कर लिया। एसपी नार्थ मनोज अवस्थी ने बताया कि पीड़ित की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर सभी आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया गया है। मुठभेड़ में एक सिपाही भी घायल हुआ है।

नेता द्वय ने की अवैध कब्जे को रोकने की मांग

गोरखपुर। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी राज्य कौंसिल के सदस्य राममूर्ति एवं जिला समाचार विक्रेता संघ के अध्यक्ष उमाशंकर मझवार व राजद के जिलाध्यक्ष महेन्द्र सिंह राणा ने एक संयुक्त बयान में कहा है कि महानगर में अब कब्रिस्तान की भी जमीन नहीं बच रही है। खूनीपुर में स्थित आराजी नं. 205 रक्या 19 डिस्मील पांच कड़ी को एजाज अहमद उर्फ छब्बन पुत्र नुरूल हसन व अकबर अली मेकरानी पुत्र स्व. मु. अली मु. खूनीपुर पोस्ट गीता प्रेस थाना कोतवाली जनपद गोरखपुर निवासी अपना बताकर महानगर के एक चर्चित भू–माफिया जिसकी कई सम्पत्तियों पर शासन द्वारा पिछले दिनों बुल्डोजर चलवाकर धारासाई करवाया गया था इतना ही नहीं जिस भूमि माफिया के हाथ में उपरोक्त लोग कब्रिस्तान को बेंच रहे हैं वह सरकार द्वारा घोषित इनामियां हिस्ट्रीशीटर है उसके उपर दर्जनों संगीन मुकदमें भी चल रहें है।

उपरोक्त नेताओं ने बताया कि 14 दिसम्बर 2021 को जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी एवं सहायक सर्वे आयुक्त वक्फ गोरखपुर ने उपनिबंधक प्रथम रजिस्ट्री कार्यालय गोरखापुर को पत्रांक संख्या 475/जीअसक–वक्फ– 147–2021–22 द्वारा पत्र भेजकर उपरोक्त जमीन को कब्रिस्तान बताते हुए उसकी रजिस्ट्री न करने की बात की गयी है। फिर भी महानगर के कुछ भू–माफिया एवं उनके सहयोगी पुलिस एवं प्रशासन को मिलाकर कब्रिस्तान की जमीन बेचने की फिराक में पड़े हुए है। समुदाय विशेष के लोगों ने शासन से लेकर स्थानीय अधिकारियों व न्यायालय तक में अपनी बात रखी और सभी स्तर पर उक्त जमीन को कब्रिस्तान बताया गया। फिर भी जिला पुलिस के लोग एवं कुछ हिस्ट्रीशीटर उस कब्रिस्तान को खरीदने के प्रयास में लगे हुए है और इसकी पैरवी करने वालों को लगातार जान व माल की धमकी दी जा रही है। नेताओं ने शासन व प्रशासन से मांग किया है कि जब हर जगह कब्रिस्तान व मंदिर की जमीन पर अवैध कब्जे को रोका जा रहा है तो मुख्यमंत्री के गृह जनपद में स्थित खूनीपुर के कब्रिस्तान पर आंख गड़ाये भू माफियाओं के कृत्यों पर रोक लगायी जाय।

सड़क की पटरियों पर डस्ट मैनेजमेंट, ग्रीन बेल्ट विकसित करने और लैंडस्केपिंग की योजना बनाई गई है। कुल 15 स्थानों को इसमें चयनित किया गया है। नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम के तहत 11 का टेंडर हो चुका है। जल्द ही काम शुरू कराया जाएगा।

–संजय सिंह चौहान, मुख्य अभियंता, नगर निगम।

इन सड़कों पर होगा काम

इंदिरा बाल विहार से हरिओम नगर तिराहा, डीएम आवास, आरटीओ तिराहा और विश्वविद्यालय चौराहे तक। गणेश चौराहा से विश्वविद्यालय चौराहे तक।

रेलवे बस स्टेशन से पुलिसलाइंस तिराहे तक।

बैंक रोड पर पीएनबी गली मोड़ से अग्रसेन तिराहा तक

विश्वविद्यालय से मोहद्दीपुर तक डिवाइडर पर ग्रीन बेल्ट विकसित किया जाएगा

मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सामने

नंदानगर से छोटी लाइन से पुलिस चौकी की पटरी तक और पुलिस चौकी से सिविल एयरपोर्ट तक

यह कराए जाएंगे काम

सड़क की पटरियों पर रंगीन टाइल्स लगाई जाएंगी। इसको ऐसे सेट किया जाएगा कि धूल न उड़े।

सड़कों के किनारे पौधे, डिवाइडर पर फौव्वारे इत्यादि लगाए जाएंगे।

सड़कों पर पाथ–वे, छाए की व्यवस्था के साथ ही थोड़ी–थोड़ी दूरी पर वेंडर के लिए जगह होगी।

पटरी साफ सुथरी होगी। जगह जगह छांव के इंतजाम होंगे।

गोरखपुर का कायाकल्प





- **अंग्रेजों के जमाने जैसा हरा–भरा और खुशनुमा बनेगा गोलघर, नहीं उड़ेगी धूल, महकेंगे फूल**

गोरखपुर। गोलघर आने जाने वाले जिन रास्तों की सुंदरता बढ़ाने की तैयारी नगर निगम कर रहा है। उनकी हालत फिलहाल ठीक नहीं है। यहां चलने पर धूल का सामना होता है। कुछ लोग जगहों पर पैदल चलने भर की जगह नहीं बचती है। अंग्रेजों ने जैसा गोलघर सजाकर हमें सौंपा था, अब उसी तर्ज पर इसे हरा–भरा और साफ–सुथरा करके सजाने की तैयारी जोरों पर है। जल्द गोलघर की सड़क दमकेगी और हवा महकेगी। गोलघर और इससे जुड़ी सड़कों पर धूल का नामोनिशान नहीं रहेगा। दोनों तरफ हरियाली ही नजर आएगी। बीच–बीच में फव्वारे भी होंगे। सड़क के किनारे ठेले–फड़ भी नजर नहीं आएंगे। दिन में भी सड़क चौड़ी नजर आएगी। सड़कों के दोनों तरफ टाइल्स लगीं पटरियां बनाई जाएंगी। जी हां, इसके लिए नगर निगम ने मास्टर प्लान तैयार कर लिया है। जल्द ही काम शुरू होगा।

नगर निगम की योजना के मुताबिक राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम के तहत गोलघर की कुल 15 सड़कों को इनमें शामिल किया गया है। इन सभी के किनारे डस्ट मैनेजमेंट (धूल नियंत्रण) पर काम किए जाएंगे। इसको साफ–सुथरा करने से लेकर जल. निकासी सहित अन्य व्यवस्था की जा रही है। गोलघर से जुड़ी सड़कों पर धूल और अन्य तरह के कचरों का व्यवस्थापन किया जाएगा। इस योजना में नगर निगम ने डस्ट मैनेजमेंट का नाम दिया है।

अभी तो उड़ती है धूल, पटरियों पर कब्जा, नहीं मिल पाता सुकून

गोलघर आने जाने वाले जिन रास्तों की सुंदरता बढ़ाने की तैयारी नगर निगम कर रहा है। उनकी हालत फिल. हाल ठीक नहीं है। यहां चलने पर धूल का सामना होता है। कुछ लोग जगहों पर पैदल चलने भर की जगह नहीं बचती है। अधिकांश जगहों पर ठेले पर दुकानें लगाकर लोग खड़े रहते हैं।

सपा नेता काजल का बिना हेलमेट पहने बुलेट चलाने का वीडियो वायरल, चालान



गोरखपुर। एसपी ट्रैफिक श्याम देव बिंद ने बताया कि वायरल वीडियो में काजल निषाद बिना हेलमेट पहने बुलेट चला रहीं हैं, जो यातायात नियम के खिलाफ है। इस पर एक हजार रुपये का चालान काटा गया है।

गोरखपुर में अभिनेत्री एवं सपा नेता काजल निषाद का बिना हेलमेट पहने बुलेट चलाने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। इसको यातायात विभाग ने गंभीरता से लिया है। यातायात नियम के उल्लंघन पर उनका 1000 रुपये का चालान काटा गया है। जानकारी के मुताबिक, गोरखपुर महानगर से समाजवादी पाटी की मेयर पद की प्रत्याशी रहीं काजल निषाद का बिना हेलमेट पहने सोशल मीडिया पर बुलेट चलाते का वीडियो वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो रामगढ़ताल क्षेत्र के एक अपार्टम. ट के पास का बताया जा रहा है। एसपी ट्रैफिक श्याम देव बिंद ने बताया कि वायरल वीडियो में काजल निषाद बिना हेलमेट पहने बुलेट चला रहीं हैं, जो यातायात नियम के खिलाफ है। इसपर 1000 रुपये का चालान काटा गया है।



तीखी धूप व उमस भरी गर्मी ने किया बेहाल

गोरखपुर। मौसम विभाग ने 30 जुलाई से 3 अगस्त तक बारिश का अनुमान जताया था। 30 व 31 तारीख को कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश हुई। 1 अगस्त को दिन भर बादल छाए रहने से राहत मिली। दोपहर में कुछ जगहों पर बारिश भी हुई। दो दिन रूक–रूककर हुई बारिश के बाद बुधवार को तेज धूप और उमस भरी गर्मी ने लोगों को बेहाल कर दिया। सुबह से शाम तक लोग पसीने से तर–बतर होते रहे। अभी अगले दो दिन तक मौसम ऐसे ही बने रहने की संभावना है। वहीं गुरुवार सुबह से ही धूप छांव का खेल जारी है। मौसम विभाग ने 30 जुलाई से 3 अगस्त तक बारिश का अनुमान जताया था। 30 व 31 तारीख को कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश हुई। एक अगस्त को दिन भर बादल छाए रहने से राहत मिली। दोपहर में कुछ जगहों पर बारिश भी हुई।

उम्मीद जताई जा रही थी कि बुधवार को भी मौसम ऐसे ही खुशगवार बना रहेगा, लेकिन सुबह ही चटक धूप खिली और पूरे दिन उमस भरी गर्मी बनी रही।

देर शाम तक लोग परेशान रहे। बृहस्पतिवार को भी तेज धूप व उमस भरी गर्मी का असर रहने का अनुमान है। मौसम विभाग की ओर से कुछ क्षेत्रों में हल्की से मध्यम बारिश की भी संभावना जताई गई है।

बुद्ध–वैदिक काल के संग्रह से गौरवान्वित होगी गोरक्षनगरी

• इसी महीने से शुरू होगा काम

गोरखपुर। क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी रविंद्र कुमार मिश्रा ने कहा कि शासन को गौरव संग्रहालय का प्रस्ताव भेजा गया था, जिसे स्वीकृत करने के बाद बजट की पहली किस्त जारी कर दी गई। टेंडर की प्रक्रिया चल रही है। इस महीने के अंत तक इसका निर्माण कार्य शुरू करा दिया जाएगा। पूर्वांचल के लोगों को बुद्ध–वैदिक काल से जुड़ी स्थानीय कला, संस्कृति, वास्तु कला और शिल्प के माध्यम से गौरव का एहसास कराने के लिए सिविल लाइंस क्षेत्र में गौरव संग्रहालय का निर्माण होगा। शासन ने 20.16 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले इस संग्रहालय के निर्माण के लिए बजट की पहली किस्त 5.80 करोड़ रुपये जारी कर दी है। अब टेंडर की प्रक्रिया चल रही है। इस महीने के अंतिम सप्ताह तक निर्माण शुरू कराने की तैयारी है।



पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए 1.6 एकड़ क्षेत्र में तीन तल के इस संग्रहालय में भितिचित्र, मूर्तिकला, चित्रकला आदि का उपयोग होगा। संग्रहालय में गोरखपुर और आसपास की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती कुल सात गैलरियां होगी। प्रदर्शन प्रत्यक्ष और डिजिटल दोनों माध्यम से किए जाने की योजना है।

सभी गैलरियां दूसरे और तीसरे तल पर होंगी। प्रथम तल पर एक लघु प्रेक्षागृह होगा, जिसमें करीब 500 दर्शक बैठकर किसी कार्यक्रम को देख सकेंगे। पर्यटकों की सुविधा के लिए भूमितल पर लाइब्रेरी, कैफेटेरिया, डॉरमेंट्री, कांफ्रेंस हॉल, पार्किंग आदि की भी व्यवस्था होगी।

इन्हें समर्पित होगी गैलरी– गैलरी–1 : वैदिककाल को समर्पित, गैलरी–2 : बुद्धकाल को समर्पित, गैलरी–3: जैनकाल को समर्पित गैलरी–4 : ना. थपीठ को समर्पित, गैलरी–5 : संतकबीर को समर्पित गैलरी– 6 व 7 : स्वतंत्रता संग्राम में पूर्वांचल।

क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी रविंद्र कुमार मिश्रा ने कहा कि शासन को गौरव संग्रहालय का प्रस्ताव भेजा गया था, जिसे स्वीकृत करने के बाद बजट की पहली किस्त जारी कर दी गई। टेंडर की प्रक्रिया चल रही है। इस महीने के अंत तक इसका निर्माण कार्य शुरू करा दिया जाएगा।



राणा उदय सिंह को विलासी और कायर शासक के रूप में निरूपति किया गया

उदयसिंह का जन्म राजस्थान के चितौडगढ़ में हुआ था और उनके पिता राणा सांगा के मृत्यु के बाद रतनसिंह द्वितीय को नया शासक घोषित किया गया था। रतनसिंह ने 1531 तक शासक किया था। राणा विक्रमादित्य सिंह के शासनकाल में बहादुर शाह ने चितौगढ़ के ऊपर हमला कर दिया और इस कारण से उदयसिंह को बुदी भेज दिया। गया तक वे सुरक्षित रहे। बनवीर ने राणा विक्रमादित्य की गला घोट कर हत्या करदी थी और उसके बाद बनवीर ने उदयसिंह को मार ने का प्रयास किया लेकिन उदयसिंह की धाय माँ पत्रा धाय राजपरिवार की सदस्य तो नही थी। वे हरिचन्द्र पुत्री थी उन्होंने उदयसिंह को माँ के स्थान पर दूध पिला ने के कारण पत्रा धाय माँ कहलाई थी। उन्होंने उदयसिंह को बचाने के लिए अपने पुत्र चन्दन का बलिदान दे दिया था। और इसी कारण से उदयसिंह जीवित रह पाए पात्र धाय ने यह जानकारी किसी को भी नही दी थी की बनवीर ने जिसको मारा है, वह राजकुमार उदयसिंह नही बल्कि उनका पुत्र है। इसके बाद पत्रा धाय बूंदी में रहने लगी लेकिन उदयसिंह को अपने आने जाने और मिलने की अनुमति नही दी था। उदयसिंह को खुफ़िया तरीके से कुम्भलगढ़ दो वर्ष के लिए रखा गया था। इसके बाद उदयसिंह को कुम्भलगढ़ में 1540 की साल में राजतिलक किया गया और मेवाड़ का राणा बनया गया था।

महाराणा उदयसिंह के द्वारा बनवीर की हत्या

उदयसिंह के द्वारा साल 1540 में जोधपुर के शासक मालदेव के सहयोग से मावली (उदयपुर) में बनवीर की हत्या कर देते है। बनवीर की हत्या के बाद मेवाड़ का चित्तौड़गढ़ पर उदय सिंह ने कब्जा कर लिया था। राणा उदयसिंह को अपना पैतृक गढ़ सन 1540 में प्राप्त हो जाता है। राणा उदयसिंह महादेव से प्रसन्न होकर मालदेव को अपना प्रिय हाथी बसंतराय भेट स्वरूप देते है। उदयसिंह के सबसे बड़े पुत्र का नाम महाराणा प्रताप था और पहली पत्नी का नाम जयवंता बाई था। जयवंता बाई राणा उदयसिंह को राजनीती के विषय में सलहा देती थी। जयवंता बाई के पुत्र का नाम प्रताप था। उन्होंने प्रताप के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उदयसिंह की दूसरी पत्नी का नाम सज्जा बाई सोलंकी था। सज्जा बाई ने शक्तिसिंह और विक्रमसिंह को जन्म दिया था और उनकी तिसरी पत्नी धिरबाई थी जिन्हों ने जगमाल सिंह, चांदकंवर और मांकवर को जन्म दिया था। यह तिनी पत्नी या उदयसिंह की मुख्य रानीया थी चौथी पत्नी विराबाई झाला थी जिन्हों ने जेठ सिंह को जन्म दिया था। कुछ किवदन्तियो के अनुसार राणा उदयसिंह की 22 पत्निया और 53 पुत्र एवं 22 पुत्रिया थी।

शेरशाह सूरी द्वारा चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर आक्रमण

शेरशाह सूरी ने वर्ष 1534 ईस्वी को चित्तौड़गढ़ पर हमला कर देता है,लेकिन महाराणा उदयसिंह द्वितीय ने शेरशाह सूरी को चित्तौड़गढ़ बिना किसी युद्ध के सौप देते है, और उसके बाद बाद शेरशाह सूरी ने सम्सख्वार- खाँ को चित्तौड़गढ़ दुर्ग का प्रशासक बना देते है। तथा चित्तौड़गढ़ पर शासन करने लग जाते है। महाराणा उदयसिंह द्वितीय मेवाड़ का प्रथम शासक था, जिन्होंने अफगानी शासन की अधीनता स्वीकार की थी। इसके अलावा महाराणा उदयसिंह, छापामार और गोरिल्ला युद्ध की कला में बहुत अच्छे थे। इस कला में महाराणा उदयसिंह मेवाड़ के पहले शासक थे। इसी युद्ध कला के कारण महाराणा उदयसिंह ने शेरशाह सूरी की मृत्यु के बाद फिर से चित्तौड़गढ़ पर शासक किया।

महाराणा उदयसिंह द्वारा जयमल राठौड़ को शरण

साल 1562 में अकबर ने मेड़ता, नागौर के शासक जयमल राठौड़ पर हमला कर दिया था। तब महाराणा उदय सिंह ने जयमल राठौड़ को अपने चितौडगढ़ में शरण दी थी। इसी कारण से सन 1567 में जलाल उद्दीन अकबर ने मांडलगढ़ भीलवाड़ा के मार्ग चित्तौड़गढ़ पर हमला कर दिया था। इस वजह से उदयसिंह गोगुंदा की पहाड़ियों में भाग जाते है। तथा अकबर ने महाराणा उदयसिंह का पीछा करने के लिए हैसन कुली खां को भेज देते हैं। महाराणा उदयसिंह द्वितीय चित्तौड़गढ़ का शासन जयमल राठौड़ और फतेह सिंह को सौंप देता है।

राणा उदयसिंह द्वितीय का अकबर से युद्ध

साल 1567 में जब चित्तौड़गढ़ में अकबर ने इस किले का दूसरी बार हमला किया तो यहां राणा उदयसिंह की सूझबूझ काम में आय थी। अकबर की पहली चढ़ाई को उदयसिंह ने निष्फल कर दिया था। पर जब दूसरी बार चढ़ाई की गयी तो लगभग छह मॉस के इस घेरे में किले के पास के कुओं तक में पिने का पानी समाप्त होने लगा। किले के पास के लोगों की और सेना की स्थिति बहुत खराब होने लगी थी। तब किले के रक्षकदल सेना के उच्च पदाधिकारियों और राज्य दरबारियों ने मिलकर राणा उदयसिंह से निवेदन किया कि राणा संग्राम सिंह के उत्तराधिकारी के रूप में आप ही हमारे भीतर हैं, इस लिए आपकी जीवन की रक्षा इस समय बहुत आवश्यक है। आप को इस किले से सुरक्षित निकालकर हम सभी दुश्मन सेना पर युद्ध करने के लिए निकल पड़ेंगे। तब महाराणा उदयसिंह द्वितीय ने सभी राजकोष को सावधानी से निकाला और उन्हें साथ लेकर पीछे से अपने कुछ विश्वास अंग रक्षको के साथ किले को छोड़कर निकल गये। फिर अगले दिन अकबर की सेना के साथ उनकी सैना का बहुत ही भयंकर युद्ध हुआ था, और वीर राजपूतों ने अपना आखरी बलिदान दिया। अनेकों वीरों की छाती पर पैर रखता हुआ अकबर चितौड के किले में घुसा तो उसे जल्दी ही पता चल गया कि वह युद्ध तो जीत गया है, परन्तु कूटनीति में हार गया है।

महाराणा उदयसिंह द्वितीय की मृत्यु के बाद

साल 28 फरवरी 1572 में राजस्थान के गोगुन्दा में हुई थी। महाराणा उदयसिंह ने अपनी मृत्यु से पहले राजकुमार जगमाल को उत्तराधिकारी घोषित किया था। महाराणा प्रताप महाराणा उदयसिंह द्वितीय की अंतिम क्रिया करने के बाद राज्य दरबारियों ने राणा जगमल को राजगद्दी से उतारकर महाराणा प्रताप को राजगद्दी पर बैठा दिया। इस प्रकार एक मौन क्रांति हुई और मेवाड़ का शासक उदयसिंह की इच्छा से नही बल्कि दरबारियों की इच्छा से महाराणा प्रताप बने। इस घटना को इसी रूप में अधिकांश इतिहासकारों ने उल्लेखित किया है। इसी घटना से एक बात स्पष्ट हो जाती है,कि प्रताप और उनके पिता उदयसिंह के बीच के संबंध इतने अच्छे नही थे। कई लेखक ने महाराणा संग्राम सिंह और महाराणा प्रताप के बीच खड़े राणा उदयसिंह की उपेक्षा करनी आरंभ कर दी। जिससे राणा उदयसिंह के साथ कई प्रकार के आरोप मढ़ दिये गये। जिससे इतिहास में उन्हें एक विलासी और कायर शासक के रूप में निरूपति किया गया है।

मणिपुर प्रकरण पर गंभीरतापूर्वक विचारण की आवश्यकता

सुप्रीम कोर्ट ने मणिपुर हिंसा मामले में पुलिस कार्रवाई और सुस्त जांच पर तीखी टिप्पणी करते हुए कहा कि वहां तंत्र पूरी तरह फेल हो गया है। कानून व्यवस्था ध्वस्त हो गई है। कोर्ट ने महिलाओं को भीड के हवाले करने वाले पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई को लेकर भी सवाल पूछा तो हिंसा मामले में दर्ज लगभग 6500 एफआईआर में मात्र सात गिरफ्तारियां होने पर भी सवाल उठाए। हालांकि सॉलिस्टर जनरल तुषार मेहता ने स्पष्ट किया कि सात गिरफ्तारियां महिलाओं की नग्न परेड के वीडियो के मामले में हुई है। बहरहाल, पुलिस की जांच में 'सुस्तीपन' पर नाखुश शीर्ष अदालत ने आदेश दिया कि मणिपुर के डीजीपी ने गत सोमवार को सुप्रीम कोर्ट में इस मामले में होने वाली सुनवाई के दौरान व्यक्तिगत रूप से पेश हों और कोर्ट के सवालों के जवाब दें। प्रधान न्यायाधीश जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी परदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्र की तीन सदस्यीय पीठ ने मंगलवार को सुनवाई के दौरान इस बात पर हैरान थी कि घटना को तीन महीने हो गए हैं, और कई मामलों में रिपोर्ट तक दर्ज नहीं हुई है। पीठ ने इन सभी 6,500–एफआईआर के मामले में कोर्ट में एक चार्ट दाखिल कर अपराध की प्रकृति और की गई कार्रवाई का पूरा ब्योरा पेश करने का आदेश दिया। कोर्ट ने कहा कि वह पूरे मामले की प्रकृति को जानने–समझने के बाद ही उचित आदेश दे पाएगा। बेशक, मणिपुर के हालात चिंताजनक हैं, और इस मुद्दे पर संसद में मंगलवार को लगातार ग्यारहवें दिन भी सरकार और विपक्ष में तीखा टकराव जारी रहा। लोक सभा में अविश्वास प्रस्ताव पर बहस के दौरान मणिपुर पर सरकार को घेरने का इंतजार कर रहे विपक्ष ने राज्य सभा में नियम–267 के तहत नोटिसों को लगातार खारिज किए जाने को तानाशाही करार दिया। मणिपुर के हालात पर राजनीति गरमाई हुई है, और अदालत भी वहां के घटनाक्रम खासकर पुलिस की सुस्ती' से खुश नहीं है। लेकिन लगता है कि अदालत तमाम विकल्पों पर गौर कर रही है। इस क्रम में उसने मणिपुर के घटनाक्रम पर गौर करने के लिए सेवानिवृत्त न्यायाधीशों की एक कमेटी गठित करने का संकेत दिया है और सीबीआई जांच को लेकर संशय जैसी स्थिति पर भी ध्यान दिया है। सर्वोच्च अदालत का कहना कि इतने ज्यादा मामलों की जांच सीबीआई को नहीं दी जा सकती। बहरहाल, अगली सुनवाई में मणिपुर के डीजीपी को तलब करने का मकसद ही यह है कि हालात को जान–समझ कर किसी



कर्नाटक के राज्यपाल और विश्वविद्यालय के कुलाधिपति थावरचंद गहलोत तथा कर्नाटक के उच्च शिक्षा मंत्री एमसी सुधाकर ने गत दिनों बेलगावी के विश्वेश्वरैया प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में 23 वें दीक्षांत समारोह के दौरान विद्यार्थियों को उपाधियां एवं पदक प्रदान किया।

मैथिलीशरण गुप्त का हृदय स्त्रियों के प्रति संवेदना सहानुभूति और करुणा से अप्लावित

हिंदी साहित्य में खड़ी बोली को साहित्यिक रूप देने में मैथिलीशरण गुप्तजी का बहुत बड़ा महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील योगदान है। इनकी भाषा में माधुर्य भाव की तीव्रता और प्रयुक्त शब्दों का ऐसा सामंजस्य है कि वे गंभीरतम तथा गूढ़तम विषयों को भी सरल सीधे शब्दों में पिरोने में सिद्धहस्त रचनाकार थे। मैथिलीशरण गुप्त एक महान साहित्यकार कवि और कविता के साथ–साथ मुक्तक, नीति, गीत, नाटक और नाटक क्षेत्र के एक स्थापित नाम हैं।



मैथिलीशरण गुप्त जी का जन्म 3 अगस्त 1886 को झांसी जिले के चिरगांव नामक स्थान पर हुआ था. उनके पिता सेठ रामचरण गुप्ता और माता काशीबाई जी थीं। इनके पिता श्री को हिंदी साहित्य में विशेष प्रेम था और मैथिलीशरण गुप्त पर उनके पिता का गहन प्रभाव पड़ा जिसके फलस्वरूप उन्होंने अनेक ग्रंथों और काव्य कृतियों की रचना इस देश को समर्पित की। इनकी प्रारंभिक शिक्षा चिरगांव तथा झांसी में हुई। अपने घर पर ही अंग्रेजी, बांग्ला, संस्कृत और हिंदी का अध्ययन करने वाले गुप्त जी की प्रारंभिक रचनाएं कोलकाता से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र **'वैश्योपकरक'** मैं छपती रही, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के संपर्क में आने पर उनके परामर्श से उनके साहित्यिक पक्ष में काफी निखार है।

मोहनदास करमचंद गांधी (महात्मा गांधी) ने हिंद की विशिष्ट रचना पर इन्हें राष्ट्र कवि का दर्जा प्रदान किया। गांधी जी के संपर्क में आने के बाद स्वतंत्रता आंदोलन में भी कूद पड़े थे स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गुप्तजी को कई बार जेल भी हुई थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सन 1952 में गुप्त जी को राज्यसभा का सदस्य भी मनोनीत किया गया था 1954 में पद्म भूषण सम्मान से भी सम्मानित किया गया 12 दिसंबर 1964 को देश ने इस महान साहित्यकार, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी खो दिया था।

मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत रचनाओं के कारण हिंदी साहित्य में इनका विशेष स्थान है। हिंदी में राज सभाओं की पुनीत गंगा बहाने का श्रेय भी गुप्ता जी को ही है. वे सच्चे अर्थों में लोगों में राष्ट्रीय भावनाओं को भरकर उनमें जनजागृति लाने वाले राष्ट्रकवि हैं। उनकी तमाम रचनाएं काव्य हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। गुप्त जी की कविताओं का प्रमुख स्वर राष्ट्रप्रेम ही रहा है भारत भारती में प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रेरणाप्रद भी किया है। इनकी रचनाओं में व्यक्त स्वदेश प्रेम ही इनकी रचनाओं में राष्ट्रप्रेम और नवीन राष्ट्रीय भावनाओं में वर्णित हो गया। उनकी कविता में आज की समस्याओं और विचारों के स्पष्ट दर्शन होते हैं गांधीवाद तथा आर्य समाज से काफी काफी प्रभावित कर रहे हैं. गुप्तजी ने अपने काव्य रचनाओं की पृष्ठभूमि आज के वर्तमान समय को ना लेकर प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथों तथा पुराणों से ली है उन्होंने अपनी रचनाओं में अतीत के गौरव गाथाओं का स्पष्ट वर्णन एवं मानवतावादी नैतिक प्रेरणा का भरपूर इस्तेमाल किया गया है।

दूसरी तरफ मैथिलीशरण गुप्त का हृदय स्त्रियों के प्रति संवेदना सहानुभूति और करुणा से अप्लावित रहा है उन्होंने महिलाओं के मनोव्यथा को यशोधरा ,उर्मिला, कैकई जैसी रचनाओं में स्पष्ट तौर पर इंगित की है। रचनात्मकता के साथ गुप्त पर महात्मा गांधी का भी गहरा प्रभाव रहा, इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया और कई बार कारावास की यात्रा भी की थी। वह एक सच्चे राष्ट्र कवि थे और उनकी समस्त रचनाएं हिंदी साहित्य की धरोहर मानी जाती हैं। वे काव्य साधना में लीन रहे और राष्ट्र के प्रति अपनी रचनाओं को समर्पित करते रहे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने उन्हें डिलीट की उपाधि प्रदान की थी।

बेहतरीन आवाज और शानदार कलाकारी ने किशोर कुमार को फैंस के जहन में जिंदा रखा



बॉलीवुड के अलबेले और सहाबहार गायक रहे किशोर कुमार का आज जन्मदिन है। 4 अगस्त 1929 को जन्मे हरफनमौला कलाकार भले ही शारीरिक रूप से अब हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी बेहतरीन आवाज और शानदार कलाकारी ने उन्हें आज भी फैंस के जहन में जिंदा रखा है। संगीत की विधिवत ट्रेनिंग लिए बिना भी किशोर कुमार ने अपनी आवाज का जादू बिखेरकर लोगों को इससे जोड़ा।

किशोर कुमार का जन्म 4 अगस्त 1929 को मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में हुआ था। बचपन में उनका नाम आभास कुमार गांगुल था। आभास के पिता कुंजीलाला गांगुली उस वक्त के चर्चित वकील थे। किशोर कुमार के बड़े भाई अशोक कुमार की इच्छा थी कि वह अभिनय में अपना दमखम दिखाए। भाई के सपने को पूरा करने के लिए किशोर ने अभिनय की दुनिया का रुख किया, लेकिन उनका मन कभी भी इसमें ज्यादा नहीं रमा। किशोर कुमार ने 22 फिल्में कीं, जिनमें से 16 फिल्में बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह पिट गईं। किशोर की इच्छा गायिकी में करियर बनाने की थी। अपने दिल की बात सुनते हुए किशोर ने एसडी बर्मन से मुलाकात की, बर्मन ने ही किशोर को अपना स्टाइल विकसित करने की सलाह दी थी। इसके बाद किशोर ने अमेरिकन सिंगर टेक्स मोर्टन और जिमी रोडर्स को सुनकर अपनी गायिकी की स्किल्स को मजबूत किया।

किशोर कुमार को अपनी जन्मभूमि खंडवा से खासा लगाव था। कई दफा शूटिंग को बीच में छोड़कर ही किशोर अपने घर पहुंच जाते थे। इसके साथ उन्हें प्रकृति से भी बेहद प्रेम था। जानकारी है कि किशोर दा पौधों से घंटों बातें करते थे। उनका कहना था कि ये पेड़–पौधे मेरे असली मित्र हैं। किशोर कुमार के मनमौजी के कई किस्से प्रसिद्ध हैं। एक दफा आसा भोसले ने बताया था कि फिल्म 'शराबी' के गाने 'इंतहा हो गई इंतजार की' को गाने से किशोर दा ने इनकार कर दिया था। हालांकि, बाद में उन्होंने शर्त रखा कि वह इसे एक शराबी की तरह ही लेटकर गाएंगे। फिर क्या था फटाफट से एक टेबल का जुगाड़ किया गया, और फिर उन्होंने लेटकर ही गाने को अपनी आवाज दी।

किशोर कुमार लंबे वक्त तक राजेश खन्ना और देव आनंद समेत कई नामचीन सितारों की आवाज बने रहे। किशोर दा ने न सिर्फ हिंदी बल्कि कन्नड़, मलयालम, असमिया, गुजराती, मराठी और बंगाली भाषा में भी गीत गुनगुनाए। किशोर दा ने सबसे ज्यादा गाने राजेश खन्ना के लिए गाए, जिनकी संख्या 240 थी। प्लेबैक सिंगिंग के लिए किशोर कुमार ने आठ फिल्मफेयर अवॉर्ड अपने नाम किए। साथ ही उन्होंने तकरीबन 88 फिल्मों में अभिनय भी किया। रिपोर्ट के अनुसार, किशोर कुमार ने अपने करियर में 110 से ज्यादा संगीतकारों के साथ 2678 फिल्मों के लिए गाने गाए। किशोर कुमार से जुड़ा एक और किस्सा काफी चर्चित है। कहा जाता है कि गायक ने अपने घर के बाहर एक साइन बोर्ड लगाया हुआ था, जिसपर उन्होंने 'बिवेयर ऑफ किशोर' (किशोर से सावधान) लिखवाया था। इतना ही नहीं इसी से जुड़ा मजेदार किस्सा यह भी है कि एक दफा निर्माता–निर्देशक एचएस रवैल किशोर के घर पहुंचे थे, और जब वह मुलाकात कर बाहर निकलने लगे तो



खंडवा में जन्मे किशोर कुमार की स्मृति में मध्यप्रदेश सरकार ने 1997 में 'किशोर कुमार अवॉर्ड' की शुरुआत की। किशोर कुमार गायिकी और अभिनय के अलावा अपने मनमौजी व्यक्तित्व के लिए भी लोगों के बीच काफी चर्चित थे। उनके चुलबुलेपन से जुड़े कई किस्से प्रचलित हैं।



सावन के झूलों ने मुझको बुलाया

सावन के झूलों ने मुझको बुलाया मैं परदेसी घर वापस आया। ऐसे गाने सावन आते ही लोगों की जुबान पर खुद–ब–खुद आ जाते हैं। एक दौर था जब लोगों को सावन के महीने का बेसब्री से इंतजार रहता था। सावन शुरू होते ही गांव की गलियों से लेकर शहरों तक झूले पड़ते थे। महिलाएं झूला झूलतीं और गाती थीं। लड़कियां ससुराल से मायके आती थीं लेकिन अब ये परंपरा खत्म होती जा रही है। अब न तो झूले पड़ते हैं और न गीत सुनाई देतें है। सावन शुरू हो गया है लेकिन इसका एहसास ही नहीं हो रहा है। उमंग और खुमारी का संगम इसी महीने में हरियाली तीज पर खत्म होता था। सखियों को सुख–दुख बांटने, साथ बैठकर मेंहदी लगाने की परंपरा फिर गीत सब गुम हो चुका है। बच्चे अब झूले नहीं वीडियो गेम में मस्त रहते हैं। महिला संगठन भी अब किटी पार्टी जैसे आयोजनों तक सीमित हैं।

झूले की परंपरा लुप्त होने के पीछे सबसे प्रमुख वजह मनोरंजन के भरपूर साधन भी हैं। सावन के आते ही गली–कूचों और बगीचों में मोर, पपीहा और कोयल की मधुर बोली के बीच युवतियां झूले का लुत्फ उठाया करती थीं। गांव की बुजुर्ग महिलायें बताती हैं कि सावन के नजदीक आते ही बहन–बेटियां ससुराल से मायके बुला ली जाती थीं और पेड़ों पर झूला डाल कर झूलती थीं। झुंड के रूप में इकट्ठा होकर महिलाएं सावनी गीत गाया करती थीं। बुजुर्ग महिलायें बताती हैं कि त्योहार में बेटियों को ससुराल से बुलाने की परम्परा आज भी चली आ रही है, लेकिन जगह के अभाव में न तो कोई झूला झूल पाता है और न ही अब मोर, पपीहा व कोयल की सुरीली आवाज ही सुनने को मिलती हैं। बुजुर्ग महिलाओं की मानें तो दस साल पहले तक यहां रक्षाबंधन तक झूले का आनंद लिया जाता रहा है। गांव के पेड़ पर मोटी रस्सी से झूला डाला जाता था और सारे गांव की बहन–बेटियां झूलती थीं।

अब पेड़ ही नहीं हैं तो झूला कहां डालें। सावन के महीने में नवविवाहित महिलाओं को अपने मायके जाने की परम्परा तो आल भी राजस्थान की संस्कृति में अनवरत रूप से चली आ रही है। पहले सावन का महीना आते ही गांव के मोहल्लों में झूले पड़ जाते थे और सावन की मल्हारें गूंजने लगती थी। ग्रामीण युवतियां श्रावणी गीत गाकर झूला झूलने का आनंद लेती थी। वहीं जिन नव विवाहिता वधुओं के पति दूरस्थ स्थानों पर थे उनकों इंगित करते हुए विरह गीत सुनना अपने आप में लोक कला का ज्वलंत उदाहरण हुआ करते थे। समय के साथ पेड़ गायब होते गए और उनके स्थान पर बहुमंजिला इमारतों के बनने से आंगन का अस्तित्व लगभग समाप्त हो गया। ऐसे में सावन के झूले भी यादें बनकर हमारी परम्परा से गायब हो रहे हैं।

भारतीय संस्कृति में झूला झूलने की परम्परा वैदिक काल से ही चली आ रही है। भगवान श्रीकृष्ण राधा संग झूला झूलते और गोपियों संग रास रचाते थे। मान्यता है कि इससे प्रेम बढ़ने के अलावा प्रकृति के निकट जाने एवं उसकी हरियाली बनाये रखने की प्रेरणा मिलती है। संस्कृति एवं परम्परा की ही देन है कि देश के विभिन्न क्षेत्रों के गांव और कस्बों में लोग झूला झूलते हैं। विशेष कर महिलाएं और युवतियां इसकी शौकीन होती हैं। सावन व भादो का महीना हमे प्रकृति के और निकट ले जाता है। झूले झूलने के दौरान गाये जाने वाले गीत मन को सुकून देते हैं। झूला गांव के बागीचों, मंदिर के परिसरों में लगाया जाता है। सावन में झूला झूलना मात्र आनंद की अनुभूति नहीं कराता अपितु यह स्वास्थ्यवर्धक प्राचीन योग भी है।

आज के समय में सावन के झूले नजर ही नहीं आते हैं। लोग इसका कारण जनसंख्या घनत्व में वृद्धि के साथ ही वृक्षों की कटाई मानते हैं। लोग अब घर की छत पर या आंगन में ही रेडीमेड फ्रेम वाले लोहे के झूले पर झूलकर मन को संतुष्ट कर रहे हैं।

बुद्धिजीवी वर्ग सावन के झूलों के लुप्त होने की प्रमुख वजह सुख सुविधा और मनोरंजन के साधनों में वृद्धि को मान रहे हैं। वर्षा ऋतु की खूबियां अब किताबों तक ही सीमित रह गयी है। वर्षा ऋतु में सावन की महिमा धार्मिक अनुष्ठान की दृष्टि से तो बढ़ रही है। मगर प्रकृति के संग जीने की परम्परा थमती जा रही है। झूला झूलने के खत्म हुए रिवाज के लिए गांवों में फैल रही वैमनष्यता जिम्मेदार हैं। पहले गांव के लोग हर बहन–बेटी को अपनी मानते थे लेकिन अब जमाना बदल गया है। कुल मिला कर बाग–बगीचों के खात्मे के साथ जहां मोर–पपीहों की संख्या घटी है वहीं भाईचारे में कमी आई है। नतीजतन झूला झूलने की परम्परा को ग्रहण लग गया है। पहले संयुक्त परिवार में बड़े–बूढ़ों के सानिध्य में लोग एक दूसरे के घरों में एकत्रित होते थे। आज बढ़ती एकल परिवार की प्रवृति ने आपसी स्नेह को खत्म कर दिया है।

महिलाएं सामुदायिक केन्द्रो में जाकर पर्व मनाती हैं। शहरों में अब झूले डालने के लिए जगह की तलाश करनी पड़ती है। अब तो पारम्परिक पहनावा भी आधुनिकता की भेंट चढ़ गया है। अब छुट्टी के दिन लोग परिवार के साथ बाग–बगीचों में जाकर सावन का त्यौहार मनाने की रस्म पूरी करते हैं। वर्षा ऋतु में सावन की खूबियां अब किताबों तक ही सीमित रह गई हैं। प्रकृति के साथ जीने की परम्परा थमती जा रही है। सावन में एक माह तक शहर व ग्रामीण क्षेत्रों में झूला झूलने का दौर भी अब समाप्त हो गया है।

धरती की आस

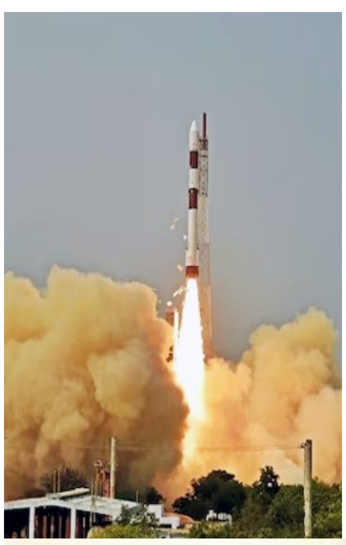
धरती के मन में थी एक आस ।
वो व्याकुल थी भारी, लगी प्यास ।।
झुलस –झुलस काया हुई बंजर ।
बिरहन ह्रदय में चलते खंजर ।।
पुलकित हो ईश्वर से ध्यान लगाया ।
दुःखी धरा ने मनचाहा वर पाया ।।
धरती की खाली झोली भर दी ।
सूखे तन पर जलधार दी ।।
भीगा धरा का अंग– अंग ।
बहे नदिया धारा– हिलोरें संग– संग ।।
पृथ्वी हो गई हरी–भरी ।
नदी, पेड़ ,पर्वत लगें मनोहारी ।।
पशु–पक्षी, कीट– पतंगे गाते प्रेम गीत ।
मेंढक, झींगुर रातों को बजाते संगीत ।।

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
फतेहाबाद, आगरा, उत्तर प्रदेश 283111

मुख्यमंत्री ने अधिवक्ता चैंबर्स का किया उद्घाटन



मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गत दिनों सोमवार गोरखपुर के कलेक्ट्रेट और सदर तहसील में 8 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित अधिवक्ता चैंबर्स का उद्घाटन किया। उन्होंने कलेक्ट्रेट परिसर में 1 करोड़ 25 लाख रूपए की लागत से बनने वाली डिजिटल लाइब्रेरी का भी शिलान्यास किया। कलेक्ट्रेट मुख्यालय के अधिवक्ता चैंबर्स में 24 अधिवक्ता कक्ष, एक मीटिंग सह कॉन्फ्रेंस हॉल, एक कॉमन हॉल और स्टिल्ट पार्किंग का निर्माण कराया गया है। वहीं, सदर तहसील के अधिवक्ता चैंबर्स में 48 अधिवक्ता कक्ष बनाए गए हैं।



सात उपग्रह सफलतापूर्वक निर्धारित कक्षा में स्थापित

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने रविवार सुबह सिंगापुर के डीएस–सार उपग्रह सहित सात उपग्रहों को सफलतापूर्वक लॉन्च किया। इसरो का रॉकेट पीएसएलवी सी56 श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से सुबह साढ़े छह बजे इन उपग्रहों को लेकर अंतरिक्ष की ओर रवाना हुआ। बाद में इसरो ने घोषणा की कि मिशन सफल रहा है और सिंगापुर के ये सात उपग्रह सफलतापूर्वक निर्धारित कक्षा में स्थापित हो गए हैं।

इसरो के अनुसार उड़ान भरने के लगभग 23 मिनट बाद प्रमुख उपग्रह अलग हो गया और उसके बाद छह अन्य सह–यात्री उपग्रह अलग हुए, जिन्हें क्रमानुसार निर्धारित कक्षाओं में स्थापित किया गया है। उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण पर इसरो ने ट्विटर पर लिखा, पीएसएलवी–सी56/डीएस–एसएआर मिशनः मिशन पूरी तरह सफल रहा। PSLV&C56 रॉकेट ने सभी सात उपग्रहों को उनकी निर्धारित कक्षाओं में सटीक रूप से प्रक्षेपित किया। अनुबंध के लिए एनएसआईएल इंडिया और सिंगापुर को धन्यवाद।

इसरो प्रमुख ने मिशन की सफलता पर बधाई दी...

मिशन की सफलता के बाद इसरो प्रमुख एस सोमनाथ ने सभी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि पीएसएलवी–सी56 के जरिए लॉन्च किए गए मुख्य उपग्रह डीएस–एसएआर सहित सभी सात उपग्रह सफलतापूर्वक सही कक्षा में स्थापित हो गए हैं। इसरो का यह पूरी तरह व्यावसायिक मिशन है, जिसे न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड संचालित कर रहा है। इसके लिए शनिवार को उलटी गिनती शुरू हुई थी। इसरो ने बताया कि 360 किलो वजनी डीएस–सार उपग्रह सिंगापुर सरकार की प्रतिनिधि एजेंसी डीएसटीए और सिंगापुर की कंपनी एसटी इंजीनियरिंग के साथ विकसित किया गया है।

सातों उपग्रहों के बारे में जानें

डीएस–सारः सिंगापुर का यह उपग्रह सिंथेटिक अपर्चर रडार (सार) उपकरण से युक्त है जिसे इस्राइल की अंतरिक्ष तकनीक क्षेत्र की कंपनियों ने बनाया है। यह उपग्रह हर मौसम व रात में भी काम करते हुए धरती की 1 मीटर सतह तक का डाटा उपलब्ध करवाएगा। **वेलॉक्स–एएमः** 23 किलो का यह माइक्रो उपग्रह तकनीक प्रदर्शन के लिए भेजा रहा है। आर्केड एटमॉस्फियर कपलिंग व डायनेमिक एक्सप्लोरर : यह एक प्रायोगिक उपग्रह है।

स्कूब–2: यह 3यू नैनो सैटेलाइट एक तकनीक प्रदर्शक उपकरण से युक्त है। **ग्लासिया–2:** यह भी 3यू नैनो सैटेलाइट है, जो पृथ्वी की निचली कक्षा में परिक्रमा करेगा। **ओआरबी–12 स्ट्राइडरः** यह उपग्रह अंतरराष्ट्रीय सहयोग से बना है।



'आखिरकार, उधमसिंह ने जलियांवाला बाग के दोषी से बदला ले ही लिया'

उधम सिंह एक भारतीय क्रांतिकारी थे, जो ब्रिटिश भारत में पंजाब के भूतपूर्व लेफ्टिनेंट गवर्नर सर मा. इकल ओ, डायर की हत्या के लिए जाने जाते है। उधम सिंह ने 13 मार्च 1940 को उनकी हत्या की थी। कहा जाता है की यह हत्या उन्होंने 1919 में अमृतसर में हुए जलियांवाला बाग़ नरसंहार का बदला लेने के लिए किया। भारतीय स्वतंत्रता अभियान में उधम सिंह एक जाना माना चेहरा है। स्थानिक लोग उन्हें शहीद–ए–आजम सरदार उधम सिंह के नाम से भी जानते है। अक्टूबर 1995 में मायावती सरकार ने उत्तराखंड के (उधम सिंह नगर) एक जिले का नाम उन्ही के नाम पर रखा है।

सरदार उधम सिंह का जन्म 26 दिसम्बर 1899 को एक सिख परिवार में पंजाब राज्य के संगरूर जिले के सुनम गाँव में हुआ था सरदार उधम सिंह की माँ का उनके जन्म के दो वर्ष बाद 1901 में देहांत हो गया था और पिताजी सरदार तेजपाल सिंह रेलवे में कर्मचारी थे जिनका उधम सिंह के जन्म के 8 साल बाद 1907 में देहांत हो गया था द्य इस तरह केवल 8 वर्ष की उम्र के उनके सर से माता पिता का साया उठ चूका था । अब उनके माता पिता की मृत्यु के बाद उनके बड़े भाई मुक्ता सिंह उधम सिंह को अमृतसर के खालसा अनाथालय में दाखिला कराया द्य शहीद उधम सिंह का बचपन में नाम शेर सिंह था लेकिन अनाथालय में सिख दीक्षा संस्कार देकर उनको उधम सिंह नाम दिया गया। 1918 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात 1919 में उन्होंने अनाथालय छोड़ दिया।

13 अप्रैल 1919 को स्थानीय नेताओ ने अंग्रेजो के रोलेट एक्ट के विरोध में जलियावाला बाग़ में एक विशाल सभा का आयोजन किया था द्य इस रोलेट एक्ट के कारण भारतीयों के मूल अधिकारों का हनन हो रहा था द्य अमृतसर के जलियावाला बाग़ में उस समय लगभग 20000 निहत्थे प्रदर्शनकारी जमा हुए थे द्य उस समय उधम सिंह उस विशाल सभा के लिए पानी की व्यवस्था में लगे हुए थे।

स्वतंत्रता आंदोलन में भाग

स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में सन् 1919 का 13 अप्रैल का दिन आँसुओं में डूबा हुआ है, जब अंग्रेज़ों ने अमृतसर के जलियाँवाला बाग़ में सभा कर रहे निहत्थे भारतीयों पर अंधाधुंध गोलियाँ चलायीं और सैकड़ों बेगुनाह लोगों को मौत के घाट उतार दिया। मरने वालों में माँओं के सीने से चिपके दुधमुँहे बच्चे, जीवन की संध्या बेला में देश की आज़ादी का सपना देख रहे बूढ़े और देश के लिए सर्वस्व लुटाए को तैयार युवा सभी थे। इस घटना ने ऊधमसिंह को हिलाकर रख दिया और उन्होंने अंग्रेज़ों से इसका बदला लेने की ठान ली। हिन्दू, मुस्लिम और सिख एकता की नींव रखने वाले 'ऊधम सिंह उर्फ राम मोहम्मद आज़ाद सिंह' ने इस घटना के लिए जनरल माइकल ओडायर को ज़िम्मेदार माना जो उस समय पंजाब प्रांत का गवर्नर था। गवर्नर के आदेश पर ब्रिगेडियर जनरल रेजीनल्ड एडवर्ड हैरी डायर ने 90 सैनिकों को लेकर जलियांवाला बाग़ को चारों तरफ से घेर कर मशीनगन से गोलियाँ चलवाईं

उधम सिंह शहीद भगत सिंह के विचारों से प्रेरित

उधम सिंह भगत सिंह के कार्यों और उनके क्रन्तिकारी समूह से बहुत ही प्रभावित हुए थे। 1935 जब वे कश्मीर गए थे, उन्हें भगत सिंह के तस्वीर के साथ पकड़ा गया था। उन्हें बिना किसी अपराध के भगत सिंह का सहयोगी मान लिया गया और भगत सिंह को उनका गुरु। उधम सिंह को देश भक्ति गीत गाना बहुत ही अच्छा लगता था और वे राम प्रसाद बिस्मिल के गीतों के बहुत शौक़ीन थे जो क्रांतिकारियों के एक महान कवी थे।

उधम सिंह को जेल

इस घटना के घुस्से और दुःख की आग के कारण उधम सिंह ने बदला लेने का सोचा। जल्दी ही उन्होंने भारत छोड़ा और वे अमरीका गए। उन्होंने 1920 के शुरुवात में ठंइइंत ।ासप डवअमउमदज के बारे में जाना और वे वापस भारत लौट आये। वो छुपा कर एक पिस्तौल ले कर आये थे जिसके कारण पकडे जाने पर अमृतसर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया था। इसके कारण उन्हें 4 साल की जेल हुई बिना लाइसेंस पिस्‍तौल रखने के कारण।

जेल से छुटने के बाद इसके बाद वे अपने स्थाई निवास सुनाम ॅनदंउ में रहने के लिए आये पर वहां के ब्रिटिश पुलिस वालों ने उन्हें परेशां किया जिसके कारण वे अमृतसर चले गए। अमृतसर में उधम सिंह ने एक दुकान खोला जिसमें एक पेंटर का बोर्ड लगाया और राम मुहम्मद सिंह आजाद के नाम से रहने लगे राम मोहम्मद सिंह आजाद उधम सिंह ने यह नाम कुछ इस तरीके से चुना था की इसमें सभी धर्मों के नाम मौजूद थे।

माइकल ओ'ड्वायर की गोली मारकर हत्या

उधमसिंह 13 अप्रैल 1919 को घटित जालियाँवाला बाग नरसंहार के प्रत्यक्षदर्शी थे। राजनीतिक कारणों से जलियाँवाला बाग में मारे गए लोगों की सही संख्या कभी सामने नहीं आ पाई। इस घटना से वीर उधमसिंह तिलमिला गए और उन्होंने जलियाँवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर माइकल ओ डायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ले ली। अपने मिशन को अंजाम देने के लिए उधम सिंह ने विभिन्न नामों से अफ्रीका, नैरोबी, ब्राजील और अमेरिका की यात्रा की। सन् 1934 में उधम सिंह लंदन पहुंचे और वहां 9, एल्डर स्ट्रीट कमर्शियल रोड पर रहने लगे। वहां उन्होंने यात्रा के उद्देश्य से एक कार खरीदी और साथ में अपना मिशन पूरा करने के लिए छह गोलियों वाली एक रिवाल्वर भी खरीद ली।

भारत का यह वीर क्रांतिकारी माइकल ओ डायर को ठिकाने लगाने के लिए उचित वक्त का इंतजार करने लगा। उधम सिंह को अपने सैकड़ों भाई–बहनों की मौत का बदला लेने का मौका 1940 में मिला। जलियांवाला बाग हत्याकांड के 21 साल बाद 13 मार्च 1940 को रायल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के काक्सटन हाल में बैठक थी जहां माइकल ओ डायर भी वक्ताओं में से एक था। उधम सिंह उस दिन समय से ही बैठक स्थल पर पहुंच गए। अपनी रिवॉल्वर उन्होंने एक मोटी किताब में छिपा ली। इसके लिए उन्होंने किताब के पृष्ठों को रिवॉल्वर के आकार में उस तरह से काट लिया था, जिससे डायर की जान लेने वाला हथियार आसानी से छिपाया जा सके।

क्रांतिकारी राजनीतीः

इसके बाद उधम सिंह क्रांतिकारी राजनीती में शामिल हो गए और भगत सिंह एवं उनके क्रांतिकारी समूह का उनपर काफी प्रभाव पड़ा। 1924 में सिंह ग़दर पार्टी में शामिल हो गये और विदेशो में जमे भारतीयों को जमा करने लगे। 1927 में भगत सिंह के आदेश पर वे भारत वापिस आ गए और अपने साथ वे 25 सहयोगी, रिवाल्वर और गोलाबारूद भी ले आए। इसके तुरंत बाद उन्हें बिना लाइसेंस के हथियार रखने के लिए गिरफ्तार किया गया। इसके बाद उनपर मुकदमा चलाया गया और उन्हें पाँच साल की सजा देकर जेल भेजा गया।

1931 में जेल से रिहा होने के बाद, सिंह के अभियान पर पंजाब पुलिस निरंतर निगरानी रख रही थी। इसके बाद वे कश्मीर चले गये और वहाँ वे पुलिस से बचने में सफल रहे और भागकर जर्मनी चले गए। 1934 में सिंह लन्दन पहुचे और वहाँ उन्होंने माइकल ओ'डायर की हत्या करने की योजना बनायीं थी। 4 जून 1940 को ऊधम सिंह को डायर की हत्या का दोषी ठहराया गया और 31 जुलाई, 1940 को उन्हें 'पेंटनविले जेल' में फाँसी दे दी गयी।

इस प्रकार यह क्रांतिकारी भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में अपनी शहादत देकर अमर हो गया। 31 जुलाई, 1974 को ब्रिटेन ने उनके अवशेष भारत को सौंप दिए थे। ऊधम सिंह की अस्थियाँ सम्मान सहित भारत लायी गईं। उनके गाँव में उनकी समाधि बनी हुई है।



आगे बढ़ता भारत आखिर महिलाओं और बच्चियों की रक्षा क्यों नहीं कर पा रहा

मणिपुर में 19 जुलाई को दो महिलाओं को निर्वस्त्र कर गांव में घुमाने का वीडियो वायरल हुआ था, उस घटना ने देश–विदेश के सभ्य समाजों को झकझोर दिया है। अब ऐसी ही एक घटना पश्चिम बंगाल के मालदा में सामने आई है। यहां भीड़ ने दो महिलाओं की पिटाई की, फिर उन्हें अर्धनग्न कर दिया गया। यह घटना मालदा के बामनगोला पुलिस स्टेशन के पाकुआ हाट इलाके में हुई। दोनों पीड़ित महिलाएं आदिवासी हैं। जब उनकी पिटाई हो रही थी और कपड़े उतारे जा रहे थे तो पुलिस वहां मूकदर्शक बनी खड़ी हुई थी। बात केवल आदिवासी महिलाओं की नहीं है, बात केवल महिलाओं पर हो रहे अपराधों, यौन–उत्पीड़न, बलात्कार, हिंसा की भी नहीं है, बल्कि अधिक विचलित करने वाली बात महिलाओं एवं बच्चियों के लापता होने की है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो की ओर से संकलित आंकड़ों के अनुसार 2019 से 2021 के बीच यानी मात्र तीन वर्षों में देश भर में 13 लाख से अधिक लड़कियां और महिलाएं लापता हुई हैं। इन लापता होने वाली लड़कियों और महिलाओं में दलित, आदिवासी जनजाति की संख्या ज्यादा है। एक आदिवासी महिला के देश के राष्ट्रपति होने के बावजूद महिलाओं पर बढ़ते अपराध एवं लापता होने की घटनाएं अधिक चिन्ता का सबब है।

विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर एवं दुनिया की तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था का दावा करने वाले देश की महिलाएं मध्ययुग से भी ज्यादा सामंती सोच, असंवेदना, असुरक्षा, हिंसा, वीभत्स अपराधों और हवस की शिकार बन रही हैं। आज जब देश में हर मुद्दे पर बहस छिड़ जाना आम बात हो गई है, दर्जनों टी.वी. चैनल एक से ही सवाल पर घंटों बहस करते हैं, आम चुनाव की चौखट पर खड़े देश के राजनीतिक दल ज्वलंत मुद्दों के नाम पर सरकार को घेरने की तलाश में रहते हैं तो इतनी बड़ी संख्या में महिलाओं के लापता होने एवं यौन–उत्पीड़न के सवाल पर बहस क्यों नहीं छेड़ी जाती? बहस इस बात पर भी होनी चाहिए कि दिल्ली के निर्भया कांड के बाद महिलाओं की सुरक्षा से संबंधित कानूनों को कठोर किया गया लेकिन कानून बन जाने के बाद भी स्थितियां क्यों नहीं सुधरी हैं? चिन्ता का कारण है कि महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों में कोई विशेष कमी आती नहीं दिख रही है। वे पहले की ही तरह यौन अपराधियों का शिकार बन रही हैं, लापता हो रही है। छेड़छाड, बलात्कार, अपहरण, लापता होने और दुष्कर्म के मामले थमने का नाम नहीं ले रहे हैं।

बड़ा प्रश्न है कि तमाम कानून एवं सुरक्षा व्यवस्थाएं होने के बावजूद आखिर इतनी बड़ी संख्या में लड़कियां और महिलाएं कहां गायब हो रही हैं? यह वह प्रश्न है, जिसका उत्तर नीति–नियंताओं के साथ ही समाज को भी देना होगा, क्योंकि यह ऐसा मामला नहीं, जिसके लिए केवल सरकारों को कठघरे में खड़ा कर कर्तव्य की इतिश्री कर ली जाए। गायब होती लड़कियों और महिलाओं के मामले में समाज भी उत्तरदायी है। स्वयं को देश का भाग्य निर्माता मानने वाले राजनीतिक दल भी इसके दोषी हैं। इन सबको अपने अंदर झांकना होगा और स्वयं से यह प्रश्न करना होगा कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि देश के कई हिस्सों में अभी बालक–बालिकाओं का अनुपात संतुलित नहीं हुआ है, क्योंकि कन्या भ्रूण हत्या का सिलसिला कायम है। यह सिलसिला कानूनों को कठोर करने के बाद भी कायम है।

गायब होने वाली लड़कियों में अच्छी–खासी संख्या नाबालिग लड़कियों की भी है। इसका मतलब है कि नारी सुरक्षा का मामला बहुत ही गंभीर है। यह मानने का कोई कारण नहीं कि 2021 के बाद स्थितियों में सुधार आया होगा, क्योंकि लड़कियों और महिलाओं के लापता होने या उनका अपहरण किए जाने अथवा बहला–फुसलाकर भगा ले जाने के समाचार आए दिन आते ही रहते हैं। महिलाओं के प्रति यह संवेदनहीनता एवं बर्बरता कब तक चलती रहेगी? भारत विकास के रास्ते पर तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन अभी भी कई हिस्सों में महिलाओं को लेकर गलत धारणा है कि महिलाएं या बेटियां शोषण एवं उत्पीड़न के लिये ही हैं। एक विकृत मानसिकता भी कायम है कि वे भोग्य की वस्तु है? उन्हें पांव के नीचे रखा जाना चाहिए। यों लापता होने की घटनाएं आए दिन होने वाले जघन्य अपराधों की ही अगली कड़ी है, मगर यह पुरुषवादी सोच और समाज के उस ढांचे को भी सामने करती है, जिसमें महिलाओं की सहज जिंदगी लगातार मुश्किल बनी हुई है, संकटग्रस्त एवं असुरक्षित है। भले ही महिलाओं ने अपनी जंजीरों के खिलाफ बगावत कर दी है, लेकिन देश में ऐसा वर्ग भी है जहां आज भी महिलाएं अत्याचार का शिकार होती है। देश के अन्य हिस्सों की ही भांति गुजरात एवं मध्य प्रदेश में आदिवासी महिलाएं बड़ी संख्या में लापता हो रही हैं। भले एक खास महिला वर्ग ने आर्थिक मोर्चे पर आजादी हासिल की है, लेकिन एक बड़ा महिला वर्ग आज भी पुरुषप्रधान समाज की संकीर्ण एवं विकृत सोच का शिकार है। ऐसा माहौल कायम है तभी आजादी के अमृत महोत्सव मना चुके राष्ट्र की तमाम महिलाएं अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व की सुरक्षा की गुहार लगातीं हुई दिखाई देती है। इसलिये कि उन्हें सदियों से चली आ रही मानसिकता, साजिश एवं सजा के द्वारा भीतरी सुरंगों में धकेल दिया जाता है, अत्याचार भोगने को विवश किया जाता है।

बात मणिपुर की दो महिलाओं या बंगाल के मालदा में दो महिलाओं को नग्न करने या समूचे देश में महिलाओं के लापता होने से अधिक चिन्ता की बात यह है कि इन शर्मसार करने एवं झकझोर देने वाली घटनाओं पर भी राजनीतिक दल राजनीति करने से बाज नहीं आते। इन अति संवेदनशील मुद्दों पर राजनीतिक लाभ की रोटियां सेंकना दुर्भाग्यपूर्ण है। अच्छा हो सभी मिलकर नारी सम्मान के प्रति सचेत और संवेदनशील होकर उनके लापता होने, उन पर लगातार हो रहे अत्याचारों को रोकने की दिशा में कोई प्रभावी एवं सार्थक पहल करें। गायब होती लड़कियों और महिलाओं की बड़ी संख्या यही बताती है कि भारतीय समाज उनके प्रति अनुदार है। इस अनुदारता को दूर करने के लिए सबसे अधिक राजनीतिक वर्ग को ही आगे आना होगा और अनिवार्य रूप से समाज को भी।

नरेन्द्र मोदी की पहल पर निश्चित ही महिलाओं पर लगा दोयम दर्जा का लेबल हट रहा है। हिंसा एवं अत्याचार की घटनाओं में भी कमी आ रही है। बड़ी संख्या में छोटे शहरों और गांवों की लड़कियां पढ़–लिखकर देश के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वे उन क्षेत्रों में जा रही हैं, जहां उनके जाने की कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। वे टैक्सी, बस, ट्रक से लेकर जेट तक चला–उड़ा रही हैं। सेना में भर्ती होकर देश की रक्षा कर रही है। अपने दम पर व्यवसायी बन रही हैं। होटलों की मालिक हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की लाखों रुपये की नौकरी छोड़कर स्टार्टअप शुरू कर रही हैं। वे विदेशों में पढ़कर नौकरी नहीं, अपने गांव का सुधार करना चाहती हैं।

अब सिर्फ अध्यापिका, नर्स, बैंकों की नौकरी, डॉक्टर आदि बनना ही लड़कियों के क्षेत्र नहीं रहे, वे अन्य क्षेत्रों में भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। इस तरह नारी एवं बालिका शक्ति ने अपना महत्व तो दुनिया समझाया है, लेकिन नारी एवं बालिका के प्रति हो रहे अपराधों में कमी न आना, घरेलू हिंसा का बढ़ना, आदिवासी–दलित महिलाओं एवं बालिकाओं पर अत्याचारों का बढ़ना एवं उनका लापता होना, उनकी सुरक्षा खतरे में होना– ऐसे चिन्तनीय प्रश्न हैं, जिन पर सरकार को कठोर बनना होगा, सख्त व्यवस्था बनानी होगी। सरकार ने सख्ती बरती है, लेकिन आम पुरुष की सोच को बदलने बिना नारी एवं बालिका सम्मान की बात अधूरी ही रहेगी। इस अधूरी सोच को बदलना नये भारत का संकल्प हो, इसीलिये तो इस देश के सर्वोच्च पद पर द्रौपदी मुर्मू को आसीन किया गया हैं। लेकिन उनके सर्वोच्च पद पर होने के बावजूद उनके समुदाय की महिलाओं की सुरक्षा एवं अस्मिता खतरे में रहे, यह अधिक गंभीर मामला है।

आदिवासी समूहों के अपने सपने और आकांक्षाएं

जनजातीय लोगों की उम्मीदों और जरूरतों पर खरी उतरे सरकार

राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू के साथ एक मार्मिक बातचीत में झारखंड के मुख्य मंत्री हेमंत सोरेन ने ठीक ही कहा है कि मणिपुर में रहने वाले जातीय समूह के बीच असुरक्षा की गम्भीर भावना है। उन्होंने दृढ़ता से कहा है कि हमारे वनवासी भाइयों और बहनोंके साथ भयानक बर्बर तरीकेसे व्यवहार नहीं किया जा सकता है। अपनी पीड़ामें उन्होंने सही कहा है कि क्रूरताके सामने चुप्पी एक भयानक अपराध है और निश्चित रूप से यह बात सही है। मणिपुर में कठोर वास्तविकताओं में सोरेन की पीड़ाभरी आवाज को समझा जा सकता है। इस बात की सराहना करनेकी जरूरत है कि आदिवासी समूहों के अपने सपने और आकांक्षाएं हैं। हालांकि आदिवासी लय कहीं खो गयी है। हालांकि आदिवासियों की समस्या केवल परम्पराओं को बनाये रखने की नहीं है। केन्द्र में आर्थिक शोषण के कुछ महत्वपूर्ण और संवेदनशील मुद्दे हैं। हालांकि मूल रूप से विभिन्न इलाकों में बिखरे हुए भारतीय आदिवासी बाहरी दुनिया के साथ बातचीत के कारण आज बेहद बेचैन हैं। अपनी आशाओं और आकांक्षाओंमें जागृत होने के बाद वह अक्सर असमंजस में रहते हैं। एक प्रकार की ऐसी दुविधा जो कि उनकी समस्याओं के ईमानदार उत्तर खोजने की इच्छा से उत्पन्न होती है क्योंकि वह खुद को मुखर करना शुरू करते हैं। हम इतने बड़े आदिवासी विद्रोह की व्याख्या कैसे कर सकते हैं। हम इसे बकवास कहकर खारिज नहीं कर सकते और न ही हम इसे उग्रवादी समूहों द्वारा स्थानीय लोगोंका महज राजनीतिक और वैचारिक शोषण कहकर खारिज कर सकते हैं। सच तो यह है कि रैडीमेड विस्फोटक सामग्री मौजूद होती है और उसके कारण भी ज्ञात हैं। लेकिन यदि स्पष्ट सुधार शुरू नहीं किये गये तो भी क्या किया जाना चाहिए। आदिवासियोंकी आजीविका और सांस्कृतिक अस्तित्वकी वास्तविक मांगोंपर पर्याप्त और उचित प्रतिक्रिया देनेमें केन्द्र और राज्याधिकारियों की विफलता खेदजनक है। समग्र राष्ट्रीय ढांचेके भीतर समायोजनका व्यवहार्य समाधान खोजना आधुनिक भारतकी प्रमुख समस्याओंमेंसे एक है। आज हम जो देख रहे हैं वह एक खंडित प्रतिक्रिया है जबकि सांस्कृतिक संवेदनशीलता और राष्ट्रीय ढांचेके भीतर उनके उत्थानके लिए एक समग्र दृष्टिकोण विकसित करना होगा। इस बातको समझनेकी जरूरत है कि आदिवासी भारतीय जीवन का एक महत्वपूर्ण खटक है। उनकी अपनी एक विशिष्ट संस्कृति है जो हमारे राष्ट्रीय जीवन को समृद्ध बनाती हैं। आदिवासी जो चाहते हैं वह उनके जीवन स्तरमें सुधार करना है। इससे उन पर ऊपर से थोपने की जरूरत नहीं है। उनके जीवन संतुलन को बिगाड़े बिना उनके जीवन की सभ्यशील गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है। जो महत्वपूर्ण है वह है वैज्ञानिक स्वभाव और राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास। आधुनिकीकरण, विकास और परिवर्तन के नामपर उनपर शहरी पहनावा नहीं थोपा जाना चाहिए। यह इंगित करने की जरूरत है कि उत्तर पूर्व के संवेदनशील क्षेत्र सहित भारत के जनजातीय क्षेत्र में काफी तनाव है। इस क्षेत्र में अक्सर विदेशी हाथों और मिशनरियों की भूमिका का उल्लेख होता है। सामाजिक, आर्थिक सम्पर्क ने भी धार्मिक और राजनीतिक रंग ले लिया है। यह कहने की जरूरत है कि हमारी बदतर गृहरक्षा और घरेलू समस्याओं से तेजी से और मजबूती से निबटने में हमारी असमर्थता के कारण विदेशी हाथ इसमें शामिल हो जाते हैं। आदिवासियों के संबंधमें चीजों को भटकने देना भले ही राजनीतिक रूप से कितना भी कुशल क्यों न हो यह राष्ट्रहित में नहीं होता है। मेरी बात सरल है। राष्ट्रीय नेतृत्व को आदिवासियों की शिकायतों पर प्रतिक्रिया देना सीखना चाहिए। यह उनके मूड और समस्याओं के प्रति अतिरिक्त संवेदनशील होना चाहिए। इसे आदिवासियोंकी समस्याओं का भी विश्लेषण करना चाहिए और उपलब्ध विकल्पोंपर ध्यान देना चाहिए। समानांतर तौर पर यह महत्वपूर्ण है कि एक बार किसी विकल्प पर' यदि ध्यान दिया जाय तो इसे विस्तृत रूपसे और दिलसे लागू भी किया जाना चाहिए। एक लोकतांत्रिक सरकारसे आशा की जाती है कि वह जनजातीय लोगों की उम्मीदों और जरूरतोंपर खरी उतरे यह कोई मुश्किल काम नहीं है।



राष्ट्रीय नेतृत्व को आदिवासियों की शिकायतों पर प्रतिक्रिया देना सीखना चाहिए। यह उनके मूड और समस्याओं के प्रति अतिरिक्त संवेदनशील होना चाहिए। इसे आदिवासियोंकी समस्याओं का भी विश्लेषण करना चाहिए और उपलब्ध विकल्पोंपर ध्यान देना चाहिए। समानांतर तौर पर यह महत्वपूर्ण है कि एक बार किसी विकल्प पर' यदि ध्यान दिया जाय तो इसे विस्तृत रूपसे और दिलसे लागू भी किया जाना चाहिए। एक लोकतांत्रिक सरकारसे आशा की जाती है कि वह जनजातीय लोगों की उम्मीदों और जरूरतोंपर खरी उतरे यह कोई मुश्किल काम नहीं है।

'कब गीता ने ये कहा, बोली कहां कुरान, करो धर्म के नाम पर, धरती लहूलुहान।।'



नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि सांप्रदायिक हिंसा, झड़पों में बीते साल के मुकाबले ज़बरदस्त उछाल आया है। बीते कुछ दिनों में भारत के अलग–अलग राज्यों से एक के बाद एक सांप्रदायिक झड़पों की घटनाएं सामने आई हैं। इनमें से सबसे हालिया घटना मणिपुर और हरियाणा के मेवात की, जहां ब्रजयात्रा के मौके पर शोभायात्रा के दौरान हिंसा भड़की और लोग इसमें घायल हो गए। जिनमें पुलिस वाले शामिल हैं। लेकिन सवाल अभी भी बरक़रार है कि देश में सांप्रदायिक दंगों की घटनाएं इतनी क्यों बढ़ी हैं?

भारत मूलतः विविधताओं का देश है, विविधताओं में एकता ही यहाँ की सामासिक संस्कृति की स्वर्णिम गरिमा को आधार प्रदान करती है। वैदिक काल से ही सामासिक संस्कृति में अंतर और बाह्य विचारों का अंतर्वेशन ही यहाँ की विशेषता रही है, इसलिये किसी भी सांस्कृतिक विविधता को आत्मसात करना भारत में सुलभ है। इसी परिप्रेक्ष्य में धार्मिक सहचार्यता भी इन्हीं विशेषताओं में से एक रही है, इसका अप्रतिम उदाहरण सूफीवाद में देखा जा सकता है जहाँ पर इस्लामिक एकेश्वरवाद और भारतीय धर्मों की कुछ विशेषताओं का स्वर्णिम संयोजन हुआ तथा परिणामस्वरूप एक संश्लेषित धार्मिक वैचारिकता का सफल अनुगमन हुआ। किंतु हाल के वर्षों में भारत की सांस्कृतिक विविधता–सांस्कृतिक विषमता में अंतरित हो रही है जिससे लोगों के मध्य सद्भाव में ह्रास के साथ ही सांस्कृतिक विशेषता पर भी नकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा है।

एक राजनीतिक दर्शन के रूप में सांप्रदायिकता की जड़ें भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता में मौजूद हैं। भारत में सांप्रदायिकता का प्रयोग सदैव ही धार्मिक और जातीय पहचान के आधार पर समुदायों के बीच सांप्रदायिक घृणा और हिंसा के आधार पर विभाजन, मतभेद और तनाव पैदा करने के लिये एक राजनीतिक प्रचार उपकरण के रूप में किया गया है। सांप्रदायिक हिंसा एक ऐसी घटना है जिसमें दो अलग–अलग धार्मिक समुदायों के लोग नफरत और दुश्मनी की भावना से लामबंद होते हैं और एक–दूसरे पर हमला करते हैं। देश में फेक न्यूज़ के तीव्र प्रसार से सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने में सोशल मीडिया ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। सोशल मीडिया हिंसा के माध्यम से दंगों और हिंसा के ऑडियो–विजुअल का प्रसार काफी सुगम और तेज़ हो गया है। हिंसा से संबंधित ये अमानवीयता ग्राफिक चित्रण आम जनता में अन्य समुदायों के प्रति घृणा को और बढ़ा देते हैं।

पत्रकारिता की नैतिकता और तटस्थता का पालन करने के स्थान पर देश के अधिकांश मीडिया हाउस विशेष रूप से किसी–न–किसी राजनीतिक विचारधारा के प्रति झुके हुए दिखाई देते हैं, जो बदले में सामाजिक दरार को चौड़ा करता है। वर्तमान समय में विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा अपने राजनीतिक लाभों की पूर्ति के लिये सांप्रदायिकता का सहारा लिया जाता है। एक प्रक्रिया के रूप में राजनीति का सांप्रदायीकरण भारत में सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने के साथ–साथ देश में सांप्रदायिक हिंसा की तीव्रता को बढ़ाता है। भारतीय लोगों में आमतौर पर मूल्य–आधारित शिक्षा का अभाव देखा जाता है, जिसके कारण वे बिना सोचे–समझे किसी की भी बातों में आ जाते हैं और अंधानुकरण करते हैं।

विकास का असमान स्तर, वर्ग विभाजन, गरीबी और बेरोज़गारी आदि कारक सामान्य लोगों में असुरक्षा का भाव उत्पन्न करते हैं। असुरक्षा की भावना के चलते लोगों का सरकार पर विश्वास कम हो जाता है, परिणामस्वरूप अपनी ज़रूरतों/हितों को पूरा करने के लिये लोगों द्वारा विभिन्न राजनीतिक दलों, जिनका गठन सांप्रदायिक आधार पर हुआ है, का सहारा लिया जाता है।

दो समुदायों के बीच विश्वास और आपसी समझ की कमी या एक समुदाय द्वारा दूसरे समुदाय के सदस्यों का उत्पीड़न आदि के कारण उनमें भय, शंका और खतरे का भाव उत्पन्न होता है। इस मनोवैज्ञानिक भय के कारण लोगों के बीच विवाद, एक–दूसरे के प्रति नफरत, क्रोध और भय का माहौल पैदा होता है।

सांप्रदायिक हिंसा के दौरान निर्दोष लोग अनियंत्रित परिस्थितियों में फँस जाते हैं, जिसके कारण व्यापक स्तर पर मानवाधिकारों का हनन होता है। सांप्रदायिक हिंसा के कारण जानमाल का काफी अधिक नुकसान होता है। सांप्रदायिक हिंसा वोट बैंक की राजनीति को बढ़ावा देती है और सामाजिक सामंजस्य प्रभावित होता है। यह दीर्घावधि में सांप्रदायिक सद्भाव को गंभीर नुकसान पहुँचाती है। सांप्रदायिक हिंसा धर्मनिरपेक्षता और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों को प्रभावित करती है। सांप्रदायिक हिंसा में पीड़ित परिवारों को इसका सबसे अधिक खामियाज़ा भुगतना पड़ता है, उन्हें अपना घर, प्रियजनों यहाँ तक कि जीविका के साधनों से भी हाथ धोना पड़ता है। सांप्रदायिकता देश की आंतरिक सुरक्षा के लिये भी चुनौती प्रस्तुत करती है क्योंकि सांप्रदायिक हिंसा को भड़काने वाले एवं उससे पीड़ित होने वाले दोनों ही पक्षों में देश के ही नागरिक शामिल होते हैं।

सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिये पुलिस को अच्छी तरह से सुसज्जित होने की आवश्यकता है। इस तरह की घटनाओं को रोकने हेतु स्थानीय खुफिया नेटवर्क को मज़बूत किया जा सकता है। सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिये शांति समितियों की स्थापना की जा सकती है जिसमें विभिन्न धार्मिक समुदायों से संबंधित व्यक्ति सद्भावना फैलाने और दंगा प्रभावित क्षेत्रों में भय तथा घृणा की भावनाओं को दूर करने के लिये एक साथ कार्य कर सकते हैं। यह न केवल सांप्रदायिक तनाव बल्कि सांप्रदायिक दंगों को रोकने में भी मददगार साबित होगा। देश के आम लोगों को मूल्य आधारित शिक्षा दी जानी चाहिये, ताकि वे आसानी से किसी की बातों में न आ सकें। शांति, अहिंसा, करुणा, धर्मनिरपेक्षता और मानवतावाद के मूल्यों के साथ–साथ वैज्ञानिकता (एक मौलिक कर्त्तव्य के रूप में निहित) और तर्कसंगतता के आधार पर स्कूलों और कॉलेजों/विश्वविद्यालयों में बच्चों के उत्कृष्ट मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करने, मूल्य–उन्मुख शिक्षा पर ज़ोर देने की आवश्यकता है जो सांप्रदायिक भावनाओं को रोकने में महत्त्वपूर्ण साबित हो सकते हैं। मौजूदा आपराधिक न्याय प्रणाली में सुधार कर शीघ्र परीक्षणों और पीड़ितों को पर्याप्त मुआवज़ा प्रदान करने की व्यवस्था की जानी चाहिये। भारत सरकार द्वारा सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिये वैश्विक स्तर पर मलेशिया जैसे देशों में प्रचलित अभ्यासों का अनुसरण किया जा सकता है। सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिये मज़बूत कानून की आवश्यकता होती है। साथ ही देश के नागरिकों को ये समझने की आवश्कता है कि–

**'कब गीता ने ये कहा, बोली कहां कुरान।
करो धर्म के नाम पर, धरती लहूलुहान।।'**

डॉ. सत्यवान सौरभ,



सोचिये क्या हमारे देश के नायकों को बेशर्म इंस्टाग्राम प्रभावकों, राजनेताओं, अभिनेता और अभिनेत्री की तुलना में सम्मानित किया गया और पर्याप्त धन दिया गया? यह मत भूलो कि हमारे देश की रक्षा के लिए कारगिल युद्ध में भाग लेने वाला एक जवान उसी देश में अपनी पत्नी की रक्षा करने में सक्षम नहीं हो सका। इसके लिए देश को को जवाबदेह होना चाहिए? सबसे पहले हम अग्निवीर लाकर सशस्त्र बलों को नुकसान पहुंचाते हैं, जिसमें किसी भी चीज की कोई गारंटी नहीं है, आप कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि कोई देश के लिए मर जाएगा? जब आप सशस्त्र बलों में एक साधारण नौकरी की सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकते। वास्तव में आप इन शहीद परिवारों को श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो इस अभियान के दौरान आप सैनिक परिवारों और भविष्य के सैनिकों के मन की बात सुनकर एक योजना बनाइये और साथ ही देश की सभी महत्वपूर्ण और प्रमुख सड़कों का नाम हमारे बहादुरों के नाम पर रखा जाना चाहिए, हवाई अड्डों, स्कूलों, ट्रेनों के नाम भी।

मेरी माटी–मेरा देश, मन की बात या उपदेश

जैसे–जैसे स्वतंत्रता दिवस नजदीक आ रहा है, भारत भव्य समारोहों की तैयारी कर रहा है। देश 'मेरी माटी मेरा देश' नाम से एक अभियान शुरू करने के लिए तैयार हैं। भारत के शहीद बहादुरों के सम्मान में 'मेरी माटी मेरा देश' के तहत दिल्ली के नेशनल वॉर मेमोरियल के पास अमृत वाटिका (उद्यान) भी बनाई जाएगी। अमृत वाटिका के लिए देश के कोने–कोने से 7500 कलशों में मिट्टी और पौधे 'अमृत कलश यात्रा' के तहत दिल्ली पहुंचेंगे। इसके अलावा देश की लाखों ग्राम पंचायतों में विशेष शिलालेख भी लगाए जाएंगे। देश में बीते एक साल से आजादी का अमृत महोत्सव चल रहा है। इसी बहाने देशभर में 'मेरी माटी, मेरा देश' कार्यक्रम की शुरुआत भी की गई है। इस साल, यह कार्यक्रम 9 अगस्त से 15 अगस्त तक मनाया जाना है। देश के लिए ये गर्व की बात है। लेकिन क्या हमने इस कार्यक्रम के दौरान देश के सैनिकों की वास्तिक स्थिति का जायजा लेकर उनकी समस्याओं का निराकरण करने की योजना भी बनाई है?

सैनिक चाहे किसी भी देश के क्यों न हों, उनकी जिंदगी हमेशा कठिनाईयों से भरी होती है। सैनिक हमारे देश के प्रहरी होते है, जब तक वे सीमा पर तैनात हैं, तब तक हम भी चैन की सांस ले पाते हैं, अन्यथा हमारा जीवन भी कब का सम. ाप्त हो चुका होता। राष्ट्र की सुरक्षा, अखण्डता व एकता को बनाये रखने में भारतीय सशस्त्र सेनाओं का योगदान किसी से छुपा नहीं है। देश की रक्षा के लिये हमेशा तत्पर रहने वाले सैनिक अपने परिवार से दूर रहते है। देश की सबसे बड़ी ऑडिट एजेंसी, सीएजी ने अपनी रिपोर्ट में खुलासा किया है कि हमारे देश के सैनिकों को घटिया खाना परोसा जाता है। सीएजी के मुताबिक, सेना द्वारा खुद कराए गए सर्वे में इस बात का खुलासा हुआ है कि 68 प्रतिशत जवान उनकों परोसे जा रहे खाने को संतोषजनक या फिर निम्न–स्तर का मानते हैं।सीएजी रिपोर्ट में कहा गया है कि सैनिकों को निम्न–गुणवता का मांस और सब्जी खाने को दी जाती है। इसके अलावा, राशन की मात्रा भी कम दी जाती है और जो राशन दिया जाता है वो स्वाद अनुसार भी नहीं होता है।

हम हमारे सैनिकों की जीवन स्थितियों में सुधार क्यों नहीं करते? ये प्रश्न आज देश किसी एक व्यक्ति से नहीं हर हिंदुस्तानी से पूछ रहा है? क्या ये आंदोलन सिर्फ हमारे सैनिकों की वीरता और बलिदान का उपयोग करके एक और राजनीतिक नाटक तो नहीं हैं। क्या देश ने पुलवामा घटना पर पर्दा डाला है। हम मणिपुर के बारे में कुछ क्यों नहीं कहते, इससे बहुत दुख होता है, मेरे आंसू निकल आते हैं। अगर हम वास्तव में मेरी माटी मेरा देश को मन से चाहते है तो सबसे पहले हमारे सैनिकों को समलैंगिक अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की बकवास से अधिक प्राथमिकता दें, उनके साथ बुरा व्यवहार क्यों किया जाता है और कम वेतन क्यों दिया जाता है ? जो देश के लिए अपना जीवन बलिदान करने के लिए तैयार है उसे ऐसा करना चाहिए।

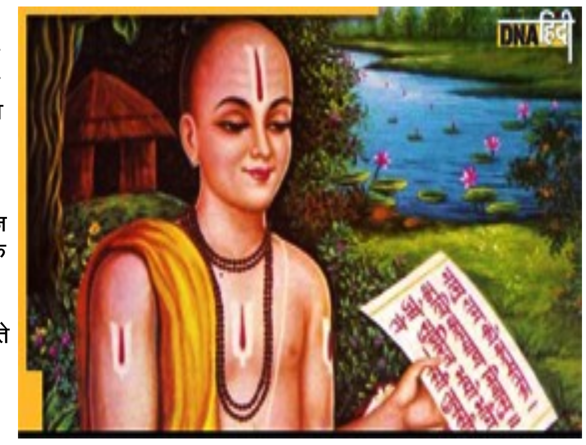
सोचिये क्या हमारे देश के नायकों को बेशर्म इंस्टाग्राम प्रभावकों, राजनेताओं, अभिनेता और अभिनेत्री की तुलना में सम्मानित किया गया और पर्याप्त धन दिया गया? यह मत भूलो कि हमारे देश की रक्षा के लिए कारगिल युद्ध में भाग लेने वाला एक जवान उसी देश में अपनी पत्नी की रक्षा करने में सक्षम नहीं हो सका। इसके लिए देश को को जवाबदेह होना चाहिए? सबसे पहले हम अग्निवीर लाकर सशस्त्र बलों को नुकसान पहुंचाते हैं, जिसमें किसी भी चीज की कोई गारंटी नहीं है, आप कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि कोई देश के लिए मर जाएगा? जब आप सशस्त्र बलों में एक साधारण नौकरी की सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकते। आज देश को आज़ादी के पुराने आंदोलन चलाने की बजाय वर्तमान समस्याओं से निजात पाने की जरूरत है और हम उलटे उन चीज़ों को एक अलग माहौल बनाकर दबाने की कोशिश में लगे है। ऐसा देश के हित में नहीं है। आप आंदोलन चलाइये, जो मर्ज़ी है कीजिये। मगर इन सबके साथ मूलभूत दुविधाओं को भी तो दूर कीजिये तभी आपका ये प्रयास सर्वोत्तम और सार्थक होगा।

जवानों की पेंशन में कटौती , हमारे नायकों के वेतन, लाभ और बजट में कटौती और फिर आप ऐसा प्रचार शुरू करते हैं। हमारे किसान के बच्चे सेना में जाते हैं, देश के राजनेताओं के नहीं। अग्निपथ योजना ला के वो भी खत्म कर दिया। ।।वास्तव में आप इन शहीद परिवारों को श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो तो इस अभियान के दौरान आप सैनिक परिवारों और भविष्य के सैनिकों की मन की बात सुनकर एक योजना बनाइये और और साथ ही देश की सभी महत्वपूर्ण और प्रमुख सड़कों का नाम हमारे बहादुरों के नाम पर रखा जाना चाहिए, हवाई अड्डों, स्कूलों, ट्रेनों के नाम भी। अगर आप देश के सच्चे नागरिक है तो कभी मत भूलिए–

सीमा पर जवान जब, जागे सारी रात।
सो पाते हम चैन से,
रह अपनों के साथ।।



प्रियंका सौरभ



गोस्वामी तुलसीदास का जन्म संवत् 1554 अर्थात् सन् 1497 ई. माना जाता है, परन्तु तुलसीदास के जन्म तिथि तथा जन्म स्थान के विषय में विद्वानों के विभिन्न मत हैं।

पत्नी की फटकार ने बना दिया साहित्य का अमर सितारा

गोस्वामी तुलसीदास का जन्म संवत् 1554 अर्थात् सन् 1497 ई. माना जाता है, परन्तु तुलसीदास के जन्म तिथि तथा जन्म स्थान के विषय में विद्वानों के विभिन्न मत हैं। डॉ. नगेन्द्र के हिन्दी साहित्य के इतिहास के अनुसार उनकी जन्म तिथि तथा जन्म स्थान निम्न हैं (1). जन्म तिथि– (अ) 1497 ई. , (ब) 1526 ई. , (स) 1532 ई.।

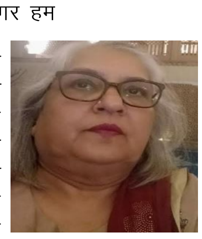
जन्म स्थान–(अ) राजापुर (बांदा), (ब) सोरों (एटा), (स) सूकर क्षेत्र (आजमगढ़)। तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम दुबे और माँ का नाम हुलसी था। ये सरयूपारीण ब्राह्मण थे। कह जाता है कि मूल नक्षत्र में जन्म होने के कारण इनके माता–पिता ने इनका परित्याग कर दिया था। इस कारण इनका बचपन बड़े कष्ट में व्यतीत हुआ। सौभाग्य से इनकी भेंट बाबा नरहरिदास से हो गयी।

इन्होंने ही इनका पालन–पोषण तथा शिक्षा–दीक्षा की अतः तुलसीदास ने इनको अपना गुरु मान लिया। बड़े होने पर तुलसीदास काशी चले गये। वहाँ शेष सनातन नामक विद्वान् से वेदों, शास्त्रों, पुराणों व दर्शन का गहन अध्ययन किया। अध्ययन समाप्त करके ये अपन जन्मभूमि राजापुर ग्राम लौट आये। अपने ग्राम में रहते हुए दीनबन्धु पाठक की सुन्दर कन्या रत्नावलि के साथ इनका विवाह हो गया। तुलसीदा ली गई। घर लौटने पर तुलसीदास ने जब अपनी पत्नी को नहीं पाया तो उसका वियोग सहन न कर सके और सीधे लगभग आधी रात के समय अपनी पत्नी के पास पहुंचे। पत्नी को उनका ये व्यवहार उचित नहीं लगा। उन्होंने तुलसी को फटकारा और कहा "लाज न आयी आपको दौरे आयेहु साथ" पत्नी की यह बात तुलसी के हृदय में ऐसी लगी कि उनका मन संसार से विमुख हो गया और वह संन्यासी होकर राम की भक्ति में लीन हो गये। उन्होंने संन्यास लेकर काशी, चित्रकूट और अयोध्या अदि तीर्थ स्थानों का भ्रमण किया। अब इनका जीवन तीर्थयात्रा, भजन, कीर्तन, सत्संग और राम कथा विवेचन में ही व्यतीत होता था। राम भक्ति और काव्य रचना में रत रहते हुए सन् 1623 ई. (सम्वत् 1680) में काशी के असी घाट पर तुलसीदास जी का स्वर्गवास हो गया। तुलसी भक्ति काल की सगुण काव्यधारा की रामाश्रयी शाखा के प्रमुख एवं प्रतिनिधि कवि हैं। इन्होंने रामचरितमानस, विनय पत्रिका जैसे लगभग 12 उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना करके हिन्दी साहित्य की जो अभिवृद्धि की है, वह अन्य किसी कवि ने नहीं की इनका 'रामचरित मानस' हिन्दी साहित्य का ही नहीं, अपितु, विश्व साहित्य का श्रेष्ठतम ग्रन्थ है।

इसी एकमात्र ग्रन्थ के आधार पर तुलसीदास की गणना, विश्व साहित्य की महान विभूतियों में की जा सकती है। अपनी अद्वितीय काव्य–प्रतिभा, समन्वयवादी भावना और लोकमंगलकारी साधना के कारण तुलसी हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते हैं। अतः तुलसी को हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जा सकता है।

तुलसी ने लगभग 12 ग्रन्थों की रचना की है। उनके प्रमुख ग्रन्थ इस प्रकार हैं कृ रामचरित मानस, विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, वैराग्य संदीपनी, रामलला नहछू आदि। इन ग्रन्थों में रामचरित मानस हिन्दी का ही नहीं अपितु विश्व का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। समूचे भारत मैं यह ग्रन्थ बड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

साहित्य के क्षेत्र में तो इसकी समता का अन्य कोई ग्रन्थ है ही नहीं। दूसरा श्रेष्ठ ग्रन्थ विनय पत्रिका है। इसमें तुलसी ने भगवान राम से अपने उद्धार के लिए विनय की है। इस प्रकार तुलसीदास हिन्दी साहित्य के अमर कवि माने गये हैं।



रिश्तों की धुंध

जब नियति को पता चला कि आज उसका पति कोई और स्त्री के साथ देखा गया हैं तो उसे बहुत बुरा लगा।थोड़ी चिंता भी हुई क्योंकि निवेश को कभी भी कोई लड़की के बारे में बात करते भी नहीं सुना था लेकिन आज वह अपनी सहेलियों से तीन से चार बार सुन चुकी थी,जिससे वह चिंतित हो गई थी।निवेश को पा कर नियति बहुत खुश थी क्योंकि जिंदगी में शायद पहला सुख उसे निवेश को पा कर ही मिला था।एक भयानक अकस्मात में मातादृ पिता के साथ भाई के घ ाायल होना और बाद में तीनों का दुनियां से एक साथ ही चल बसना उसके लिए बहुत ही बड़ा सदमा था ।पांच साल की उम्र में भी वह समझ रही थी कि बहुत ही दुखद हादसा हुआ हैं उसके साथ।ये जो खोया था ऊसने वह कभी भी पा नहीं पाएगी।सभी रिश्ते दार आए सभी धार्मिक क्रिया कर्म जो उसकी समझ से बाहर थी उसे उसी के हाथ से करवाई गई।और धीरे धीरे सभी अपने अपने घर चले गए और वह दादा दादी के साथ अकेली रह गई।दादा दादी खूब प्यार करते थे किंतु उम्र का तकाजा था कि उन्हे नियति की दैनिक जरूरतों को पूरा करने में तकलीफ होती थी। अपनी जिंदगी की कहानी उसकी आंखो के सामने से गुजर गए जब दादा जी की मृत्यु के रूप में एक और धक्का लगा दादी जो थोड़ी बहुत भी बेटे ,बहु और पोते की मृत्यु के बाद मजबूत दिखती थी ,बिखर के रह गई ,जब भी देखो पथराई आंखों से शून्य में ताकती रहती थी।और वह दादा जी के विरह में ज्यादा टिक नहीं पाई और एक रात सोई तो सुबह उठी ही नहीं।और सात साल की नियति के लिए एक और युग की शुरुआत हुई,वह था चाची युग। चाचा दृ चाची आए सारे धार्मिक क्रिया कर्म के पश्चात उसे ले के चले गए मुंबई।

छोटे छोटे दो कमरे वाला घर जिसमे चाचा चाची अपने दोनों लड़कों के साथ रहते थे।चाचाजी एक खानगी पीढ़ी में काम करते थे और अपनी सीमित आय में जो चार लोगों को पालते थे वहां अब पांच लोगो की जिम्मेवारी आ पड़ी।वह कोशिश करते थे कि अपनी भतीजी को खुश रखे लेकिन रहना तो उसे आलसी और नकचढ़ी चाची के साथ सारा दिन। दोनों चचेरे भाई को तो लड़ने और छोटे मोटे हुकम करने के लिए एक ि खलौना मिल गया। जब वो दोनों सोते रहते वह चाची को घर के सारे कामों में मदद करती और फिर स्कूल जाती थी ,कब छोटे छोटे काम से घर की सारी जिम्म. ेवारियां उसके सिर आ गई उसे खुद पता न चला। f०वी क्लास में आते आते वह सारी गृहस्थी का भार नियति की नियति बन के रह गया।

दसवीं की परीक्षा में कोई ज्यादा अच्छा नहीं कर पाई थी वह ,किंतु बारहवीं में जरूर अच्छा करने की ठान वह घर काम और अभ्यास के बीच पिसती रही।दिन में तो काम रहता था किन्तु रात रात भर जाग उसने बारहवीं में उसने अच्छे अंक प्राप्त किए और विज्ञान प्रवाह में दाखिला ले कॉलेज जाने लगी थी।

चाची जो अपने पुत्रों को महान मानती थी,उन्हे इंजीनियर बनाना चाहती थी वे दोनों बारहवीं में ही अटक गए और कई बार अनुतीर्ण हो छोटी मोटी खानगी नौकरी कर मामूली तनख्वाह पर काम करने लगे।चाची को अब ज्यादा तालीफें होने लगी, जब वह कॉलेज जाने लगी और उसके बच्चों को वह कॉलेज जाते नहीं देख पाई। और कॉलेज के दिनों में ही निवेश से हुई थी उसकी मुलाकात,नियति का पहला दिन था कॉलेज का और वांचनालय ढूंढ रही थी।थोड़ा इधर उधर भटकने के बाद भी नहीं ढूंढ पाई तो सामने खड़े निवेश से पूछ ही लिया।तो बड़ी ही तहजीब से उसे रास्ता बताया और अपना परिचय देते हुए बताया की वह विज्ञान के तीसरे साल में उसी कॉलेज में पढ़ रहा था, और हाथ हिला चला गया।

धीरे धीरे रोज ही सामना होता रहा दोनों का, निवेश के विनयपूर्वक किया गया वर्तन उसे अच्छा लगने लगा था,जब भी मिलता तो वह भीतर से खुश होती थी और कुछ महीने बाद वह समझ गई कि निवेश को वह पसंद करने लगी थी और एक दिन दोनों का सामना हुआ और इकरार भी हो गया तब निवेश ने भी कुबूल किया कि वह भी नियति को पसंद करता था।उसकी सादगी और सिधापन उसे बहुत पसंद आया था।जब तक नियति ने अपनी कॉलेज की पढ़ाई पूरी की निवेश अपना पोस्ट ग्रेजुएशन कर चुका था और एक बड़ी कंपनी में मैनेजर लग चुका था।

और एक दिन दोनों ने सदा के लिए एक होने के लिए विवाह बंधन में बंध जाने का निश्चय किया।निवेश आया चाचा चाची से मिला और बताया कि वह नियति को अपनी सहधर्मचारिणी बनाना चाहता था और दोनों विवाह बंधन में बंधना चाहते थे। चाचाजी तो खुश हुए किंतु चाची की नाराजगी की कोई सीमा नहीं थी।ये नाराजगी उस मां की थी जिसके बेटे न ही पढ़े और न ही आगे बढ़े और न ही उनके लिए कोई लड़की मिली कि उनका घर बस जाएं। लेकिन हो ही गया निवेश से नियति का विवाह,सादे तरीके से 10–15 लोग निवेश के परिवार वाले और उतने ही नियति की और से लोग आएं और हो गया विवाह कार्य संपन्न ।और विदा हो निवेश के घर पहुंची नियति अपने आप को खुश नसीब समझ रही थी।दो बेड रूम वाला सुंदर घर था जिसमे अपने माता पिता के साथ रहता था निवेश।निवेश के जैसा पति पा वह भी बहुत खुश थी।प्यार के साथ साथ जो परवाह करता था नियति की वह उसके लिए नई बात थी,हमेशा चाची के उलाहना सुनने वाली नियति आज बड़े मान और इज्जत से जीने लगी थी।सास ससुर का प्यार भी उसे बहुत ही भावुक बना देता था।घ ार के कामों में निष्णांत नियति रसोई में भी खूब निपूर्ण थी,रोज ही नए नए पकवान बना सास ससुर और पति को खुश रखना उसका जीवन का उद्देश्य बन गया था ऐसे में कब ५ साल बीत गए उन दोनों को पता ही नहीं चला।

जब दरवाजे की घंटी बजी तो वह चौक के वर्तमान में आई और मुंह पर हाथ फेरा तो आंखो से निकला अश्रु प्रवाह गले तक पहुंच चुका था,उसने बाथरूम में जा मुंह धोया और हाथ में तौलिया लिए ही मुंह पोंछते पूछते दरवाजा खोलने गई और देखा तो निवेश खड़ा था, हंसते हुए उसके सामने।वह भी हल्का सा मुस्कुराई और रसोई में चली गई।निवेश की मुस्कुराहट में उसे एक फरेब नजर आया किंतु कुछ भी बोले बिना ही उसे चाय का कप पकड़ाया और बाथरूम में चली गई,अब वह निवेश से कटी कटी रहने लगी थी।एक असुरक्षा की भावना से ग्रसित होने लगी थी।अगर जो सुना था वह सच हुआ तो कहां जायेगी वह,मुश्किल से चाची के तीखे वचनों और तानों और उलाहनो से छूट पाई थी,उसे याद कर सिहर सी गई थी। ऐसी ही बोझिल परिस्थितियों में दिन बीतते गए, निवेश भी उसकी बेरुखी से हैरान था किंतु स्वभाववश वह चुप हो सब देख रहा था,समझने की कोशिश कर रहा था और कुछ हैरान भी था।

अब नियति कुछ जासूसी करने की सोच उसके फोन और उस पर आए मैसेज को देखने लगी,जैसे ही नहाना जाता था वह तो नियति फोन ले पूरा देख लेती थी कि कहीं कुछ निर्देश मिले उसके संबध के ,लेकिन नहीं ढूंढ पाई कुछ तो उसके दफ्तर जाने की सोच एक दिन पहुंच ही गई।उसके केबिन में जा देखा तो वह अपने काम में व्यस्त था।अपने कार्यालय के सभी सभ्यों को मिलाया जिसमे कुमारी व्याख्या भी थी।सुंदर छरहरी काया ,सुंदर लंबे बाल और सौम्य आकर्षक चेहरा, सभी लड़कियों से अलग ही दिखती थी। किंतु वह ईर्षा वश उसकी सौम्य हसीं का ठीक से जवाब नही दे पाई।और अब उसके दिमाग में उसकी तस्वीर अपनी हरीफ के रूप में अंकित हो गई थी, हर वक्त निवेश को ले उसके साथ अजीब सी बातें सोचना ही उसकी दिनचर्या हो गई। कुछ दिन बाद ही निवेश ने उसकी हालत देख पूछ ही लिया कि क्या बात थी।वह कुछ न बोल सोने का ढोंग कर लेटी रही।

अब उसकी समस्या बढ़ने लगी और वह निवेश का पीछा करने लगी।जब भी निवेश के दफ्तर से निकलने का समय होता उससे वह उसके दफ्तर के पास आए छोटे से फूड ज्वाइंट में जा उस पर नजर रखने लग. ी।और जब निवेश घर पहुंचता उसके बाद घर आती।जब कभी देर से घर आता तो आशंकित हो सवाल पर सवाल करती रहती और उसके और व्या ख्या के दरम्यान रिश्ते को ख्याली रूप से साक्षात हो जाती और दुःख पाती रहती थी, जिसका उसके स्वास्थ्य पर भी असर दिखने लगा था।अब घरवाले भी उसके स्वास्थ्य की चिंता करने लगे और उसे डॉक्टरी जांच करवाने की सोच ने लगे किंतु वह तैयार नहीं थी।एकदीन निवेश ने जबरन डॉक्टर के पास ले गया, पूरी जांच के बाद भी कोई बीमारी या शारीरिक तकलीफ नहीं देख डॉक्टर ने बताया कि जरूर उसके मन में कुछ होगा। एक दिन जब फूड ज्वाइंट में बैठ निवेश की जासूसी कर रही थी कि निवेश और व्याख्या बाहर आए और एक टैक्सी में बैठ चले गए और अपनी शंका को सच पा कर उसे चक्कर आएं और वह कुर्सी से गिर पड़ी।सब इक्कठे हुए उसे पानी दिया और एक महिला बोली वह कहां रहती थी और उसे उसके घर पहुंचा गई। नियति की सास को उसका चक्कर खा गिरने वाली बात भी बताई और चली गई।

अब घर में सब चिंता करने लगे और जब नि. वेश घर आया तो वह भी चिंतित हो उठा।उसने नियति से साफ साफ बात करने की ठान ली और उसके स्वस्थ होने का इंतजार करने लगा।तीन दिन बीत गए और थोड़ी स्वस्थ लग रही पत्नी के पास जा बैठा और उसकी चिंता का कारण ही पूछ लिया तो वह फुट पड़ी और रोते रोते पूछ ही लिया कि व्याख्या से क्या रिश्ता था उसका, उसकी जासूसी के किस्से भी सुना दिए तो दुःख भरी हसीं के साथ बोला कि अच्छा होता वह ये पहले पूछ लेती। फिर बताया कि व्याख्या के साथ वह एक प्रोजेक्ट पर काम कर रहा था और काम के सिलसिले में दोनों कभी अभी अपने क्लाइंट से मिलने जाते थे और कुछ नही था उनके बीच।वह उसके अलावा किसी से भी कोई ऐसी भावना नहीं रखता था ,यह विश्वास दिलाया तो दोनों के रिश्ते की धुंध छट गई और दोनों के बुश के तनाव का अंत आ गया और नियति ने निवेश के कंधे पर सिर रख उसके मजबूर कंधो को अपना सहारा मान अपने को उसके प्यार के विश्वास का एहसास दिलाया।

जयश्री बिरमी

तुलसीदास ने बताया जीवन के गूढ़तम रहस्यों को



गोस्वामी तुलसीदास जी की जयंती श्रावण मास की सप्तमी तिथि को मनाया जाएगा। इस वर्ष तुलसी जयंती पर्व 4 अगस्त को मनाया जाएगा. इस वर्ष तुलसीदास जी की 523वीं जयंती मनाई जाएगी। उन्हें विश्व के श्रेष्ठम कवियों में गिना जाता है. भगवान श्री राम की भक्ति में लीन गोस्वामी तुलसीदस जी ने श्रीरामचरितम. ानस के साथ 12 महान ग्रंथों की रचना की. उनमें से मुख्य हनुमान चालीसा, कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका, जानकी मंगल और बरवै रामायण हैं, जिन्हें आज भी कई हिन्दू घरों में देखा जा सकता है। मान्यता है कि श्रीरामचरितमानस का पाठ करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है और सुख–समृद्धि आती है. आइए जानते हैं तुलसीदास जी के वह दोहे जिनमें छिपे हैं जीवन में सफल होने का रहस्य।

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान ।
तुलसी दया न छोड़िये जब तक घट में प्राण ।।

इस दोहे में तुलसीदास जी धर्म और अभिमान के बीच क्या अंतर है वह बता रहे हैं। अर्थात व्यक्ति में दया की भावना होने के कारण ही धर्म की उटपती होती है और जो व्यक्ति अभिमान का सहारा लेता है वह केवल पाप को जन्म देता है. इसलिए मनुष्य जब तक जीवित रहता है उसे कभी भी दया की भावना को त्यागना नहीं चाहिए।

तुलसी साथी विपत्ति के विद्या विनय विवेक ।
साहस सुकृति सुसत्यव्रत राम भरोसे एक ।।

तुलसीदास जी बताते हैं कि व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों में नहीं घबराना चाहिए. उसे ऐसी मुश्किल हालात में बुद्धिमानी से काम करना चाहिए. इस बीच अपने विवेक को न त्यागे. वह इसलिए क्योंकि इस मुश्किल समय में साहस और अच्छे कर्म से व्यक्ति सफलता प्राप्त कर लेता है. भगवान पर विश्वास रखें।

काम क्रोध मद लोभ की जौ लौं मन में खान ।
तौ लौं पण्डित मूरखौं तुलसी एक समान ।।

इस दोहे के माध्यम से तुलसीदास जी (ज्नसेपकें श्रप) बताते हैं कि जब तक व्यक्ति के भीतर कामवासना, लोभ, क्रोध और अहंकार की भावना जागृत होती है तब तक मूर्ख व्यक्ति और ज्ञानी में कोई अंतर नहीं होता है।

अस्थि चर्म मय देह यह, ता सों ऐसी प्रीति ।
नेक जो होती राम से, तो काहे भव–भीत ।।

इस चौपाई में तुलसीदास जी कह रहे हैं कि यह जो मेरा शरीर है वह चमड़े से बना हुआ है और यह नश्वर है। इसलिए अगर व्यक्ति इस चमड़े से मोह त्यागकर श्रीराम नाम के या भगवान के नाम में अपना ध्यान केंद्रित करे तो वह किसी भी भवसागर को पार कर लेगा।



श्रंखला की पहली पुस्तक 'बियॉन्ड बाओंड्रीजः ए स्टडी ऑफ सोशल इम्पैक्ट ऑफ मन की बात' गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान द्वारा किए गए शोध पर आधारित है, जो माननीय प्रधानमंत्री के रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' का आम जनमानस पर प्रभाव (विशेषतः सामाजिक चेतना, मौलिक कर्तव्य, महिला सशक्तिकरण, भारत की विदेश नीति) का विश्लेषण करती है।

मृदा चिकित्सा पर्यटन से पर्यटन विकास



भारत मेडिकल टूरिज्म में कई सकारात्मक तत्वों के कारण प्रगति कर रहा है। मेडिकल टूरिज्म में प्राकृतिक चिकित्सा का योगदान भी अब वृद्धि पर है जैसे केरल व उत्तराखंड। प्राकृतिक चिकित्सा पर्यटन विकास में में मृदा चिकित्सा या मड थेरेपी टूरिज्म का महत्वपूर्ण योगदान है। मृदा चिकित्सा पर्यटन के विकास हेतु कई बातों पर ध्यान देना होगा। वैकल्पिक पर्यटन अथवा प्राकृतिक चिकित्सा पर्यटन विकास में मृदा अथवा मड चिकित्सा सुविधा आवश्यक है। मृदा चिकित्सा में मिट्टी मुख्य माध्यम होता है। मृदा चिकित्सा से निम्न लाभ मिलते हैं –मिट्टी सूर्य की किरणों से रंग चुस्ती लाती है और शरीर को प्रदान करती है। गठिया व त्वचा सुधर हेतु मृदा चिकित्सा लाभकारी है मृदा स्नान से त्वचा में बसे सूक्ष्म जीवाणु निकल जाते हैं मृदा स्नान या मृदा लेप से त्वचा रंध्र खुल जाते हैं मृदा चिकित्सा में निम्न तरीके अपनाये जाते हैं। **मृदा लेप** –जिसमे मुंह या विशेष अंग पर औषधि मिश्रित या केवल मिट्टी लेप किया जाता है जैसे घाव भरने में घाव परचिकने मिटटी – चिपुड़ माटु लेप जाता है। **मृदा स्नान** –मृदा स्नान या मड बाथ में शरीर के वृहद भाग में मिट्टी लेप किया जाता है या मनुष्य मिट्टी में लगभग नहाता है **मृदा मालिश** –मृदा मालिश में गीली अथवा सूखी मिट्टी से मालिश की जाती है **मृदा में निद्रा**–गीली अथवा सूखी मिट्टी में सो जाना। तनाव समाप्ति , नदी शक्ति वृद्धि आदि हेतु मिट्टी आराम या लेटना की सलाह दी जाती है।

मिट्टी में चलना – मनुष्य को गीली मिट्टी अथवा सूखी या घास सहित मिटटी में नंगे पाँव चलाया जाता है जो किडनी , गुरुत्वाकर्षण शक्ति वृद्धि , नेत्रों की दृश्य याने बॉडी बैलेंस व कई इलाज हेतु प्रयोग होता है।

लाभ– त्वचा से फोड़े , पिम्पल्स समाप्तीकरण, त्वचा कांती वृद्धि , पेट पर गीली मिटटी लेप से आँतों की कई बीमारी जैसे कब्ज , उल्टी , उबकाई , पेचिस की बीमारियों में सुधार, मिट्टी अथवा मृदा चिकित्सा से नेत्र मांसपेशियों का खिचाव कम किया जाता है व दृश्य शक्ति वर्धन भी होता है बल, मृदा अथवा मिट्टी चिकित्सा त्वचा संबंधी जैसे त्वचा फटना , फंगल या बैक्ट्रियल रोग (कादें, यदि फटना , चरम रोग) आदि में लाभकारी होता है। त्वचा कांति वृद्धि, वृद्ध अवस्था कम करना या युवा पण लौटाने हेतु , घाव भरान बुखार , सिरदर्द रोकथाम आदि हेतु ,गठिया सुधार मृदा चिकित्सा अथवा मड थिरेपी के उपरोक्त लाभ सिद्ध करते हैं कि मृदा चिकित्सा विकास मेडिकल टूरिज्म विकास में सहायक भूमिका निभाएगा।

मृदा चिकित्सा को सामाजिक व प्रशासनिक सम्मान की आवश्यकता

भारत में अंग्रेजों से सीखने के कारण बहुत से लाभकारी पारम्परिक चिकित्साओं को अंधविश्वास नाम दे दिया जाता है। मड थेरेपी अथवा मृदा चिकित्सा के बारे में भी कई भ्रांतियां हैं। जबकि क्लिनिकल टेस्ट से सिद्ध हुए हैं कि मृदा चिकित्सा से कई लाभ मिलते हैं । तैनमनउंजवस प्दजमतदंजपवदंस जॉर्नल (2011) में ए फ्राइयलि आदि के रिसर्च पेपर का निर्णय है कि मड बाथ या मृदा स्नान घुटनों दर्द में सुधार है व रोगी को लाभ पंहुचता है। इन अन्वेषकों ने अन्य खोजपूर्ण लेखों में भी मड थिरैपी की वकालात की है। Rheumotology Volume 52 (अप्रैल 2013) में एल ई अंतुनेज आदि की खोज अनुसार मृदा चिकित्सा (मालिस , लेप आदि) से घुटने के जोड़ों के दर्द को मिटाने में सहायता मिलती है। अमेरिकी सरकारी नेटवर्क छपी फोंडा मॉगेरी व बाल्डी की खोज अनुसार मृदा चिकित्सा ब्व्च्क (क्रोनिक ऑब्स्ट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज) रोगी को लाभ मिलता है। द इजरायल मेडिकल असोसिएसन जॉर्नल की अप्रैल 2016 में निकोला ए पास्कारेली आदि की खोज सिद्ध करती है कि मृदा चिकित्सा (स्नान , लेप आदि) से घुटनों के जोड़ दर्द कम होने में सहायता मिलती है इंडियन जॉर्नल ऑफ ट्रेडीसनल नॉलेज (जुलाई 2012) में राजीव रस्तोगी ने कई अन्य खोजों के अध्ययन से निर्णय दिया कि मड थेरैपी (लेप व स्नान) से आधुनिक समय में भी न्यूरोपैथी संबंधी रोग निदान में अवश्य ही लाभ मिलता है न्यू जर्सी के डा हैरी शिक डी सी ने भी मड थिरैपी की वक. ालात की है और लिखा कि विशेषतः जोड़ों के दर्द निवारण हेतु गर्म मृदा (कीचड़) लेप जोड़ों के दर्द निवारण में लाभकारी होते हैं जॉर्नल ऑफ कंप्लीमेंट्री ऐंड इंटीग्रेटिव मेडिसिन्स (जुलाई 2018) में रेशमा जोगड़ांड आदि के पयोग से सिद्ध होता है कि मड थिरैपी आँख हेतु लाभकारी हो सकते हैं विशेषतः माइंडफुल अटेन्सन स्केल। आँखों में मड थेरैपी से प्रजर्वेटिव थिंकिंग क्वेसनरी में भी लाभकारी हो सकता है (मनोवैज्ञानिक खोज) डा ज्ञानदीप आदि की खोज (जॉर्नल ऑफ डेंटल ऐंड मेडिकल साइंस ,सितंबर 2016) से भी सिद्ध हुआ कि मड बात /मड थेरैपी कार्डियक टोन को मेंटेन तो करता ही है कई अन्य कार्डिक दुःख भी कम करने में सफल है। आजकल छात्रों में नेत्र दृष्टि क्षीणता रोग बहुत फ़ैल रहा है डा अम्ल इस चंद्रन आदि की खोज (इंटरनेसाँ जॉर्नल ऑफ़ रिसर्चेज इन आयुर्वेद फार्मा , मार्च 2018) से पता चलता है कि मृदा लेप ऐस्थेनोपिया रोग हेतु सस्ता व हानिरहित चिकित्सा सिद्ध हो सकतीअ है। अंता. नेला फिओरावंती आदि की खोज (इंटरनेशनल जॉर्नल ऑफ बायोमैटिरोल , स्वीकृत दिसंबर 2012 , 2013) भी बताती है कि मृदा चिकित्सा हाथ जोड़ों के दर्द निवारण हेतु लाभदायी चिकित्सा है। लुइस अंतुनेज आदि की खोज (त्मनउंजवसवहपं ब्सपदपबं मई जून 2013) ने भी मड थिरैपी घुटने के जोड़ दर्द हेतु लाभदायी पाया। ओरीना क्लान आदि की खोज (अमेरिकन कॉलेज ऑफ रहिमेटोलॉजी व अमेरिकी सरकार नेटवर्क , अक्टूबर 2016) सिद्ध करती है कि जोड़ों के दर्द निवारण हेतु मड थिरैपी सस्ती चिकित्सा भी है उपरोक्त संदर्भों के अतिरिक्त अन्य खोजों के अध्ययन से पता चलता है कि मृदा चिकित्सा जोड़ों के दर्द निवारण हेतु (विशेषतः पुराण दर्द) कामगर चिकित्सा है। मृदा चिकित्सा सस्ती चिकित्सा भी है।

मृदा चिकित्सा पर्यटन विकास हेतु महत्वपूर्ण कारक

मृदा चिकित्सा व मृदा चिकित्सा पर्यटन में कमजोरी का सबसे बड़ा कारण है आयुर्वेद व प्राकृतिक चिकित्साओं का जैसे उत्तराखंड के मुख्य शहर हरिद्वार , ऋषिकेश व देहरादून में सिमितना जबकि मृदा चिकित्सा ग्रामीण पर्यटन का मुख्य भाग है।

भीष्म कुकरेती

बौद्धिक विरासत परियोजनाओं के प्रथम चरण की पुस्तकों का हुआ विमोचन

नई दिल्ली। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की 'बैद्धिक विरासत' पहल के अंतर्गत, श्री धमेंद्र प्रधान, माननीय केंद्रीय शिक्षा एवं कैशल विकास और उद्यमिता मंत्री ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत द्वारा प्रकाशित पांच पुस्तकों के संग्रह का अनावरण गत 30 जुलाई को अखिल भारतीय शिक्षा संगमम 2023(प्रगति मैदान, नई दिल्ली) के मंच से किया। शिक्षा राज्य मंत्री, डॉ. सुभाष सरकार और श्री के. संजय मूर्ति, सचिव, उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार भी मंचासीन थे। इस अवसर पर शोध संस्थानों के प्रमुख – प्रोफेसर अभय करंदीकर निद. शक– आईआईटी कानपुर, प्रोफेसर बद्री नारायण निदेशक– जीबी पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, श्री वेदमणि तिवारी सीईओ – राष्ट्रीय कौशल विकास निगम, प्रोफेसर वी. कामकोटि निदेशक– आईआईटी मद्रास और श्री युवराज मलिक निदेशक– राष्ट्रीय पुस्कत न्यास भारत भी उपस्थित थे।

ये प्रकाशन आईआईटी कानपुर, राष्ट्रीय कौशल विकास निगम, राष्ट्रीय कौशल विकास निगम, राष्ट्रीय औद्योगिक इंजीनियरिंग संस्थान और गोबिंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान द्वारा पांच क्लस्टर विषयों पर किए गए अध्ययनों पर विस्तृत जानकारी प्रदान करते है।

श्रंखला की पहली पुस्तक 'बियॉन्ड बाओंड्रीजः ए स्टडी ऑफ सोशल इम्पैक्ट ऑफ मन की बात' गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान द्वारा किए गए शोध पर आधारित है, जो माननीय प्रध. ानमंत्री के रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' का आम जनमानस पर प्रभाव (विशेषतः सामाजिक चेतना, मौलिक कर्तव्य, महिला सशक्तिकरण, भारत की विदेश नीति) का विश्लेषण करती है। गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान ने श्रंखला की अगली पुस्तक 'पॉलिसीस फॉर डी पुअर एंड मार्जिनलसः ए स्टडी ऑफ गरीब कल्याण स्कीम्स इन इंडिया में गरीब कल्याण योजनाओं की विभिन्न नीतियों के गरीबों और सीमांत समुदाय पर प्रभाव का विश्लेषण किया है।

यह अध्ययन मुख्यतः प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना, जन धन योजना, स्वच्छ भारत मिशन और जल जीवन मिशन पर केंद्रित है। अगली पुस्तक रिन्यूएबल एनर्जी जनरेशनः ए स्टडी ऑफ ग्रीन एनर्जी एंड इट्स सस्टेनेबल यूज़ इन इंडिया है जो आइ. आइ. टी. कानपुर द्वारा किए गए शोध पर आधारित है। यह नवीनीकृत ऊर्जा स्त्रोतों के दोहन और जीवाश्म ईंधन पर अपनी निर्भरता को कम करने के प्रयास में भारत के सराहनीय प्रयासों का विश्लेषण करता है। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम द्वारा किए गए शोद पर आधारित 'डेवपमेंट, नॉलेज रिसोर्स एंड मेकिंग न्यू इंडियाः ए डायलॉग, डॉक्यूमेंटेशन एंड रिसर्च प्रोग्राम' , भारत सरकार द्वारा 2015 में शुरू की गई परिवर्तनकारी कौशल भारत योजना पर प्रकाश डालती है। '

नया भारतः ए स्टडी ऑफ़ इंफ्रास्टरक्चर, कम्युनिटी एंड डेवलपमेंट' नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग द्वारा छह महत्वपूर्ण विषयों पर किया गया एक अध्ययन है, जिससे भारत की आर्थिक वृद्धि को तेज गति से आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली योजनाओं–पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान, स्मार्ट सिटी, क्षेत्रीय कनेक्टिवियी योजना (आरसीएस) – उडान, इकनो. मिक कॉरिडोर डेवलपमेंट और प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना का विश्लेषण किया गया है। पुस्तकों का यह उल्लेखनीय संग्रह भारत की बौद्धिक विरासत को सहेजने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है और राष्ट्र को प्रगति और समृद्धि की राह पर आगे बढ़ाने में सहयोगी सिद्ध होगा।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत ने अखिल भारतीय शिक्षा संगमम 2023 के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप विकसित पुस्तकों तथा योजनाओं को प्रदर्शित किया। सैंकड़ों विद्यार्थियों, शिक्षकों और शिक्षाविदों ने इस प्रदर्शनी का लाभ उठाया जहां शिक्षकों हेतु भारतीय भाषाओं में सुलभ तरीके से प्रयोगात्मक शिक्षण सम्बन्धी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया।

प्रधानमंत्री ने, रिकार्ड पौधे लगाने की सराहना की

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को अपने मन की बात कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा राज्य में 30 करोड़ से अधिक पौधे लगाये जाने का जिक्र करते हुए इसे जनभागीदारी और जन जागरण का बड़ा उदाहरण बताया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में बीते 22 जुलाई को उत्तर प्रदेश में रिकॉर्ड 30.21 करोड़ पौधरोपण किया गया। योगी आदित्यनाथ ने यहां अपने सरकारी आवास पर मोदी के मन की बात कार्यक्रम को सुना। प्रधानमंत्री ने कहा , ''राज्य में एक दिन में 30 करोड़ पौधे लगाने का रिकॉर्ड बनाया गया है। इस अभियान की शुरुआत राज्य सरकार ने की और उसे वहां के लोगों ने पूरा किया। हम सभी को पौधे लगाने और पानी बचाने के प्रयासों का हिस्सा बनना चाहिए।'' प्रधानमंत्री की ओर से पौधरोपण अभियान की प्रशंसा किये जाने के बाद मुख्यमंत्री ने आभार प्रकट किया। उन्होंनेट्विटर पर लिखा , '' प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से यहां पौधरोपण जन–आंदोलन का रूप ले चुका है। हम सभी हरित उत्तर प्रदेश के निर्माण हेतु भरपूर प्रयास कर रहे हैं। उसी क्रम में 77 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भी पांच करोड़ पौधरोपण के लिए संकल्पित हैं। '' आधिकारिक बयान के अनुसार इस वर्ष राज्य सरकार का लक्ष्य 35 करोड़ पौधे रोपने का है। इसमें से 30.21 करोड़ पौधे 22 जुलाई को रोपे गये हैं तथा 15 अगस्त को पांच करोड़ पौधे रोपे जाएंगे। खास बात ये है कि राज्य के सबसे शुष्क क्षेत्र बुंदेलखंड के सात जिलों में तकरीबन पांच करोड़ पौधे रोपे गये हैं। प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' कार्यक्रम में लोगों में बढ़े तीर्थाटन के भाव को भी सराहा। उन्होंने विशेष रूप से अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी का उल्लेख करते हुए कहा कि आज काशी में एक साल में 10 करोड़ लोग काशी विश्वनाथ के दर्शन के लिए आ रहे हैं, इसके अलावा मथुरा, अयोध्या में भी तीर्थयात्रियों की संख्या बढ़ी है। उन्होंने कहा कि इससे लाखों गरीब लोगों के लिए रोजगार के नये अवसर उपलब्ध हुए हैं।





राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के तत्वावधान में गत रविवार को झालाना स्थित अकादमी संकुल परिसर में काव्य महागोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न कवियों एवं साहित्यकारों ने ब्रजभाषा की रचनाओं पर आधारित काव्य पाठ किया। कार्यक्रम का शुभारंभ वरिष्ठ गीतकार श्री वरुण चतुर्वेदी द्वारा ब्रज वंदना से किया गया। इस अवसर पर ब्रजभाषा के वरिष्ठ साहित्यकार बी.के गौड़, विट्ठल पारीक, गोपीनाथ गोपेश, हरिश्चंद्र हरी कि 'परिचौ पोथी' का भी विमोचन किया गया। अकादमी के सचिव श्री गोपाल लाल गुप्ता ने अकादमी द्वारा किये गए कार्यो का उल्लेख किया। ।सेव त्मंक – नर्सेज कर्मियों ने मुख्यमंत्री को 11 सूत्री मांग पत्र सौंपा कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान लघु उद्योग निगम के अध्यक्ष श्री राजीव अरोड़ा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान राज्य मेला प्राधिकरण के उपाध्यक्ष श्री रमेश बोराणा ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी की अध्यक्ष श्रीमती बिनाका जैश मालू तथा विशेषाधिकारी (मुख्यमंत्री) श्री फारूक अफरीदी उपथित थे। इस अवसर पर राज्य भर के ब्रजभाषा के प्रमुख कवि एवं साहित्यकार भी उपस्थित रहे।

नया अध्याय

प्रार्थना हो गयी थी। कक्षाएँ लग चुकी थी। सुमन, श्यामा और श्रुति सकपकाते हुए अपनी कक्षा की ओर बढ़ रही थीं; तभी उन पर प्रधानाध्यापक कुशल ठाकुर जी की नजर पड़ी। अपने पास बुलाये। देर से आने का कारण पूछा। तीनों लड़कियों ने ठाकुर जी को पूरी बात बतायी। फिर ठाकुर जी ने कक्षाध्यपिका आरती जी को बुलवाया। आरती जी को भी माजरा समझ आ गया। उन्होंने स्कूल में रखे अतिरिक्त स्कूल युनीफॉर्म्स में से एक युनीफॉर्म निकाल कर सुमन को दिया।

"माँ...! बाबूजी बाजार जाएँगे तो अंग्रेजी की पुस्तक और गणित के लिए एक मोटी कॉपी ले आएँगे। बोल देना। मैंने अपना सवाल रफ कॉपी में हल कर लिया है। शाम को स्कूल से आने के बाद गणित कॉपी में फिर हल करूँगी। अभी मैं श्यामा के घर जा रही हूँ। उधर से ही स्कूल जाऊँगी।" कक्षा छठवी की सुमन अपनी माँ आशा को बताते हुए स्कूल के लिए घर से निकली।

"हाँ... ठीक है बिटिया ! बोल दूँगी तुम्हारे बाबूजी को। पर अभी स्कूल जल्दी जाओ। समय हो रहा है।" आशा किचन में व्यस्त थी; फिर भी खिड़की से झाँकते हुए बोली।

सुमन, श्यामा और श्रुति स्कूल जा रही थीं। तीनों सहेलियाँ अपने गृहकार्य सम्बंधित बातें बतिया रही थीं। चूँकि स्कूल गाँव से थोड़ा बाहर था। समय भी हो रहा था। इसलिए वे थोड़ी तेजी से चल रही थीं। सड़क की हालत भी खराब थी। सड़क के दोनों किनारे छोटे–छोटे गड्ढे हो गये थे। बारिश की वजह से गड्ढों में पानी भरे हुए थे। बस वे स्कूल पहुँचने ही वाले थे ; तभी तेजी से एक कार आयी। उसमें तीन–चार मनचले युवक बैठे थे। स्कूल जाती लड़कियों पर उनका ध्यान नहीं रहा। कार सर्र... से निकल गयी। कीचड़युक्त पानी लड़कियों पर छिटक गये। श्रुति और श्यामा के कपड़ों पर तो न के बराबर कीचड़ लगे। लेकिन सुमन के न सिर्फ सर व चेहरे पर कीचड़ लगे, बल्कि उसकी स्कूल युनीफॉर्म पूरी तरह खराब हो गयी। उसे कारवालों पर बहुत गुस्सा आया।युनीफॉर्म देख उसे रोना भी आ रहा था। श्यामा और श्रुति को भी अच्छा नहीं लगा। तीनों एकदम चुप हो गयीं। फिर सुमन की रोनीसूरत देख श्यामा बोली– "तेरी ड्रेस तो बिल्कुल खराब हो गयी सुमन। मत चल बहन स्कूल आज। पहले अपनी ड्रेस बदल कर आ जाओ घर से।"

"हाँ सुमन। श्यामा सही कह रही है। थोड़ी देर हो भी जाएगी, तो कोई बात नहीं।" श्रुति ने सुमन के चेहरे को रूमाल से साफ किया और उसके बैग को झाड़ने लगी। तभी श्यामा अपनी बैग से कागज के कुछ टुकड़े निकाल कर सुमन के बाल साफ करने लगी। श्रुति की ओर इशारा करते हुए बोली– "यदि तुम चाहती हो तो हम दोनों यहीं पर घर से आते तक तुम्हारा इंतजार कर लेते हैं। लेकिन जाओ बहन घर। तुम्हारी ड्रेस खराब हो चुकी है।"

थोड़ी देर बाद सुमन सिसकते हुए बोली– "श्यामा ! मेरे पास तो एक ही स्कूल ड्रेस है। दूसरी युनीफॉर्म तो पंद्रह अगस्त तक सिलवा पाएँगे।"

"तो फिर आज मत चल स्कूल। हम लोग आरती मैडम जी को बता देंगे पूरी बात। जा घर। मत आना।" श्यामा ने सुमन के बैग को उसके पीठ पर लटकाया।

"आज जो भी होमवर्क मिलेगा; तुम्हें बता देंगे। ठीक रहेगा ?" श्रुति बोली।

"नहीं श्यामा ! मैं स्कूल जाऊँगी श्रुति। स्कूल जाकर हाथ–पैर और चेहरा धो लूँगी। ड्रेस को पोंछ कर साफ कर लेती हूँ। कुछ टाइम के बाद ये सुख जाएँगे।" अपनी बैग सम्भालते हुए सुमन बोली।

"आज बस स्कूल नहीं जाओगी तो क्या बिगड़ जाएगा ?" श्यामा बोली। सुमन ने उन दोनों की बातों पर ध्यान नहीं दिया। वह घर वापस गयी ही नहीं। फिर तीनों बातें करते–करते स्कूल पहुँच गयीं।

प्रार्थना हो गयी थी। कक्षाएँ लग चुकी थी। सुमन, श्यामा और श्रुति सकपकाते हुए अपनी कक्षा की ओर बढ़ रही थीं; तभी उन पर प्रधानाध्यापक कुशल ठाकुर जी की नजर पड़ी। अपने पास बुलाये। देर से आने का कारण पूछा। तीनों लड़कियों ने ठाकुर जी को पूरी बात बतायी। फिर ठाकुर जी ने कक्षाध्यपिका आरती जी को बुलवाया। आरती जी को भी माजरा समझ आ गया। उन्होंने स्कूल में रखे अतिरिक्त स्कूल युनीफॉर्म्स में से एक युनीफॉर्म निकाल कर सुमन को दिया।

तत्पश्चात सुमन कक्षा में आकर श्यामा और श्रुति के पास बैठी। अध्यापन प्रारम्भ करने से पहले आरती जी ने कहा– "ड्रेस पर कीचड़ हो गया तो घर जाकर बदल कर आना था; या फिर आज स्कूल ही नहीं आना था। फिर सुमन बोली– "मैडम जी, मेरे पास एक ही स्कूल ड्रेस है। बाबूजी पंद्रह अगस्त के पहले खरीदेंगे।"

"ठीक है..." कहते आरती जी बोली– "आज मेरी बात ध्यान से सुनो। सड़क किनारे हमेशा बायीं तरफ ही अपने आगे–पीछे देख कर चला करो। चलते–चलते फिजूल की बातें मत किया करो। गाड़ी–मोटर की आवाज सुनते ही अपने साइड पर खड़े होकर उन्हें जाने दिया करो। ये बात सिर्फ सुमन के लिए ही नहीं है। ये सबके लिए है।" "जी मैडमजी...! कहते हुए बच्चे आरती जी की बातें बड़े से सुन रहे थे।" आरती जी ने अपनी बातें जारी रखी– "जैसे कि अभी बरसात का मौसम है, इसलिए पानी भरे गड्ढों पर विशेष ध्यान दिया करो। जैसे ही कोई दुपहिया या चारपहिया गाड़ी दिखती है, तो तुरंत उनसे दूर होकर उन्हें पहले जाने दिया करो। हाँ, सुमन तुम कुछ कहना चाहती हो ?" "जी मैडमजी।" सुमन कहने लगी– "मैं अपनी स्कूल युनीफॉर्म कीचड़ से सनने के बावजूद स्कूल आयी क्योंकि आपने गृहकार्य पूरा करके आने के लिए कहा था। मैंने अपना गृहकार्य पूरा कर लिया है। भूगोल के उन सभी प्रश्नों का उत्तर याद भी कर लिया है, जिन्हें आपने याद करके आने के लिए कहा था। कंठस्थ कर लिया है मैंने मैडमजी। चाहे तो आप पूछ सकती हैं। आज आप नया अध्याय "सौरमंडल" समझाने वाली भी हैं न। नया अध्याय को मैं समझना चाहती हूँ मैडमजी। नया अध्याय न छुट जाए सोचकर वापस घर नहीं गयी; और मैं स्कूल आ गयी मैडमजी।" पूरी कक्षा ने सुमन की अविरल बातें सुनी।

"यह तो बहुत अच्छी बात है। मानना पड़ेगा सुमन तुम्हें।" कक्षाध्यापिका आरती जी ने मुस्कुराते हुए सुमन की पीठ थपथपाई– " अपनी पढ़ाई के प्रति सुमन का रूझान काबिले–तारीफ है। यह सब पूरी कक्षा के लिए एक नई सीख है। सचमुच आज सुमन तुम सब के लिए एक नया अध्याय है।" सुमन पर पूरी कक्षा की एकटक नजर थी।



टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

'डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम : मेमोरीज नेवर डाई पुस्तक का विमोचन



तमिलनाडु। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने आज रामेश्वरम में 'डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम : मेमोरीज नेवर डाई पुस्तक का विमोचन किया। इसके पूर्व गृह मंत्री ने डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम हाउस, मिशन ऑफ लाइफ़ गेलरी म्यूज़ियम और डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम नेशनल मेमोरियल का दौरा किया। साथ ही वे विवेकानंद मेमोरियल भी गए। पुस्तक के विमोचन के अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. एल मुरुगन सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

इस अवसर पर अपने संबोधन में अमित शाह ने कहा कि ''डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम : मेमोरीज नेवद डाई पुस्तक के विमोचन से देशभर के लोगों को निश्चित रूप से डॉ. कलाम को जानने, समझने व उनका अनुसरण करने का मौका मिलेगा। इस पुस्तक में भारतीय रॉकेटरी,साइंस, टेक्नोलॉजी और इना.वेशन का इतिहास, भारतीय राजनीति तथा प्रशासनिक प्रणाली का सुंदर निरूपण और डॉ. कलाम की इच्छाओं और उनकी कल्पनाओं से जुड़ी हुए कई घटनाओं का वर्णन समाहित है। इस पुस्तक में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी से जुड़ी हुई घटनाओं का संपूर्ण वर्णन है।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि यह पुस्तक रामेश्वरम के गरीब घर में पैदा हुए एक सामान्य बच्चे की भारतीय राजनीति के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने की राह में उनके संघर्ष को समझने में बहुत मददगार साबित होगी। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक डॉक्टर कलाम जी का साहित्य और कला के प्रति प्रेम, तिरूकुरल और भर्थियार की कविताओं के बारे में उनके उद्गार और डॉ. कलाम के जीवन के अनजान पहलुओं को पाठकों के सामने रखती है। शाह ने कहा कि डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम एक महान टीम प्लेयर थे। उन्होंने मैनेजमेंट के सिद्धांत को अपने जीवन में चरितार्थ करने का काम किया।

अमित शाह ने कहा कि पुस्तक में ब्रह्मोस प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक और सीईओ डॉ शिवाथनु पिल्लई के एक अनुभव का वर्णन किया गया है।

शाह ने कहा कि इसी प्रकार अग्नि मिसाइल के पहले लांच को कुछ दिक्कतों के चलते जब दो–तीन बार स्थगित करना पड़ा तब भी पूरी टीम में निराशा छा गयी। मगर डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम जी ने उनका उत्साहवर्धन किया और मिसाइल लॉन्चिंग के स्थान पर डेढ़ महीने तक रुक कर रात–रात भर काम किया। बाद में सफल लॉन्चिंग के बाद अग्नि मिसाइल समग्र विश्व में भारत की मिसाइल ताकत की एक परिचायक बन गयी। उन्होंने कहा कि डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम के नेतृत्व में देश में पांच मिसाइलों को लेकर बड़ा काम हुआ। पृथ्वी, अग्नि, आकाश, नाग और त्रिशूल मिसाइल के नाम से पता चलता है कि डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम प्रकृति और अध्यात्म से जुड़े थे। उन्होंने कहा कि एक वैज्ञानिक तभी विश्व के कल्याण का काम कर सकता है जब उसकी आत्मा विज्ञान के साथ–साथ अध्यात्म से भी जुड़ी हो।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने महान राष्ट्रभक्त, वैज्ञानिक तथा पीपल्स प्रेसिडेंट डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि 1995 में अब्दुल कलाम जी देश के जाने–माने वैज्ञानिक बन चुके थे और 1997 में उनको भारत रत्न से सम्मानित किया गया। उन्होंने डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम जी की सादगी का उदाहरण देते हुए कहा कि जब डॉ. कलाम भारत रत्न लेने के लिए राष्ट्रपति भवन पहुंचे, तब बहुत नर्वस थे क्योंकि सूट और टाई में वे सहज महसूस नहीं करते थे।

अमित शाह ने कहा कि एक ही साल में रॉकेट और अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत को कई सफलता दिलाने वाले महान वैज्ञानिक डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम ने वर्ष 1998 में देश के भविष्य के लिए अपना विज़न रखने का काम किया। उन्होंने कहा कि इंडिया 2020ः ए विज़न फ़ॉर द न्यू मिलेनियम (प्दकपं 2020ः । टपेपवद वित जीम छमू डपससमददपनउ) पुस्तक में डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम जी ने भारत के भविष्य और विकास के रोड मैप को रेखांकित किया। शाह ने कहा कि इस पुस्तक में कलाम जी ने तीन मुख्य बातें देश के युवाओं के सामने रखी, पहली दृ भारत को एक राष्ट्र के रूप में अपनी क्षमताओं को पहचान कर उसे उजागर कर भारत का विकास करना होगा। दूसरी– टेक्नोलॉजी आधारित अर्थव्यवस्था को विकसित करना होगा। तीसरी– बैलेंस ग्रोथ मॉडल अपनाकर गाँव और शहर, एग्रीकल्चर और इंडस्ट्री दोनों के बीच में संतुलन बनाकर विकास को आगे बढ़ाना होगा। उन्होंने कहा कि भारत आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में इन तीनों बातों को साकार कर एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ा है।

स्कूलों में स्मार्ट फ़ोन के प्रयोग पर पाबन्दी की पुकार



फायदों के बावजूद स्मार्टफोन जैसी डिजिटल तकनीकों का बढ़ता दुरूपयोग बच्चों को शिक्षा से दूर ले जा रहा है। किसी नशे की तरह बच्चे इसकी लत का शिकार बनते जा रहे हैं। ऐसा कहा जाता है कि स्कूलों में स्मार्टफोन पर प्रतिबंध लगाने से क्लास में अनुशासन बना रहेगा और बच्चों को ऑनलाइन डिस्टर्ब होने से बचाया जा सकेगा। यूनेस्को की रिपोर्ट में कहा गया है कि इस इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल एक टूल की तरह ही किया जाए। लेकिन इसके साथ ही यह भी कहा गया कि पारंपरिक शिक्षण विधियों को पीछे न किया जाए।शोध के अनुसार, 10 में से केवल एक माता–पिता सोचते हैं कि कक्षा में फोन का उपयोग किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, संयुक्त राष्ट्र ने स्कूलों में स्मार्टफोन रखने के खतरों के बारे में चेतावनी दी है।

इन दिनों कई गतिविधियाँ ऑनलाइन आयोजित की जा रही हैं क्योंकि यह बहुत सुविधाजनक है। इसमें शिक्षा भी शामिल है। इसी कारण से छात्रों के लिए मा.बाइल फोन उनकी शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। जो बातें पहले व्यक्तिगत कक्षाओं के दौरान कक्षा में बताई जाती थीं, उन्हें फ़ोन पर पाठ के माध्यम से आसानी से व्यक्त किया जा सकता है। जैसा कि कहा गया है, यह बहस बनी हुई है कि क्या मोबाइल फोन छात्रों के लिए अच्छा है या बुरा, क्योंकि मोबाइल फोन सिर्फ शैक्षिक उद्देश्यों के लिए नहीं है, बल्कि एक मा.बाइल फोन एक छात्र के लिए इंटरनेट की विशाल दुनिया की खिड़की है, जो अक्सर उनकी पढ़ाई से छात्र का ध्यान भटका सकता है। यदि आप एक माता–पिता हैं और अपने बच्चे के लिए स्कूल में प्रवेश के बारे में सोच रहे हैं, तो यह आपके ध्यान देने योग्य हो सकता है। हर चीज़ के अपने फायदे और नुकसान होते हैं। स्मार्टफोन का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए, बच्चों को घर और स्कूल दोनों जगह शिक्षा और माग.दर्शन की आवश्यकता होती है। जब उनका उपयोग करना ठीक न हो और ऐसा हो तो वयस्कों को आदर्श बनना चाहिए, और उन्हें सुरक्षित, जिम्मेदार और उचित उपयोग के आसपास सीमाओं को लागू करने की आवश्यकता होगी। कोविड–19 महामारी का एक बड़ा साइड इफेक्ट यही रहा है कि उसकी वजह से दुनिया के कई स्कूली बच्चों को स्मार्टफोन का उपयोग करना पड़ा। अब इसकी आदत गंभीर रूप लेने लगी है। इंटरनेट स्पष्ट चीज़ों से भरा पड़ा है, जिसमें आपत्ति. जनक से लेकर रक्तरंजित सामग्री तक शामिल है। जबकि कुछ फोन को पैरेंटल लॉक से बाहरी रूप से नियंत्रित किया जा सकता है, कई फोन में यह सुविधा नहीं होती है, और छात्र आसानी से ऐसी चीजों तक पहुंच सकते हैं। बच्चे जिज्ञासु प्राणी होते हैं, और उनके लिए उन चीज़ों का पीछा करना स्वाभाविक है जो उन्होंने पहले नहीं देखी हैं। ज्यादातर मामलों में, बच्चे उस छोटी सी उम्र में वो चीजें देख लेते हैं जो उन्हें नहीं मिलनी चाहिए।

बच्चों के लिए मोबाइल फोन का सबसे आम नुकसान यह है कि उन्हें फोन की लत लग जाती है। हमें यह याद रखना होगा कि स्कूली छात्र आख़रिकार बच्चे ही होते हैं और वे लगभग हमेशा पढ़ाई और पाठ्येतर गतिविधियों को लेकर तनावग्रस्त रहते हैं। यही कारण है कि जब उनके हाथ में कोई फोन आता है तो वे उसमें डूब जाते हैं। यह आदत कभी–कभी इतनी खराब हो जाती है कि छात्र जल्द से जल्द अपने फोन पर वापस जाने के लिए पढ़ाई को नजरअंदाज करने लगते हैं। कोविड महामारी के दौरान करोड़ों लोगों में स्मार्टफोन की लत बढ़ी और इसलिए अब इसके नुकसान की चर्चाएं भी खूब हो रही हैं।

मोबाइल फोन का ज्यादा उपयोग छात्रों की सीखने नहीं देगा और यह उनकी क्रिएटिविटी को भी एक हद तक मारने का काम करता है। यह शिक्षकों के साथ छात्रों के के मानवीय संपर्क को भी कम कर देता है। जैसे–जैसे शिक्षा तेजी से ऑनलाइन हो रही है, जहां छात्रों के लिए मोबाइल फोन का उपयोग करने के कई फायदे हैं, वहीं इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। छात्र अक्सर उन गतिविधियों के लिए अपने मोबाइल फोन पर निर्भर रहना शुरू कर देते हैं जिन्हें वे स्वयं अच्छी तरह से कर सकते थे। इसमें बुनियादी गणना जैसे सरल कार्य शामिल हैं, क्योंकि वे फ़ोन के कैल.कुलेटर ऐप का उपयोग कर सकते हैं। या, कभी–कभी, उन्हें किसी प्रश्नोत्तरी का उत्तर याद नहीं होता है जो उन्हें इसे ऑनलाइन देखने के लिए प्रेरित करता है जिसका अध्ययन किया जाना चाहिए और याद किया जाना चाहिए। प्रभावी शिक्षण के लिए छात्रों और शिक्षकों के बीच सामाजिक संपर्क जरूरी है और इसे नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

इस बात का गंभीरता और सावधानी से अवलोकन करें कि तकनीक का स्कूलों में उपयोग कैसे हो रहा है। स्कूलों में मानव केंद्रित दृष्टिकोण की जरूरत है जहां डिजिटल तकनीक एक उपकरण के तौर पर काम करे ना कि हावी ही हो जाए। अगर हम उस समय को देखें जब मोबाइल फोन अभी भी हमारी रोजमर्रा की जरूरतों से इतनी गहराई से नहीं जुड़े थे, तो हम देखेंगे कि छात्र अपनी पढ़ाई से ब्रेक लेने के लिए कई शारीरिक गतिविधियों का इस्तेमाल करते थे। हालाँकि, इन दिनों, 8 में से 4 छात्रों के घर के अंदर रहने और समय बर्बाद करने के लिए अपने फोन का उपयोग करने की अधिक संभावना है। मोबाइल फोन अनिवार्य रूप से पूरी दुनिया को एक हाथ की हथेली में लाता है, और इस प्रकार बच्चे खेल या किसी भी सामाजिक गतिविधियों में शामिल होने के बजाय अपने मोबाइल फोन स्क्रीन से अधिक चिपके रहते हैं। बच्चों को तकनीक के साथ और उसके बिना दोनों तरह से, प्रचुर सूचना में क्यों उपयोगी है और किसे नजरअंदाज करना है, सिखाना होगा। प्रौद्योगिकी कभी भी शिक्षकों का स्थान न ले, बल्कि प्रौद्योगिकी को एक सहायक उपकरण के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए, जो सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के साझा उद्देश्य को हासिल करने में मददगार हो।

डॉ. सत्यवान सौरभ,



गत शुक्रवार को मामले को सूचीबद्ध करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने राज्य और पुलिस अधिकारियों को संवेदनशील क्षेत्रों में पर्याप्त बल तैनात करने, घटना की वीडियोग्राफी करने और घटना के सीसीटीवी फुटेज के अलावा इसे संरक्षित करने का निर्देश दिया।



कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि हरियाणा में दंगे हो रहे हैं औक सरकार संज्ञान नहीं ले रही है। नेशनल कॉन्फ्रेंस (एन.सी.) अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि नूंह में जो कुछ हुआ वह दिल दहला देने वाला है। धर्म को लेकर लड़ना भारत के लिए अच्छा नहीं है।



विपक्ष ने सरकार पर लगाया प्रशासनिक विफलता का आरोप



सुनिश्चित करें न हो भड़काऊ बयानबाजी,

मेवात हिंसा पर सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी, रैली–प्रदर्शन पर रोक से इनकार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट नूंह हिंसा पर दिल्ली–एनसीआर में वीएचपी के विरोध प्रदर्शन को रोकने के लिए नफरत फैलाने वाले भाषणों के मामले में एक याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि सरकार ये सुनिश्चित करे की हेट स्पीच न हो। इसके साथ ही कोर्ट ने किसी भी तरह के प्रदर्शन और रैली पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। नूंह जिले में हिंसा भड़काने वाले नफरत भरे भाषणों से संबंधित एक याचिका पर न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और एसवीएन भट्टी की पीठ ने यूपी, दिल्ली और हरियाणा सरकार को नोटिस जारी किया है। मामले पर शुक्रवार को फिर सुनवाई होगी।



शुक्रवार को मामले को सूचीबद्ध करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने राज्य और पुलिस अधिकारियों को संवेदनशील क्षेत्रों में पर्याप्त बल तैनात करने, घटना की वीडियोग्राफी करने और घटना के सीसीटीवी फुटेज के अलावा इसे संरक्षित करने का निर्देश दिया। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र और हरियाणा, यूपी और दिल्ली राज्यों सहित पुलिस मशीनरी को निर्देश दिया कि वे नूंह हिंसा के जवाब में राजधानी में विरोध रैलियों के दौरान कोई नफरत फैलाने वाला भाषण या हिंसा न हो, यह सुनिश्चित करने के लिए निवारक कदम उठाएं।

सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट किए जाने के बाद वीएचपी के जुलूस पर हमला होने के बाद नूंह जिले में सोमवार शाम सांप्रदायिक झड़प हो गई। अफवाह फैल गई कि गोरक्षक मोनू मानेसर मार्च में हिस्सा लेगा। इस हिंसा में अब तक पांच लोगों की मौत हो चुकी है। नूंह में दो होम गार्ड सहित चार लोगों की मौत हो गई, जहां भीड़ ने विहिप के नेतृत्व वाले हिंदू जुलूस पर हमला किया। गुरुग्राम की एक मस्जिद में नायब इमाम की हत्या कर दी गई।

हरियाणा में हिंसा फैलना साबित करता है कि

हरियाणा में कानून–व्यवस्था चरमरा गई:मायावती

नयी दिल्ली। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की नेता मायावती ने हरियाणा में सांप्रदायिक हिंसा पर काबू पाने में विफल रहने के लिए बुधवार को राज्य सरकार की आलोचना की और दावा किया कि इससे साबित होता है कि मणिपुर की तरह इस उत्तरी राज्य में भी कानून व्यवस्था चरमरा गई है।



नूंह में विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के जुलूस पर हमले का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि अगर राज्य सरकार यात्रा को सुरक्षा प्रदान करने की स्थिति में नहीं थी, तो इसकी अनुमति नहीं दी जानी चाहिए थी। उन्होंने यहां संवाददाताओं को संबोधित करते हुए कहा, ''राज्य सरकार को हरियाणा में शांति और सौहार्द बहाल करने के लिए ईमानदार प्रयास करने चाहिए... सभी धर्मों और सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना हर सरकार का संवैधानिक कर्तव्य है।'' हरियाणा में सांप्रदायिक हिंसा में मरने वालों की संख्या बुधवार को बढ़कर छह हो गई। विहिप ने बजरंग दल के एक घायल कार्यकर्ता की मौत की सूचना दी है। नूंह में शुरु हुई हिंसा राज्य के कुछ अलग हिस्सों तक में फैल गई। हिंसा के दौरान गुरुग्राम में कई दुकानों और गोदामों को आग लगा दी गई। पुलिस के अनुसार, गुरुग्राम में मंगलवार रात कम से कम पांच इलाकों में तोड़फोड़ और आगजनी की सूचना मिली।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि हरियाणा में दंगे हो रहे हैं औक सरकार संज्ञान नहीं ले रही है। नेशनल कॉन्फ्रेंस (छब) अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि नूंह में जो कुछ हुआ वह दिल दहला देने वाला है। धर्म को लेकर लड़ना भारत के लिए अच्छा नहीं है।

हरियाणा में नूंह जिले में दो समूहों के बीच हुई झड़पों में छह लोगों की जान चली गई। मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने वीएचपी जुलूस पर हमले को एक बड़ी साजिश का हिस्सा बताया। फिलहाल इभी भी वहां तनावपूर्ण स्थिति है। इन सब के बीच पूरे मामले को लेकर राजनीति भी तेज हो गई है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि हरियाणा में दंगे हो रहे हैं औक सरकार संज्ञान नहीं ले रही है।

नेशनल कॉन्फ्रेंस (छब) अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि नूंह में जो कुछ हुआ वह दिल दहला देने वाला है। धर्म को लेकर लड़ना भारत के लिए अच्छा नहीं है।

भारत सबका देश है और यहां हर धर्म को आगे बढ़ने का अधिकार है। कांग्रेस सांसद रणदीप सुरजेवाला ने कहा कि जब गुरुग्राम, नूंह, सोहना में ये हिंसक झड़पें हुईं तो सरकार क्या कर रही थी...यह सरकार (हरियाणा सरकार) की दुर्भावना थी।

विपक्ष का वार

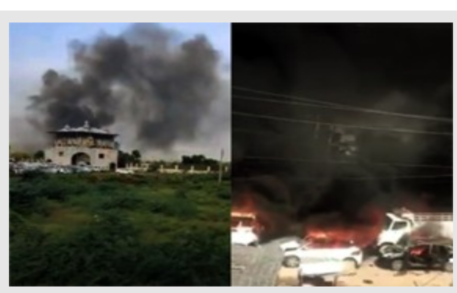
हरियाणा के सांसद दीपेंद्र हुड्डा ने कहा कि नूंह में जो घटना घटी है वह बड़ी प्रशासनिक विफलता है। अगर सरकार समय पर सतर्कता लेती, पुलिस प्रशासन तैनात किया जाता तो यह घटना टाली जा सतकी थी। उन्होंने कहा कि जो उपमुख्यमंत्री (दुष्यन्त चौटाला) और केंद्रीय डवै मंत्री राव इंद्रजीत सिंह का बयानों में भी प्रशासनिक विफलता की बात है। बसपा प्रमुख मायावती का कहना है कि हरियाणा में दंगों का भड़कना, उसका बिना किसी रोक–टोक के गुरुग्राम के कुछ हिस्सों में फैलना, हिंसा भड़कना और सार्वजनिक संपत्ति और धार्मिक स्थलों को भारी नुकसान पहुंचाना मणिपुर की तरह हरियाणा में भी कानून–व्यवस्था की विफलता को साबित करता है।

सरकार का पक्ष

नूंह हिंसा पर हरियाणा के सीएम एमएल खट्टर ने कहा कि नूंह घटना में अभी तक की जानकारी में 6 लोगों की मृत्यु हुई जिसमें से 2 होमगार्ड और 4 आम नागरिक हैं। राज्य पुलिस की 30 कंपनी और केंद्रीय सुरक्षा बल की 20 कंपनी तैनात हैं। केंद्रीय सुरक्षा बल की 20 कंपनी में से हमने 3 पलवल, 2 गुरुग्राम, 1 फरिदाबाद और 14 कंपनी नूंह में तैनात की हैं।

अभी तक 116 लोगों को गिरफ्तार किया गया है जिनकी आज रिमांड ली जाएगी। मेरी जनता से अपील है कि वे शांति बनाए रखें और किसी भी तरह की घटना को आगे न बढ़ने दें। नूंह हिंसा पर हरियाणा के गृह मंत्री अनिल विज ने कहा कि नूंह में स्थिति नियंत्रण में है। करीब 41एफआईर दर्ज की गई हैं। अब तक 116 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि जिस तरह से पत्थर, हथियार और गोलियां मिली हैं, उससे लगता है कि इसके पीछे कोई मास्टरमाइंड है। हम विस्तृत जांच करेंगे और इसमें शामिल लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेंगे।

शिवभक्तों पर किया गया हमला संयोग है या प्रयोग?



मेवात के कण–कण में प्रभु श्रीकृष्ण के अहसास को महसूस किया जा सकता है और इसी भाव को ध्यान में रखते हुए पिछले तीन वर्षों से इस ब्रजमंडल जलाभिषेक यात्रा का प्रयोजन किया जाता है। जिसमें यहां के व हरियाणा के अन्य स्थानों से आए हुए शिवभक्त बड़ी संख्या में हिस्सा लेते हैं।

हरियाणा में जो कुछ हुआ वह तो सबके सामने है लेकिन जहां यह सब हुआ वहां का इतिहास जानना बेहद जरूरी है। देखा जाये तो मेवात की धरती भगवान श्रीकृष्ण की भूमि है। यह उनकी क्रीडा स्थली रही है। यह यात्रा नूंह के नल्हड़ महादेव मंदिर से प्रारंभ होकर श्रृंगार मंदिर पुन्हाना में संपन्न होती है। इन दोनों स्थानों का महत्व श्रीकृष्ण के नाम के साथ जुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि यहीं श्रीकृष्ण विराजमान हुए थे और उन्होंने पवित्र शिवलिंग की स्थापना की थी। इसी स्थान पर उन्होंने कौरवों–पांडवों के मध्य संधि करवाने का प्रयास किया था। श्रृंगार मंदिर वह स्थान है जहां पर वहां के लोगों ने श्रीकृष्ण के बाल्यकाल में उनका श्रृंगार किया था। इसलिए इसका नाम श्रृंगार मंदिर पड़ा। पुन्हाना का नाम भी 'भगवान पुनः आना' के आधार पर रखा गया है। यहां फिरोजपुर झिरका में स्थित झीर महादेव मंदिर भी वही स्थान है जहां पांडवों ने अज्ञातवास का समय बिताया था। इसलिए मेवात के कण–कण में प्रभु श्रीकृष्ण के अहसास को महसूस किया जा सकता है और इसी भाव को ध्यान में रखते हुए पिछले तीन वर्षों से इस ब्रजमंडल जलाभिषेक यात्रा का प्रयोजन किया जाता है। जिसमें यहां के व हरियाणा के अन्य स्थानों से आए हुए शिवभक्त बड़ी संख्या में हिस्सा लेते हैं, इस यात्रा में राष्ट्रत्व का भाव रखने वाले मेव समाज के बंधु भी भागीदार होते हैं। पांडवकालीन स्थान होने के कारण श्रावण मास में यह यात्रा अनेकों वर्षों से होती आ रही है।

आज मेवात की पहचान हिंदू विरोधी गतिविधियों के लिए होने लगी है। पिछले कुछ वर्षों में यहां से बहुत अधिक संख्या में हिन्दुओं का पलायन हुआ है। जहां हिन्दू हैं भी तो उनका प्रतिशत बहुत कम है। आये दिन हिंदू विरोधी घटनाएं होती रहती हैं। तो क्या मेवात की पहचान हिंदू विरोधी बननी चाहिए या फिर भगवान श्रीकृष्ण? प्रश्न सीधा है पर उत्तर कठिन। मेवात का सौहार्द बना रहे, यहां सभी मिलजुल कर रहें, 'हरियाणा एक–हरियाणवी एक' का भाव चरितार्थ हो। यहां का हिंदू समाज अपने आप को अकेला व असहाय न समझे। हरियाणा का सारा समाज मेवात के साथ खड़ा है, इस बात को ध्यान में रखते हुए हर वर्ष इस यात्रा का आयोजन किया जाता है। जिसमें हजारों की संख्या में हरियाणा भर से लोग हिस्सा लेते हैं। इस बार श्रृंगार की कलश यात्रा में एक हजार महिलाओं ने भाग लिया, इस उत्साह व उमंग से भी इस यात्रा के प्रतिवर्ष बढ़ते महत्व को देखा जा सकता है।

31 जुलाई दिन सोमवार को सुबह 11 बजे शिव मंदिर से जलाभिषेक यात्रा का आयोजन किया गया। उसके बाद यात्रा ने श्रृंगार मंदिर के लिए प्रस्थान किया तो दोपहर 1 बजे के करीब खेड़ला चौक के पास उग्र भीड़ ने यात्रा पर हमला कर दिया। तीन बजे तक उग्र भीड़ द्वारा नूंह व आसपास के इलाकों में आगजनी तथा तोड़फोड़ होने लगी। इसके बाद प्रशासन व कुछ सामाजिक संगठनों के आह्वान पर दुकानें बंद करवा दी गयीं। शाम चार बजे तक इंटरनेट सेवाओं को बंद कर दिया गया। उसके पश्चात पास के जिलों से अतिरिक्त पुलिस बल आना शुरू हुआ। छह बजे के पास मंदिर परिसर में आश्रय लिए शिवभक्तों को पुलिस ने निकालना प्रारंभ किया। इस सारे घटनाक्रम में प्रशासन द्वारा की गयी तैयारियां संदेह के घेरे में आती है या यूं कहें कि प्रशासन ने इस यात्रा को लेकर जिस गंभीरता के साथ तैयारी करनी चाहिए थी, वह नहीं की। वरना क्या कारण है कि पांच हजार लोगों की सुरक्षा में केवल सौ पुलिस कर्मी ही लगाए गए। यात्रा की सुरक्षा में लगे सुरक्षा कर्मियों की संख्या हमलावर तत्त्वों को देखते हुए कम सिद्ध हुई। हमले के वीडियो देखने पर ध्यान आता है कि हमले की तैयारियां बहुत दिनों से हो रही थीं, फिर क्यों नहीं खुफ़िया विभाग को इसकी कानों कान खबर हुई। जिस प्रकार से उग्र भीड़ की तैयारी व मनसूबे थे उसके कारण हालात और अधिक खराब हो सकते थे। जिस तरीके से तीर्थयात्रियों पर हमला हुआ है, उसमें महीनों की तैयारी का अंदेशा होता है। यह पूरी घटना पूर्व–नियोजित थी। अभी तक की प्राप्त जानकारी के अनुसार 70 से अधिक निजी कारों व बसों को तोड़ा/जलाया गया है। दो होमगार्ड जवान और एक पानीपत के हिन्दू कार्यकर्ता के दुखद बलिदान सहित अनेकों घायल हैं। बड़ी संख्या में पत्थरों का एकत्र होना, अलग अलग पॉइंट पर हमला करना, यह बिना पूर्व योजना के सम्भव नहीं है। सीआईडी के पास पूर्व में कुछ ऐसी सोशल मीडिया पोस्ट पहुंची थीं, जिसमें इस प्रकार की कोई घटना हो सकती है इसका अंदेशा था। जबकि इस ब्रजमंडल जलाभिषेक यात्रा की सूचना बहुत समय पहले से प्रशासन व स्थानीय पुलिस के पास थी, उसके बावजूद भी इस प्रकार की घटना से सुरक्षा में चूक हुई है, इस बात को किसी भी कारण से नकारा नहीं जा सकता।

मेवात के लिए एकजुट होने का समय

मेवात को उसकी पहचान भगवान श्रीकृष्ण की धरती के रूप में मिल सके। यहां पर भी शांति व अपनापन का भाव बने। यहां पर रहने वाले लोगों के मनों में डर नहीं भरोसे का विश्वास पनपे। इसके लिए आज पूरे समाज को एक साथ खड़ा होना होगा और यह किसी एक समाज का दायित्व नहीं। सबकी साझी भूमिका है। विहिप के केंद्रीय कार्याध्यक्ष आलोक कुमार के शब्दों में 'हम केवल सरकार का आश्रय नहीं लेंगे। आत्मरक्षा का अधिकार है और इसलिए हिन्दू अपनी आत्मरक्षा के अधिकार का भरपूर प्रयोग करके इस प्रकार के हमलों का सामना करेगा। इसके परिणाम जो होंगे उसकी जिम्मेदारी हम पर नहीं होगी। हम सामना भी करेंगे, भयभीत भी नहीं होंगे और मेवात को हिंदुओं के लिए एक सुरक्षित क्षेत्र बनाना सुनिश्चित करेंगे।'

प्रदेश के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा है कि 'देश के संविधान से ऊपर कोई नहीं। उन्होंने कहा है कि संवाद के जरिए सभी विषयों का हल निकाला जा सकता है। प्रदेश के सभी नागरिक हरियाणा एक हरियाणवी एक के सिद्धांत पर चलते हुए समाज और प्रदेश के हित में सहयोग दें। नूंह में जिस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हुई है, उस स्थिति में हर आम नागरिक की जिम्मेदारी समाज और प्रदेश के प्रति और बढ़ जाती है। ऐसे में हमें कोई भी सन्देश प्रचारित करते हुए और भी अधिक संवेदनशील होना चाहिए।' अब आवश्यकता है कि मेवात की इस घटना से सबक लेते हुए हर जिले में इस प्रकार के संवेदनशील स्थानों को चिह्नित करके वहां अपेक्षाकृत अधिक पुलिस गश्त / निगरानी आदि रखना सुनिश्चित किया जाए, ताकि भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं को रोका जा सके। सोशल मीडिया में तनाव निर्माण करने वालों पर भी सख्त कार्यवाही की जाए। नूंह जिले की संवेदनशीलता को देखते हुए यहाँ पर स्थायी रूप से सैनिक/ अर्धसैनिक बल का कोई केंद्र/ बेस कैंप स्थापित किया जाए। यह मांग पहले भी कई बार रखी जा चुकी है। इस घटना की जितनी निंदा की जाए कम है। अब आवश्यकता इस बात की भी है कि प्रशासन द्वारा इसमें शामिल सभी उपद्रवियों पर सख्त से सख्त कार्यवाही की जाए। उनकी गिरफ्तारी, सम्पत्ति कुर्क करना, उनके ठिकानों को ध्वस्त करना, एनएसए क़ानून लगाना आदि सख्त कदम उठाने चाहिए। मेवात में बढ़ रहे अवैध हथियारों और अवैध वाहनों (डम्फर) की जांच करके उन पर कार्यवाही करना भी बहुत जरूरी है। सरकार द्वारा घटना में मृत और घायल पुलिसकर्मियों और नागरिकों के नुकसान की भरपाई के लिए अविलम्ब मुआवजा और सरकारी नौकरी देना भी सुनिश्चित करना चाहिए।

डॉ. पवन सिंह मलिक

छुआछूत की बीमारी की तरह फैलती है हिंसा



हिंसा के शिकार लोगों को समझाना जरुरी है। बदला लेने की मानसिकता नुक़सान करवाती है, ताकि वो फिर उसी हिंसक दुष्चक्र में न फंस जाएं। कोई शराबी है या ड्रग का आदी है, तो उसकी इलाज करने में मदद की जाती है। फिर उसे रोज़गार दिलाने की कोशिश होती है। तभी कोई भी शख़्स एकदम से बदला हुआ नज़र आ सकता है। लोगों के बर्ताव में बदलाव लाकर हम कई चुनौतियों को जड़ से ख़त्म कर सकते हैं। जैसे साफ़–सफ़ाई की आदत से डायरिया जैसी बीमारी को रोका जा सकता है।

ये क़दम तब और असरदार हो जाते हैं, जब एक पीड़ित, दूसरे की मदद करता है। वो अपने खुद के तजुर्बे साझा कर के लोगों का भरोसा जीत सकते हैं। जैसे कोई टीबी–हैजा के मरीज़ रहे लोग इसके शिकार लोगों के बीच काम करें। हिंसक बर्ताव एक महामारी है, जो छुआछूत की बीमारियों की तरह एक इंसान से दूसरे इंसान में फैलती है।

बुद्धिमान लड़ाई से पहले जीतते हैं, जबकि अज्ञानी जीतने के लिए लड़ते हैं। संघर्ष के प्रति बुद्धिमान दृष्टिकोण लड़ाई या हिंसा में शामिल होने से पहले योजना बनाना और रणनीति बनाना शामिल है, जबकि अज्ञानी दृष्टिकोण परिणामों या संभावित परिणामों पर विचार किए बिना केवल लड़ना या हिंसा करना है। अर्थात बौद्धिक विचार यह है कि किसी स्थिति का सावधानीपूर्वक आंकलन करके और सूचित निर्णय लेकर, कोई भी व्यक्ति शारीरिक युद्ध या हिंसा का सहारा लिए बिना जीत हासिल कर सकता है। यह उद्धरण सलाह देता है कि बुद्धिमानी ऐसी स्थिति को पहले से ही भांप लेने में है जो हिंसा में बदल सकती है और फिर इससे बचने के लिए अपने संसाधनों का उपयोग करना चाहिए।

क्या होता है जब हिंसा को टाला नहीं जा सकता? जब कूटनीति के प्रयास विफल हो जाते हैं, तब भी दुश्मन की ताकत और कमजोरियों का आंकलन करके दूसरे पक्ष पर तुरंत काबू पाने के लिए हिंसा को टाला जा सकता है। दुश्मन या विपक्षी को भ्रमित करने और उनके संसाधनों को बर्बाद करने के लिए धोखे और झूठ का भी इस्तेमाल किया जाता है। हिंसा को क़ानून–व्यवस्था के मसले जैसा समझने के बजाय, इसे सार्वजनिक स्वास्थ्य की चुनौती के तौर पर लिया जाये। हिंसक बर्ताव एक महामारी है, जो छुआछूत की बीमारियों की तरह एक इंसान से दूसरे इंसान में फैलती है। जो लोग हिंसा के पीड़ित होते हैं, उनके हिंसा करने की आशंका बढ़ जाती है। "हिंसा को ठीक उसी तरह रोका जा सकता है, जैसे गर्भधारण से जुड़ी चुनौतियां, काम के दौरान लगने वाली चोटों या संक्रामक बीमारियों को रोका जाता है। "दिक़्क़त ये है कि दुनिया भर में हिंसा से सख़्ती से निपटने की सोच हावी है। इसलिए हिंसक घटनाओं पर हंगामा होते ही, नेता हों या जनता, सख़्त क़ानून की मांग करने लगते हैं।

इंसान अक्सर जोखिम भरा बर्ताव करता है, ख़तरों से खेलता है। जैसे कि नुक़सान पता होने के बावजूद स्मोकिंग करना या फिर पेट भरने के बावजूद ज़्यादा खाना। बिना एहतियात बरते सेक्स करना। डॉक्टर हमेशा कहते हैं कि इलाज से बचाव बेहतर है। यानी किसी मर्ज़ को होने से ही रोका जाए। लेकिन, जब बात हिंसक बर्ताव की आती है, तो, इससे निपटने का एक ही तरीक़ा लोग बताते हैं, क़ानून सख़्त बना दो। जैसे हाल ही में 12 साल से कम उम्र की बच्ची से बलात्कार पर मौत की सज़ा का प्रावधान। या फिर भीड़ की हिंसा से निपटने के लिए सख़्त क़ानून बनाने पर हमारे देश में विचार चल रहा है। हिंसा को इंसान का जन्मजात बर्ताव मान लिया गया है, जिसे बदला नहीं जा सकता। सोच यही है कि जो लोग हिंसा करते हैं, उन्हें सही रास्ते पर नहीं लाया जा सकता। इसलिए सख़्त क़ानूनों की बात ही की जाती है। लेकिन, सख़्त क़ानूनों से बात बनती होती, तो कब की बन जाती। सऊदी अरब और ईरान में कई जुर्मों के लिए मौत की सज़ा है। मगर अपराध तब भी नहीं रुकते। भारत में भी कई अपराधों के लिए मौत की सज़ा मिलती है। मगर वो जुर्म अब भी होते हैं।

हिंसा से किस प्रकार बचा जा सकता है? आज देश के जातीय दंगों के संदर्भ में, यह उद्धरण दो समुदायों के बीच संघर्षों को सुलझाने में कूटनीति और बातचीत के महत्व पर प्रकाश डालता है। हिंसा का सहारा लेने के बजाय, जिसके सभी संबंधित पक्षों के लिए विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं, बुद्धिमान नेता बातचीत और समझौते के माध्यम से शांतिपूर्ण समाधान ढूंढने का प्रयास करता है। प्रायः पड़ोसी राज्यों या धार्मिक समुदायों के बीच संघर्ष अक्सर होते रहते हैं, इसलिए हिंसा की घटनाओं को कम करने की दिशा में क्षेत्रीय एकीकरण एक महत्वपूर्ण प्रगति है। दोनों पक्षों के पारस्परिक लाभ के लिए विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से निपटाने की संभावना के बारे में निर्णय लेने वालों की अनभिज्ञता के कारण अक्सर दंगा या हिंसा होती है। इस प्रकार यह संभव है कि सामुदायिक विवादों के निपटारे के लिए वैकल्पिक, शांतिपूर्ण तकनीकों को विकसित और संस्थागत बनाकर और राज्यों को उनका उपयोग करने के लिए राजी करके दंगों की रोकथाम में योगदान दे सकते हैं।

इसे राजनीतिक, क्षेत्रीय या राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था के रूप में समझा जा सकता है, जिसमें प्रत्येक इकाई यह स्वीकार करती है कि किसी एक की सुरक्षा भी सभी की सामूहिक चिंता है। अतः वे खतरों और शांति के उल्लंघन के प्रति सामूहिक प्रतिक्रिया के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस प्रकार, देश में में चल रहे जातीय संघर्ष को देखते हुए यह उद्धरण समकालीन समय के लिए प्रासंगिक है। यह हमें याद दिलाता है कि सच्ची जीत ज्ञान और दूरदर्शिता के साथ संघर्षों से निपटने और हिंसा से बचने के लिए शांतिपूर्ण समाधान खोजने से हासिल की जाती है। इसके अलावा, इसे न केवल हिंसा के लिए बल्कि रोजमर्रा के संघर्षों और चुनौतियों पर भी लागू किया जा सकता है। साथ ही, यह उद्धरण सफलता प्राप्त करने के लिए तैयारी, ज्ञान और दूरदर्शिता के महत्व पर भी जोर देता है।

हिंसा के शिकार लोगों को समझाना जरुरी है। बदला लेने की मानसिकता नुक़सान करवाती है, ताकि वो फिर उसी हिंसक दुष्चक्र में न फंस जाएं। कोई शराबी है या ड्रग का आदी है, तो उसकी इलाज करने में मदद की जाती है। फिर उसे रोज़गार दिलाने की कोशिश होती है। तभी कोई भी शख़्स एकदम से बदला हुआ नज़र आ सकता है। लोगों के बर्ताव में बदलाव लाकर हम कई चुनौतियों को जड़ से ख़त्म कर सकते हैं। जैसे साफ़–सफ़ाई की आदत से डायरिया जैसी बीमारी को रोका जा सकता है। ये क़दम तब और असरदार हो जाते हैं, जब एक पीड़ित, दूसरे की मदद करता है। वो अपने खुद के तजुर्बे साझा कर के लोगों का भरोसा जीत सकते हैं। जैसे कोई टीबी–हैजा के मरीज़ रहे लोग इसके शिकार लोगों के बीच काम करें।

डॉ. सत्यवान सौरभ,

महादेव का सिद्ध मंदिर है प्रसिद्ध त्रिलोचन महादेव धाम ..!



जौनपुर जिले में जलालपुर के निकट प्रसिद्ध त्रिलोचन महादेव मंदिर जहां अपनी मान्यताओं के लिए प्रसिद्ध है वहीं पर्यटन का भी मुख्य केंद्र है। त्रिलोचन महादेव मंदिर क्षेत्र का सबसे प्रमुख मंदिर है, जोकि भगवान शिव को समर्पित है और एक छोटे से कुंड के सामने बनाया गया है। किंवदंतियों के अनुसार यहां भगवान ब्रह्मा ने एक यज्ञ का आयोजन किया था जिसके बाद शिव यहां प्रकट हुए थे। मंदिर के अंदर एक शिवलिंग और कई छोटे मंदिर हैं जो अन्य देवताओं को समर्पित हैं। माना जाता है कि इस धाम में पवित्र मन से मांगी हर मुराद पूरी होती है, और इसलिए शिवरात्रि या सावन जैसे अवसरों पर यहां भक्तों का तांता लगा रहता है। यहां स्थित शिवलिंग के संदर्भ में यह मान्यता है कि शिवलिंग समय के साथ बड़ा होता जा रहा है। करीब 60 साल पहले शिवलिंग की ऊंचाई 2 फीट थी जबकि आज यह ऊंचाई 3 फीट से भी अधिक हो गयी है। इतना ही नहीं, समय के साथ शिवलिंग की चमक भी बढ़ी है तथा शिवलिंग पर भोलेबाबा की तीसरी आंख भी साफ नजर आने लगी है। इस घटना से महादेव पर लोगों की आस्था और भी प्रगाढ़ होती जा रही है। भक्तों की आस्था देख कर मंदिर को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। इसके अलावा मंदिर परिसर का सौंदर्यीकरण भी कराया गया है।शिवलिंग पर चढाये जल को लाँघा नही जाता और शिवलिंग की परिक्रमा आधी की जाती है । शिवलिंग पर अर्पित नैवेद्य भी नहीं खाया जाता उसे गऊ वंश को खिला दिया जाता है क्योंकि उनमें ही इसकी शक्ति को सहने की क्षमता होती है । भारत का रेडियोएक्टिविटी मैप उठा ले हैरान हो जायेंगे भारत सरकार के न्युक्लियर रियेक्टर के अलावा सभी ज्योतिर्लिंगो के स्थानों पर सबसे ज्यादा रेडियेशन पाया जाता है ! शिवलिंग ओर कुछ नहीं बल्कि न्युक्लियर रिएक्टर्स ही तो है तभी तो उस पर जल चढाया जाता है ताकि वो शांत रहे , महादेव के सभी प्रिय पदार्थ जैसे कि बिल्वपत्र, आक, धतूरा, गुड़हल, आदि सभी न्युक्लियर एनर्जी सोखने वाले हैं, शिवलिंग पर चढा पानी भी रिएक्टिव हो जाता है इसलिए तो जल निकासी नलिका को लाँघा नही जाता । भाभा एटॉमिक रिएक्टर का डिजाइन भी शिवलिंग की तरह ही है, शिवलिंग पर चढाया जल नदी के बहते जल के साथ मिलकर औषधि का रूप ले लेता है, तभी तो हमारे पूर्वज हम लोगों से कहते थे कि "महादेव शिवशंकर" अगर नाराज हो जायेंगे तो प्रलय आ जायेगी ,ध्यान दें कि हमारी परम्पराओं के पीछे कितना गहन विज्ञान छिपा हुआ है !

जिस संस्कृति की कोख से हमनें जनम लिया वो तो चिर सनातन है ! विज्ञान को परम्पराओं का जामा इसलिए पहनाया गया ताकि वो प्रचलन बन जाए और हम भारतवासी सदा वैज्ञानिक जीवन जीते रहे... आपको ये जानकर आश्चर्य होगा कि भारत में ऐसे महत्वपूर्ण शिव मंदिर है जो "केदारनाथ" से लेकर "रामेश्वरम" तक एक ही सीधी रेखा में बनाये गए हैं , आश्चर्य है कि हमारे पूर्वजो के पास ऐसा कैसा विज्ञान और तकनीक थी जिसे हम आज तक नहीं समझ पाये ? उत्तराखंड का "श्री केदारनाथ" तेलंगाना का "कालेश्वरम" आंध्रप्रदेश का "कालहस्ती" तमिलनाडु का "एकंबरेश्वर" चिदंबरम और अंततः "रामेश्वरम" मंदिरो को 79°ᵮ 41′54″ लॉन्गिट्यूड की भोगोलिक सीधी रेखा में बनाया गया है । यह सारे मंदिर प्रकृति के 5 तत्वों में लिंग की अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसे हम आम भाषा में पंचभूत कहते हैं, पंचभूत यानि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, और अंतरिक्ष, इन्हीं पाँच तत्वों के आधार पर इन पाँच शिवलिगों को प्रतिष्ठापित किया गया है ! जल का प्रतिनिधित्व तिरूवनैकवल मंदिर में है ,आग का प्रतिनिधित्व तिरूवन्नमलई में है , हवा का प्रतिनिधित्व कालाहस्ती में है, पृथ्वी का प्रतिनिधित्व कांचीपुरम में है, और अंत में अंतरिक्ष का प्रतिनिधित्व चिदंबरम मंदिर में है, वास्तु –विज्ञान – वेद के अदभुत समागम को दर्शाते हैं ये पाँच मंदिर । भौगोलिक रूप से भी इन मंदिरो में विशेषता पाई जाती है, इन पाँच मंदिरो को योग विज्ञान के अनुसार बनाया गया था और एक दूसरे के साथ एक निश्चित भौगोलिक संरेखण में रखा गया है, इस के पीछे निश्चित ही कोई विज्ञान होगा जो मनुष्य के शरीर पर प्रभाव करता होगा । इन मंदिरो का करीब पाँच हजार वर्ष पूर्व निर्माण किया गया था जब उन स्थानों के अक्षांश और देशांतर को मापने के लिए कोई उपग्रह तकनीक उपलब्ध ही नहीं था तो फिर कैसे इतने सटीक रूप से पाँच मंदिरो को प्रतिष्ठापित किया गया था ? उत्तर भगवान ही जाने । केदारनाथ और रामेश्वरम के बीच 2383 किमी की दूरी है लेकिन ये सारे मंदिर लगभग एक ही समानांतर रेखा में पडते हैं ! आखिर हजारों वर्ष पूर्व किस तकनीक का उपयोग कर इन मंदिरो को समानांतर रेखा में बनाया गया है यह आज तक रहस्य ही है . श्रीकालहस्ती मंदिर में टिमटिमाते दीपक से पता चलता है वह "वायु लिंग" है तिरूवन्निका मंदिर के अंदरुनी पठार में जल बसंत से पता चलता है कि यह "जल लिंग" है . अन्नामलाई पहाडी पर विशाल दीपक से पता चलता है कि वह "अग्नि लिंग" है।कांचीपुरम के रेत के स्वयंभू लिंग से पता चलता है कि वह "पृथ्वी लिंग"है ।और चिदंबरम की निराकार अवस्था से भगवान की निराकारता यानि "आकाश तत्व" का पता चलता है । अब यह आश्चर्य की बात नहीं तो और क्या है कि ब्रह्मांड के पाँच तत्वों का प्रतिनिधित्व करने वाले पाँच लिगों को एक समान रेखा में सदियों पूर्व ही प्रतिष्ठापित किया गया है ! हमें हमारे पूर्वजो के ज्ञान और बुद्धिमत्ता पर गर्व होना चाहिए कि उनके पास ऐसी विज्ञान और तकनीक थी जिसे आधुनिक विज्ञान भी नहीं भेद पाया है, माना जाता है कि केवल यह पाँच मंदिर ही नहीं अपितु इसी रेखा में अनेक मंदिर होंगे जो "केदारनाथ" से "रामेश्वरम" तक सीधी रेखा में पडते हैं, इस रेखा को "शिवशक्ति अक्श रेखा" भी कहा जाता है ! संभवतया यह सारे मंदिर "कैलाश" को ध्यान में रखते हुए बनाये गये हो जो 81.3119° ᵮ में पडता है !? उत्तर शिवजी ही जाने ।कमाल की बात "महाकाल" से "शिव ज्योतिर्लिंगों के बीच कैसा संबंध है ?यह मंदिर रहस्यमयी गाथाओं को समेटे हुए है। ऐसा विश्वास है कि यहां स्थित शिवलिंग कहीं से लाया नहीं गया है अपितु बाबा भोलेशंकर यहां स्वयं विराजमान हुए हैं। कहा जाता है कि मंदिर को लेकर समीपवर्ती दो गांवों रेहटी और डिंगुरपुर में विवाद था कि यह मंदिर किस गांव की सरहद के भीतर है। कई पंचायतें और तर्क–वितर्क हुए किंतु कोई परिणाम न आया। तब दोनों गांवों के बुजुर्गो ने फैसला किया कि यह फैसला स्वयं भगवान भोलेनाथ करेंगे और उन्होंने मंदिर को बाहर से बंद कर अपने–अपने पक्षों का ताला जड़ दिया और घर चले गए। अगले दिन जब पक्षों के लोग मंदिर पहुंचे तो शिव लिंग स्पष्ट रूप से उत्तर दिशा में रेहटी ग्राम की तरफ झुका हुआ था जिसे देख लोग आश्चर्यचकित हो गये। तभी से उस शिव मंदिर को रेहटी गांव में माना जाता है। मंदिर के सामने पूर्व दिशा में रहस्यमयी ऐतिहासिक कुंड भी है जिसमें हमेशा जल रहता है। मान्यता है कि कुंड में स्नान करने से बुखार और चर्म रोगियों को लाभ मिलता है।

पंकज कुमार मिश्रा

बाल तस्करी : सख्त कदम उठाने की आवश्यकता



मानव तस्करी के मामले अकसर सामने आते रहते हैं, जिनमें अधिकतर कम उम्र के बच्चे होते हैं। इनका उपयोग विभिन्न उद्योगों में बन्धुआ मजदूर के रूप में किया जाता है। बीते कुछ सालों में बाल तस्करी में आयी तेजी हैरान करने वाली है। इस सम्बन्ध में दो एनजीओ की संयुक्त अध्ययन रिपोर्ट के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि पिछले पांच वर्षों में उत्तर प्रदेश, बिहार और आंध्रप्रदेश में जहां सर्वाधिक बाल तस्करी हुई, वहीं कोरोना महामारी के बाद से दिल्ली में बाल तस्करी में 68 प्रतिशत की वृद्धि हुई। रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2016 से 2022 के बीच बाल तस्करी में जयपुर शीर्ष पर रहा, जबकि अन्य शीर्ष चार स्थान पर दिल्ली के इलाके शामिल हैं। यह रिपोर्ट 21 राज्यों के 262 जिलों में अध्ययन के आधार पर तैयार किया गया है। अध्ययन के अनुसार इस दौरान 18 साल से कम उम्र के 13549 बच्चों को बचाया गया है। इन दोनों संघटनों के अध्ययन रिपोर्ट के आंकड़ों की पा. रदर्शिता के साथ जांच होनी चाहिए। यदि इनके दावे सही हैं तो यह अत्यन्त चिन्ता की बात है, क्योंकि यह बच्चे सिर्फ बन्धुआ मजदूरों तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि आपराधिक प्रवृत्ति के अराजक तत्व इनका दुरुपयोग मादक पदार्थों की तस्करी एवं अन्य आपराधिक कृत्यों में करते हैं, जो समाज और देश के हित में नहीं है। एक ओर सरकार जहां सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के साथ देश को संवारने में जुटी है वहीं बाल तस्करी का यह कुकृत्य देश के विकास में बड़ी बाधा है। बच्चे ही देश का भविष्य होते हैं इनकी शिक्षा और सुरक्षा सरकार की जिम्मेदारी है। राज्य सरकारों का दायित्व है कि वे बाल तस्करी रोकने के लिए सख्त कदम उठायें ताकि बच्चों को गलत हाथों में जाने से बचाया जा सके।

"बारिश आती है तो मेरे शहर को कुछ हो जाता है"

सावन के महीने को बरसात ऋतु का पर्याय माना जाता है। इसी कारण, यह साहित्यकारों को बहुत प्रिय रहा है। साहित्य सर्जना के अंकुर फूट जाते हैं। संस्कृत साहित्य में अगर कालिदास के वर्षा ऋतु के वर्णन को सबसे अनुपम पक्ष माना जाता है तो वजह यही है कि कालिदास ने वर्षा को महसूस किया है। पानी की फुहारों से लेकर यौवन को भिगो देने वाली बारिश में मन कैसे उल्लास और उमंग से कुलांचे भरता है या इस ऋतु में विरह पीड़ा कैसे उमड़ती–घुमड़ती है, उसका रोचक वर्णन भारतीय साहित्य में देखने को मिलता है। हिन्दी भाषा के साहित्यकारों ने श्रावण मास को एक ओर तो पावन मास के रूप में चित्रित किया वहीं दूसरी ओर प्रेम प्रीति के सौन्दर्य से सराबोर प्रेम व विरह के विरोधाभास लिए उजाले अंधेरों की अद्भुत शब्द लड़ियां पिरो कर सुन्दर सृजन मालाएँ सजाई हैं। चाहे वह हिंदी साहित्य का मध्ययुग हो, जिसमें तुलसी, सूर, जायसी आदि कवियों ने पावस ऋतु का सुंदर और सरस चित्रण किया है या आधुनिक हिंदी साहित्य में छायावादी कवियों में जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत , सूर्यकांत त्रिपाठी निराला या महादेवी वर्मा द्वारा लिखी वर्षा संबंधी कविताएं हों, सबने सावन के ऊपर लेखनी चलाकर अपना तन–मन भिगोया है। रामधारी सिंह दिनकर अपनी वीर रस की कविताओं के लिए जाने जाते हैं. गंभीर विश्लेषण उनकी पहचान रही है। लेकिन सावन के आकर्षण ने उनको भी बांध लिया।

सावन की सुंदरता को देखकर उनकी लेखनी ने चहकते हुए लिखा कि–

जेठ नहीं, यह जलन हृदय की,
उठकर जरा देख तो ले,
जगती में सावन आया है,



मायाविनी! सपने धो ले।
जलना तो था बदा भाग्य में
कविते! बारह मास तुझे,
आज विश्व की हरियाली पी
कुछ तो प्रिये, हरी हो ले।
नंदन आन बसा मरु में,
घन के आंसू वरदान हुए;
अब तो रोना पाप नहीं,
पावस में सखि! जी भर रो ले।
अपनी बात कहूं क्या? मेरी
भाग्य लीक प्रतिकूल हुई;
हरियाली को देख आज फिर
हरे हुए दिल के फोले।

गोपालदास नीरज ने सावन को केंद्र में रखकर एक सुंदर कविता लिखीं। उनकी यह कविता नए लोगों की व्यवस्था की विसंगतियों को संबोधित करती है। अधिकांश कवियों ने सावन का उल्लेख प्राकृतिक सुंदरता, प्रेम–प्रसंगों कें संदर्भ में किया है लेकिन नीरज ने सावन को आमजन की समस्याओं और उनके साथ होने वाले अन्याय से जोड़ा है. इसलिए उनका 'सावन पाठ' अनूठा बन पड़ा है–

अब के सावन में ये शरारत मेरे साथ हुई,
मेरा घर छोड़ के पूरे शहर में बरसात हुई।
आप मत पूछिए क्या हम पे सफर में गुजरी?
था लुटेरों का जहा गांव वहीं रात हुई।
जिंदगी–भर तो हुई गुफ्तगू गैरों से मगर,
आज तक हमसे न हमारी मुलाकात हुई।
हर गलत मोड़ पे टोका है किसी ने मुझको,
एक आवाज जब से तेरी मेरे साथ हुई।
मैंने सोचा कि मेरे देश की हालत क्या है,
एक कातिल से तभी मेरी मुलाकात हुई।

महादेवी वर्मा बोलती हैं–

"नव मेघों को रोता था
जब चातक का बालक मन,
इन आँखों में करुणा के
घिर घिर आते थे सावन"

सुमित्रानंदन पंत के सावन को देखिए–

"ढम ढम ढम ढम ढम ढम
बादल ने फिर ढोल बजाए।
छम छम छम छम छम छम
बूँदों ने घुंघरू छनकाए."

तो गुलज़ार साहब फरमाया रहे हैं–

"बारिश आती है तो मेरे शहर को कुछ हो जाता है"

गोपालदास नीरज कहते हैं

"यदि मैं होता घन सावन का
पिया पिया कह मुझको भी पपिहरी बुलाती कोई"

परिवार के सदस्यों से पटा पूरा गांव

आमतौर पर गांव के एक फलिए में 5 से 10 परिवार निवास करते है। लेकिन मध्यप्रदेश में 90 लोगों ने एक फलिया बनाया है। चौंकाने वाली बात यह है की इस फलिया में रहने वाले सभी 90 लोग एक ही परिवार (कुनबे) के है। फालिया का नाम भी परिवार के मुखिया वासल्या के नाम से ही जाना जाता है। दरअसल खरगोन जिले के भगवानपुरा तहसील के देवाड़ा गांव में यह वासल्या फलिया है। जहां एक ही परिवार के 90 सदस्य रहते है। इस परिवार के मुखिया स्व. वासल्या के नाम से ही इस फलिए की पहचान है। स्व. वासल्या पटेल के 5 बेटे और 6 भाईयों सहित परिवार में कुल 90 सदस्य हैं। इस परिवार में 44 पुरूष और 46 महिला सदस्य है। बताया जाता है कि जनजातीय समुदाय के नागरिकों में यह परंपरा रही है कि वे विवाह के बाद अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अलग मकान में रहतें हैं, लेकिन कई बार रसोई और कृषि सामूहिक रूप से करते हैं। इस पटेल (ब्राम्हणे) परिवार का एकजुट होकर रहने की भी कुछ ऐसी ही संस्कृति है। सभी के अलग–अलग घर और रसोई है। कुछ भाई सामूहिक रूप से कृषि करते है। बताया जाता है कि जनजातीय समुदाय के नागरिकों में यह परंपरा रही है कि वे विवाह के बाद अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अलग मकान में रहतें हैं। संभवतः शासन की योजनाओं में सर्वाधिक लाभ पाने वाला भी यह परिवार प्रदेश का पहला परिवार बन चुका इस 90 सदस्यों के परिवार में 17 सदस्य ऐसे हैं जिन्हें शासन की योजनाओं से प्रतिमाह 62 हजार रुपए का लाभ मिल रहा है। परिवार में 12 ऐसी महिलाएं है जो मप्र सरकार द्वारा चलाई जा रही मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की लाभार्थी है।



'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' में जामिनी चटर्जी के किरदार में नजर आने वाली शबाना आजमी ने हाल ही म` ˙

फिल्म रॉकी रानी की प्रेम कहानी में शबाना आजमी और धर्मेन्द्र के लिप–लॉक पर कैसा था जावेद अख्तर का रिएक्शन?

अपने ऑन–स्क्रीन प्रेमी कवल (धर्मेंद्र) के साथ उनके लिप–किस के बारे में उनके पति जावेद अख्तर के रिएक्शन के बारे में बात की। जब शबाना आजमी से पूछा गया कि करण जौहर की फिल्म में शबाना आजमी और धर्मेंद्र के ऑन स्क्रिन किस के बारे में बतौर एक्ट्रेस के पति के रिएक्शन के बारे में पूछा गया तो शबाना ने जवाब दिया।

शबाना आजमी ने हाल ही में जूम के साथ बातचीत में 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' में धर्मेंद्र के साथ अपने किस सीन के बारे में बात की। उन्होंने सीन के दौरान अपने पति की प्रतिक्रिया का भी जिक्र किया। शबाना ने बताया कि जावेद ने उनके किस सीन को लेकर कोई चिंता नहीं दिखाई। हालाँकि, फिल्म देखते समय यह उनकी हरकतें थीं जिसने उन्हें खुश कर दिया।

लिप–किस के बारे में बात करते हुए शबाना आजमी ने कहा, ''मैंने कभी नहीं सोचा था कि इससे इतना हंगामा मच जाएगा! जब हम चुंबन करते हैं तो लोग हंस रहे होते हैं और शौर कर रहे होते हैं। शूटिंग के दौरान यह कभी कोई मुद्दा नहीं था। यह सच है कि मैंने पहले स्क्रीन पर ज्यादा किस नहीं किया है। लेकिन कौन धर्मेंद्र जैसे खूबसूरत आदमी को चूमना नहीं चाहेगा?"

जब उन्होंने इस पर जावेद की प्रतिक्रिया के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, "ओह, उन्हें कोई परेशानी नहीं थी। लेकिन जिस बात ने जावेद को परेशान किया वह मेरा उपद्रवी व्यवहार था। पूरी फिल्म के दौरान, मैं तालियाँ बजा रहा थी, सीटियाँ बजा रहे था, उत्साह बढ़े रहा था और चिल्ला रहे था।

'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' के बारे में

'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' एक रोमांटिक कॉमेडी फिल्म है, जो करण जौहर द्वारा निर्देशित और इशिता मोइत्रा, शशांक खेतान और सुमित रॉय द्वारा लिखित है। फिल्म का निर्माण धर्मा प्रोडक्शंस और वायाकॉम18 स्टूडियोज द्वारा किया गया है। फिल्म में धर्मेंद्र, जया



पुणे में तिलक पुरस्कार समारोह के मंच पर मोदी से खुले दिल से मिले शरद पवार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को पुणे में लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के प्रमुख शरद पवार के साथ मंच साझा किया। एनसीपी में टूट के बाद ये पहला मौका था, जब पीएम मोदी और शरद पवार आमने–सामने थे। इस दौरान ऐसा लगा ही नहीं कि इनके बीच कुछ दूरियां हैं।

लड़का–लड़की राजी हों तो भी नहीं होगा प्रेम विवाह!

गुजरात। जो लोग शादी की संवैधानिक उम्र पार कर चुके हैं उन्हें कानूनी तौर पर अपनी इच्छानुसार किसी से भी शादी करने की इजाजत है। लेकिन ऐसे प्रेम विवाहों से उन माता–पिता को अत्यधिक पीड़ा हो रही है जिन्होंने दसियों वर्षों तक कड़ी मेहनत करके उन्हें प्यार से पाला है। ऐसी घ टनाओं से बचने के लिए गुजरात सरकार एक नई योजना लागू करने की सोच रही है। गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने खुलासा किया कि प्रेम विवाह के कारण होने वाले अनावश्यक विवाद और पीड़ा से बचने के लिए, प्रेम विवाह के लिए माता–पिता की अनुमति को अनिवार्य बनाने की व्यवस्था लाने की समीक्षा की जा रही है।

सीएम भूपेन्द्र पटेल मेहसाणा में पाटीदार समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाले 'सरदार पटेल ग्रुप' द्वारा आयोजित बैठक में शामिल हुए। यह बयान माता–पिता की अनुमति से प्रेम विवाह करने की पाटीदार समुदाय की मांग के जवाब में आया है, जिसमें कहा गया है कि यदि



संवैधानिक रूप से संभव हुआ तो प्रस्ताव को लागू किया जाएगा। कई युवतियां अपने प्रियजनों से शादी करने के लिए घर से भाग रही हैं। स्वास्थ्य मंत्री ऋषिकेष पटेल ने मुझसे कहा कि हमें इन घटनाओं का अध्ययन करना चाहिए. इसलिए हम इस पर अध्ययन करेंगे कि क्या हम ऐसी प्रणाली लागू कर सकते हैं जो प्रेम विवाह के लिए माता–पिता की सहमति को अनिवार्य बना दे। यदि संवैधानिक रूप से अनुमति दी गई तो हम इसे लागू करने जा रहे हैं।' हम इस समस्या के समाधान के लिए बेहतर परिणाम हासिल करने का प्रयास करेंगे।' खास बात यह है कि सीएम के प्रस्ताव को विपक्षी कांग्रेस नेताओं का भी समर्थन मिला है। कांग्रेस विधायक इमरान खेड़ावाला ने ऐलान किया है कि अगर सरकार ऐसा कोई बिल विधानसभा में पेश करेगी तो वह उनका समर्थन करेंगे।

हाल के दिनों में प्रेम विवाह के मामले में माता–पिता की राय को नजरअंदाज किया जा रहा है। सरकार प्रेम विवाह के लिए संवैधानिक रूप से अलग व्यवस्था बनाने की कोशिश कर रही है। सीएम ने प्रेम विवाह के लिए माता–पिता की सहमति को अनिवार्य बनाने के लिए एक अध्ययन कराने का वादा किया है। इमरान ने साफ कर दिया है कि अगर विधानसभा सत्र में ऐसा कोई कानून लाया जाता है तो सरकार को मेरा समर्थन होगा।

फिर भी, गुजरात सरकार जबरन धर्म परिवर्तन को दबाने के लिए पहले ही कई कदम उठा चुकी है। शादी के नाम पर धोखाधड़ी से धर्मांतरण पर रोक लगाने वाला कानून बनाया। 2021 में, गुजरात ने धर्म की स्वतंत्रता अधिनियम में कई बदलाव किए, जिसमें जबरन धर्म परिवर्तन के लिए 10 साल तक की जेल की सजा का प्रावधान किया गया। लेकिन गुजरात हाई कोर्ट ने इस विवादास्पद कानून की कुछ धाराओं पर रोक लगा दी है। गुजरात हाई कोर्ट के आदेश को राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी. यह मामला फिल. हाल सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है।

रोहिंग्या : अर्थव्यवस्था और प्राकृतिक संसाधनों पर बोझ



पाकिस्तान को दो हिस्सों में बांटना इंदिरा गांधी सरकार की बड़ी उपलब्धि, जरूर थी लेकिन घुसपैठ की समस्या को अपेक्षाकृत कमतर आंका गया। एक अनुमान के मुताबिक बांग्लादेश मुक्ति के लिए हुए युद्ध की शुरुआत के समय ही करीब एक करोड़ बांग्लादेशी भारत आ गए थे।

भारत लंबे समय से घुसपैठ की समस्या से जूझ रहा है। पाकिस्तान से कटकर बांग्लादेश अलग हुआ, उस समय बड़ी संख्या में बांग्लादेशी भारत आकर बस गए।

पाकिस्तान को दो हिस्सों में बांटना इंदिरा गांधी सरकार की बड़ी उपलब्धि, जरूर थी लेकिन घुसपैठ की समस्या को अपेक्षाकृत कमतर आंका गया। एक अनुमान के मुताबिक बांग्लादेश मुक्ति के लिए हुए युद्ध की शुरुआत के समय ही करीब एक करोड़ बांग्लादेशी भारत आ गए थे।

यूनाइटेड नेशंस हाई कमीशन फॉर रिफ्यूजीज (यूएनएचसीआर) की तत्कालीन रिपोर्ट इस पर और अधिक विस्तार से प्रकाश डालती है। रिपोर्ट के मुताबिक 1971 युद्ध के समय प्रति दिन करीब एक लाख बांग्लादेशी भारत आ रहे थे। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी भी इस गंभीर खतरे को भांप चुकी थीं, शायद तभी यूएनएचसीआर के भारी दबाव के बावजूद उन्हें कहना पड़ा था कि किसी भी स्थिति में इन्हें भारत में स्थान नहीं दिया जा सकता। 1971 में एक साक्षात्कार में इंदिरा जी ने माना भी था कि भारी सं ख्या में शरणार्थी आने की वजह से भारत में समस्या खड़ी हो गई है। समय के साथ अस्थायी बस्तियों में रहने वाले बांग्लादेशी कब भारतीय नागरिक बन गए, पता भी नहीं चला। असम में एनआरसी बनाते समय यह बात खूब समझ में आई। बांग्लादेशी घुसपैठियों से जूझ रहे भारत की मुश्किलें अब रोहिंग्या ने बढ़ा दी है। रोहिंग्या घुसपैठियों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। फिलहाल इनकी संख्या कितनी है, इसका सटीक अंदाजा लगाना मुश्किल है। 2017 में केंद्र सरकार ने बताया था कि देश में 40 हजार रोहिंग्या घुसपैठिए जम्मू कश्मीर, हैदराबाद, उत्तर प्रदेश, दिल्ली–एनसीआर, राजस्थान में रहते हैं। हालांकि यूएनएचआरसी ने अपनी रिपोर्ट में 2021 दिसम्बर तक देश के अलग–अलग हिस्सों में करीब 18 हजार रोहिंग्या मुसलमानों के रहने की बात कही। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 2019 में नागरिकता संशोधन बिल पर चर्चा के दौरान रोहिंग्या घुसपैठियों का जिक्र किया था। उन्होंने कहा था कि रोहिंग्या को भारत कभी बतौर नागरिक स्वीकार नहीं करेगा।

सरकार के इस वक्तव्य के पीछे एक बड़ा कारण यह भी था कि रोहिंग्या आंतरिक सुरक्षा के लिए चुनौती बनते जा रहे हैं। रोहिंग्या अर्थव्यवस्था और प्राकृतिक संसाधनों पर तो बोझ हैं ही ड्रग्स, मानव तस्करी समेत आतंकवादी घटनाओं में इनकी संलिप्तता ने भी सुरक्षा एजेंसियों की चिंता बढ़ा दी है। रोहिंग्या ने भारत के अलावा बांग्लादेश में भी घुसपैठ की। आज बांग्लादेश रोहिंग्या घुसपैठियों की वजह से

बदहाली के भंवर में फंसता जा रहा है। प्रधानमंत्री शेख हसीना ने माना कि म्यांमार से भागकर भारत और बांग्लाद. `श आए रोहिंग्या मुसलमानों ने देश के सामाजिक तानेबाने और अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाया है। संयुक्त राष्ट्र से प्रभावी भूमिका निभाने का अनुरोध करते हुए शेख हसीना ने कहा है कि रोहिंग्या की लंबे समय तक बांग्लादेश में मौजूदगी ने अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, सुरक्षा और सामाजिक–राजनीतिक स्थिरता पर गंभीर प्रभाव डाला है। ड्रग्स, मानव तस्करी समेत संगठित अपराध बढ़ गए हैं। भारत में भी स्थितियां कमोबेश ऐसी ही हैं। म्यांमार की सीमा पर जवानों से बचते हुए घने जंगलों से होकर रोहिंग्या उत्तर–पूर्वी राज्यों सिक्किम और मिजोरम से भारत के अंदरूनी हिस्सों का रुख कर चुके हैं, और कर रहे हैं। इन्हें रोकने के लिए सख्ती बरती जा रही है, गिरफ्तारियां भी होती रहती हैं। फिर भी रोहिंग्या उत्तर–पूर्व से बंगाल, असम, झारखंड, बिहार और उत्तर प्रदेश होते हुए नेपाल सीमा तक पहुंच रहे हैं। बंगाल से ट्रेन के माध्यम से दिल्ली और वहां से पाकिस्तान सीमा से सटे संवेदनशील जम्मू–कश्मीर तक डेरा डाल चुके हैं। जम्मू कश्मीर में पुंछ, डोडा, अनंतनाग, सांबा और जम्मू में काफी संख्या में रहने लगे। सरकार सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर कर चुकी है कि रोहिंग्या देश की सुरक्षा के लिए खतरा हैं।

रोहिंग्या घुसपैठियों के खिलाफ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर हाल में एटीएस ने मथुरा, अलीगढ़, हापुड़, गाजियाबाद में छापेमारी की। 74 रोहिंग्या घुसपैठियों को गिरफ्तार किया गया। गाजियाबाद में पकडे गए रोहिंग्या से कई सनसनीखेज खुलासे हुए हैं।

कइयों के पास से पहचान पत्र, राशन कार्ड बरामद हुए हैं। कई घुसपैठी तो 10–15 सालों से रह रहे थे। जांच का विषय है कि आखिर, कैसे इन घुसपैठियों का पहचान पत्र, राशन कार्ड बन गया। रोहिंग्या घुसपैठियों से निपटने के लिए देश की राजधानी दिल्ली में बाकायदा एक सेल का गठन किया गया। लेकिन इन दिनों यह सेल बहुत सक्रिय नहीं है। इसके पीछे बड़ा कारण यह भी है कि ये घुसपैठिए येन केन प्रकारेण फर्जी दस्तावेज बनवा लेते हैं, जिस कारण उनकी पहचान मुश्किल हो जाती है। इन घुसपैठियों के ि खलाफ गंभीरता से कार्रवाई करने का समय आ गया है क्योंकि कुल वैश्विक क्षेत्रफल के मात्र 2.4 प्रतिशत एवं जल संसाधनों के मात्र 4 प्रतिशत भाग के बूते अपनी लगभग 140 करोड़ आबादी का वहन कर रहा देश घुसपैठियों का



साहित्य का सितारा मुंशी हमारा

मुंशी प्रेम चंद था साहित्य जगत
का एक चमकता सितारा
जिस पर गर्व करता है संसार
न केवल भारत हमारा
ऐसा फूल गुलशन में कम ही खिलता है
मुंशी की तरह का साहित्यकार
बहुत मुश्किल से मिलता है
गोदान कर्मभूमि और
सेवासदन की क्या है बात
कहानियों में नहीं भूलती
वो कफ़न और पूस की रात
जैसा उन्होंने जीवन में
झेला वैसा ही लिखा उनके उपन्यास और
कहानियों में वैसा ही दिखा
उन्हें कलम का सिपाही
भी कहा जाता था क्योंकि उन्हें सरल भाषा
में ही लिखना आता था
उनके उपन्यासों ने भारत में हिंदी को
बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी
जिसे लोग समझते और जानते थे
वही भाषा उन्होंने अपनाई थी।
गोदान एक मार्मिक कहानी थी
जिसमें कृषक का दिल बोला था
सूदखोर बनिये,जागीरदार और सरकारी
कर्मचारी सभी का भेद खोला था
उनके दिल में मित्रों के लिए प्रेम भाव
और गरीबों के लिए गहरी सहानुभूति थी
उच्चकोटि के इन्सान,सब काम खुद
करते थे बहुत बड़ी विभूति थी
मैं मज़दूर हूँ जिस दिन कुछ न लिखूं
रोटी खाने का हक नहीं यह कहते थे
उपन्यास सम्राट ऐसे ही नहीं
बन गए सबके दिलों में बसते थे
धन्य हो मुंशी प्रेम चंद जिसने
भारत में जन्म लिया
अपने साहित्य से जिसने
औरों को प्रकाश दिया

रविंदर कुमार शर्मा

प्रिय पाठकों,

इस अंक में प्रकाशित सभी अग्रलेख, कथा–लघु कथा, कविता, व्यंग्य, विचार विमर्श लेखकों एवं विचारकों की अपनी कल्पना प्रसूति हैं। त्रुटियां मानवीय स्वभाव का अंग हैं जिनकी ओर ध्यान आकृष्ट करना एक जागरूक पाठक की विशेषता होती है।

अतः आप सभी सुधी विज्ञजनों, से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि आप अपने पत्रों के माध्यम से इस अंक में प्रकाशित त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट भी समय–समय पर कराते रहें ताकि उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।

विवाद की स्थिति में न्यायालय, गोरखपुर का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकजधर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस, निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45 बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित। सम्पादक–पंकज धर द्विवेदी सम्पर्क सूत्र– e-mail- ghoonghatkibagawat37@gmail.com